सुनीता राकेश शिशिर कुमुद रजनी रूपेश संगीता अग्रवाल मिसिज मलहोत्रा

बुर   कमर ऊपर नीचे जीभ से सहलाना मसलना मदहोश मस्त चूचियॉ कमर को पैर से जकड़ना शट लगाना सुपाड़ा हथियार हॉट फच्च की आवाज नितम्ब गुलाबी सूजे ओंठ चूत की पंखुड़ियॉ   क्लिटोरी लौड़ा हमारी झॉटें पोते चूतड़ों से टकराये चूत की गहराइयों तक मेरी कमर को कस कर अपने पैरों के बीच फॅसा कर भींच लिया था चूत सिसकने लगी   घुटने के बल बैठने चूतड़ों को दबा देती   धकाधक लंड पेलना जोवन आह उइे चूत फड़क रही थी चूत की ज्वालामुखी ने लावा छोड़ दिया संगमरमरी वदन भगनासा

1

सुनीता

मैं सुनीता हूॅ। कदकाठी से अच्छी हूॅ। सही जगह पर सही मॉस है। वहुतों से सुना है कि मेरे वदन में बहुत आकर्षण है।   चाल ढाल में ग्रेस है। कई लोगों की निगाहें अपनी ओर उढती हुई देखती हूॅ।उम्र है जब सेक्स   की तरफ खुलापन आ जाता है और झुकान बढ जाता है।अच्छे घर से हूॅ और अच्छे घर में ब्याही गई हूॅ।पति राकेश का अच्छा कारबार है।एक जानी मानी कालोनी में दूसरे माले के अपने फ्लेट में रहती हूॅ। पहनने ओढने का शौक है। मेरा विश्वास है कि हर स्त्री को सज सॅभर के रहना चाहिये। मैं सैक्स   से सन्तुष्ढ हूॅ।पति हफ्ते में कम से कम दो बार चुदाई करते हैं।कभी मेरी तबियत होती है तो पहल करके चुदवाती हूॅ।

सामने ही गली के उस पार मिस्टर और मिसिज मलहोत्रा का दुमंजला घर है।सयाने बच्चे होने के बावजूद भी मिसिज मलहोत्रा कितनी सजी धजी रहतीं हैं। साथ बाले फ्लेट की मिसिज अग्रवाल की उम्र भी कम नहीं है । एक बड़ा लड़का है लेकिन अब भी छरहरी और चुस्त हैं।। मेरे नीचे फ्लेट में मेरी जिठानी रहतीं हैं। उ्रम ज्यादा नहीं है पर कैसी ढीली ढाली हैं न बनाव की ओर ध्यान न कपड़ों की परवाह।

करीब एक महिने से ऊपर की खाली मंजिल में मलहोत्रा लोगों ने एक किरायेदार रख लिया है।बेटी की शादी हो गयी है और बेटा पढाई के लिये बाहर चला गया है।किरायेदार दो ही जने हैं।सामने के फ्लेट में होने से उनकी जोर से कही बातें साफ सुनायी देती हैं।पति का नाम शिशिर है।लम्बा और सुदर्शन है।सुना है एम बी ए है किसी प्राईवेट कम्पनी में बडा आफिसर।पत्नि का नाम कुमुद है।वह भी लम्बी और सुन्दर है।बैंक में काम करती है।

इधर कुछ दिनों से मैं देख रही हूॅ कि शिशिर मुझे घूरता रहता है।रात में जब भी मेरी चुदाई होती है राकेश अन्दर ही झड जाताा है।मैं अपनी चड्ढी से ही उसका वीर्य पोंछ लेती हूॅ।सुबह जब उठती हूॅ तो बिना चड्ढी के ही पेटीकोट पहिना होता है।कभी कभी तो   ब्रेसियर भी नहीं डाली होती है।जल्दी जल्दी ब्लाऊज डाला होता है जिस में से मेरी चूचियॅा दिखाई पड़तीं हैं।सुबह राकेश को जाने की जल्दी होती है। उसी हालत में उसका नास्ता बनाती हूॅ फिर तैयार होती हूॅ।शिशिर जब उसके बैडरूम से लगी झत पर आकर खड़ा होता है तो सामने ही मेरा किचिन पड़ता है। उसका इस

तरह मुझे अधनंगी हालत में देखना बहुत खराब लगता है।कई बार सोचा कि मिसिज मलहोत्रा से शिकायत करूँ।थोड़ी शर्म खाके रह जाती हूँ।उस दिन रात में पहल करके चुदायी करायी थी लेकिन राकेश बहुत ही जल्दी झड़ गया।सुबह उठी तो तबियत शान्त नही हुई थी़ बदन में शुरूर था। सामने देखा तो शिशिर एक टक घूर रहा था। उस समय उसका इस तरह देखना बुरा नही लगा।सोचा मेरी बला से देखने दो। मैं भी ठीक उसके सामने बगैर चड्ढी और ब्रेसियर के पेटीकोट ब्लाउज में बैसी ही खड़ी रही।देखती क्या हूँ कि उसने गाउन के बटन खोल कर दोनों हाथों से सामने से गाउन खोल दिया।उसने कुछ भी नही पहना था।सामने उसका लंड तन्ना के खड़ा था।बदन उसका बहुत सुडौल था।पेट बिल्कुल भी नही निकला था।लंड राकेश से काफी बड़ा और मोटा था।गर्म तो मैं थी ही आदतन मेरा हाथ मेरी चूत पर चला गया।पेटीकोट के ऊपर से सहलाने लगी।अचानक होश बापिस आ गया।बड़ी ग्लानि हुई।खीजकर अन्दर भाग गयी। मेरी सॉस बड़े जोरों से चल रही थी।तबियत फिर भी न मानी।उसके लंड को फिर देखने के संमोहन को न रोक सकी।बैडरूम की खिड़की से छुपके देखा।मेरे अचानक भागजाने से उसका मुँह खुला का खुला रह गया था।नीचे से कुछ आवाज आयी और वह गाउन बंद कर नीचे चला गया।

2

सुनीता

उस घटना के बाद मैं शिशिर के सामने नहीं गयी।मन में चोर होने से किसी से कहने की हिम्मत नहीं हुई।मेरी झिझक भी खत्म हो गयी।पेटीकोट में घूमती रहती।कभी कभी तो जानबूझ कर और उ घाड़ लेती।कभी ऐसा पोज बनाती कि चूचियॉ चूतड़ या यहॉ तक कि चूत उभर के सामने आ जाये।छुपछुप करके देखती कि वह नंगा तो नहीं हो गया है।इस तरह के खेल में मुझे मजा आने लगा था। इन दिनों मैं राकेश से चुदवाती भी बहुत थी।

एक सुबह शिशिर ने छत पर खड़े खड़े ऊँची आवाज में कहाः आज रात दस बजे तमाशा होगा खिड़की खोल के रखना।बात जानबूझ के कही गयी थी।मैने निश्चय कर लिया नही खोलूँगी राकेश के सामने कुछ ऐसी बैसी बात हो गयी तो।राकेश साढे दस के करीब खर्राटे लेने लगा।मुझ से नहीं रहा गया।मैने शिशिर के बैडरूम के सामने की खिड़की खोल दी। ढीक सामने उसकी खिड़की खुली थी।खिड़की के सामने पलंग पड़ा हुआ था जिसका सिरहाना खिड़की की ओर था।पलंग पर नंगी कुमुद लेटी थी।व्ह खिड़की की तरफ नहीं देख सकती थी। उसकी चूचियॉ साफ नजर आ रहीं थी छोटी सख्त बादामी फूले हुये निपिल। उसने अपनी टॉगें चौड़ा रक्खीं थीं।टॉगों के बीच में पूरा नंगा लंड ताने शिशिर बैठा था निगाहें खिड़की पर जमीं हुई।मैं खिड़की खोल कर पलंग पर लेट गयी।उसकी खिड़की मेरी ऑखों के सामने थी। उसने सीधा मेरी ऑखों में देखा और हाथ से लंड पकड़ कर कुमुद की चूत में पेल दिया।कुमुद ने अपनी चूत उठा कर पूरा ले लिया।शिशिर सीधा मेरी ऑखों में देख रहा था और कस कस करके कुमुद की चूत में पेल रहा था।चोद कुमुद को रहा था लेकिन मुझे लग ऐसा रहा था जैसे चोटें मेरे में पड़ रहीं हों।कुमुद भी हर चोट पर अपनी चूत

आगे कर देती थी।पता नहीं मेरा हाथ कब मेरी चूत पर पहुँच गया।बगल मैं पति लेटा था और मैं साड़ी उठाये चड्ढी एक तरफ किये अपनी चूत में ऊँगलियॉ अन्दर बाहर कर रही थी।जैसे शिशिर की रफ्तार बढने लगी मैं इस बुरी तरह से अपने को ही चोदने में लीन हो गयी कि शिशिर के झड़ने के पहले ही मैं खलास हो गयी। उस रात जब में सोयी तो ऐसा लगा शिशिर द्वारा चोदी गयी हूँ।

3

सुनीता

कल रात की बात पर बड़ा ताज्जुब हुआ।ऐसा तो कभी नहीं हुआ था कि अपना हाथ चूत पर रखा हो।जरूरत ही नहीं पड़ी थी।लेकिन शिशिर पर नाराजी नहीं थी।उसके बाद तो तबियत होती वह सब फिर देखने को मिले।रात में खिड़की खोल खोल के देखती लेकिन उसकी खिड़की बन्द होती।शायद उसने यह सब करते देख लिया।एक सुबह फिर ऊँची आवाज में जैसे अपने से ही बात कर रहा हो बोला "पहले तमाशा दिखाओ फिर देखने को मिलेगा"।सोचा मियॉ बड़े ऊँचे उड़ रहे है। भूल जाओ मैं यह सब करूँगी।मैं अपने रूटीन में लग गयी।शिशिर अब इतना घूर घूर के नही देखता था।अच्छा लगने कि जगह कुछ सूना सा लगता था।जब अपने अन्दर डलवाती थी तो शिशिर की बात की सोच कर लाल हो जाती थी और बड़ी रोमॉन्चित भी।

उस दिन राकेश का जन्मदिन था।सुबह से ही मन प्रसन्न था।शाम के सज सॅभर के बाहर खाना खाने जाते थे और रात में राकेश तबियत से हमें चोदता था।शिशिर को झत पर देखा तो मन ने जोर मारा और उसको दिखा कर मैने खिड़की खोल दी जैसे रात का संकेत दे दिया।सोचा आज देखो हमारा मजा।

रात को देर से हम लोग लौटे।मेरी खिड़की और सामने शिशिर की खिड़की खुली हुई थी।शिशिर अपनी तरफ का लैम्प जला कर कुछ पढ रहा था।कुमुद शायद सो गयी थी।अन्दर आते ही राकेश ने मुझे बॉहों में ले लिया और मेरे ओंठों पर कस के अपने ओंठ रख दिये।सामने मैने देखा शिशिर उठ कर खिड़की पर खड़ा हो गया और उसने अपनी लाइट आफ कर दी।मुझे जोश आ गया।मैं राकेश को साथ लिये पलंग पर आ गिरी।राकेश ने ब्लाउज के ऊपर ही मेरी दॉये स्तन पर अपना मुँह रख दिया और बॉयें स्तन को मुट्ठी में जकड़ लिया।मैने पैन्ट के ऊपर ही उसके लंड पर हाथ रखा और सहलाने लगी। उसको जैसे करैन्ट लग गया हो।उसने जल्दी से मेरे ब्लाउज के बटन और ब्रेसियर के हुक खोल डाले।मेरी भरपूर गोलाइयॉ बाहर निकल आयीं जिन पर मुझे बड़ा नाज था। इसके पहिले कि वह एक चूची को मुँह में लेता मैने कहा कि इतनी अच्छी साड़ी पहनी है इसको तो उताार दो।राकेश के ऊपर बहसीपन सबार था बोला साड़ी में इतनी खुबसूरत लग रही हो आज साड़ी में ही करूँगा।इसके साथ ही उसने मेरी साड़ी और पेटीकोट को पूरा उलट दिया। इसके पहले कि बह मेरी पैण्टी उतारता मैने उसके पैण्ट के बटन खोल डाले और एक झटके में अण्डरवियर

समेत पैण्ट उतार फेंका। उसका एकदम तना हुआ लंड स्प्रिंग जैसा बाहर निकल आया।कमीज फेंक कर वह मेरे ऊपर आा गया।मुॅह में एक चूची ले ली और निपिल चूसने लगा।मैं पूरी तरह पिघल चुकी थी।यह जानकर कि शिशिर यह सब कुझ देख रहा है मैं बहुत ही उत्तेजित हो गयी थी। मेरी चूत बुरी तरह रिसने लग गयी थी।मैंने कस के उसका सिर अपनी चूची पर और दबा लिया और नीचे हाथ डालकर लंड पकड़ लिया।

कस के मुट्ठी लंड पर फेरते हुये बोली "अब डालो भी न"

ऊपर उठ कर राकेश ने मेरी पैण्टी उतार फेंकी।मैने टॉगें चौड़ी कर लीं।चिकनी सुडौल टॉगों के बीच अब मेरी चूत मुॅह खोले इन्तजार कर रही थी।एकदम चिकनी मैं पूरी तरह साफ करके रखती हूॅ

जब राकेश ने लंड का अगला सिरा चूत के मुॅह पर रखा मेरी ऑखों के सामने शिशिर का चेहरा आ गया कि कैसे मुॅह बाये वह सब कुछ देख रहा होगा।चूत में फुरेरी हो आयी।राकेश ने मेरी दोनों गोलाइयों को दोनों हथेलिया में कस के जकड़ लिया और लंड को अन्दर पेला।मेरी चूत एकदम गीली थी।उसका पूरा का पूरा एकदम घुस गया।पहले तो अन्दर जाने में थोड़ा समय लगता था।मेरे मुॅह से 'शी' निकल गयी।उसकी छाती के दोनों ओर हाथ डाल कर उसको कस के जकड़ लिया।

पूरा बाहर करके राकेश ने लंड फिर पेल दिया।मैं कह उठी 'आह'

अब की बार वह लंड चूत के बाहर दूर तक ले गया और एकदम जोर लगा के घुस गया।चूत के ऊ पर उसकी जड़ धप्प से पड़ी।'आ   आ ह' कह उठी।

दो तीन बार उसने ऐसा ही किया।मेरा मजा बढ रहाा था 'आ ह' ऊॅची हो रही थी।

अचानक वह बोला मैं झड़ रहा हूॅ और व्ह मेरे ऊपर ढेर हो गया।ढेर सारा गाढा पदार्थ चूत में भर दिया।कभी कभी राकेश के साथ ऐसा हो जाता था।

मुझे यह सोच कर झेंप सी हो रही थी कि शिशिर क्या सोचता होगा।

4

सुनीता

अगले दिन शनिवार को मिसिज मलहोत्रा ने एक पार्टी रखी थी। पास पड़ोस के आठ दस लोगों को बुलाया था। शिशिर से मेरा और राकेश का परिचय मिसिज मलहोत्रा ने कराया।कितनी अज़ीब बात थी हम लोगों को एक दूसरे के अंदर का सब कुछ मालूम था और एक दूसरे को जानते तक न थे।शिशिर की ऑखों में शरारत झॉक रही थी।मैं दबंग होने के बावजूद भी झिझक रही थी।मिलते ही राकेश और शिशिर एक दूसरे को पसंद करने लगे थे।ऐसे घुल मिल के बातें कर रहे थे जैसे अरसे से एक दूसरे को जानते हों।

शिशिर और कुमुद का स्वभाव सरल था।आसानी से सबसे घुल मिल गये।थोड़ी ही देर में एक ग्रुप

सा बन गया जिसमें राकेश मैं शिशिर कुमुद मिसिज अग्रवाल और मिसिज मलहोत्रा सामिल थे। मिस्टर अग्रवाल अभी आये नहीं थे। पार्टी में आना जाना उनका ऐसा ही होता था हर समय धंधे की धुन रहती थी। मिस्टर मलहोत्रा मेजमानी में सबसे मिलने में ही ब्यस्त थे। ग्रुप में खुब हॅसी मजाक चल रहा था। जोक्स सुनाये जा रहे थे जिनमें सेक्स पुट था। मिसिज अग्रवाल बढ़ चढ़ के भाग ले रहीं थीं। मिसिज अग्रवाल कुछ कुछ भारी वदन की गदरायी जवानी की प्रौढ औरत थीं। पीलायी लिये गोरा रंग फैले हुये चूतड़ जो चलते समय बड़े मादक तरीके से हिलते थे। और भरी हुई खरबूजे सी छातियॉ। सेक्स की बात करतीं थीं तो नथुने फड़कने लगते थे छातियॉ और फैल जातीं थीं। सब एक दूसरे को सहज तरीके से संबोधित कर रहे थे। राकेश कुमुद को भाभी कह रहा था। केबल मैं और शिशिर एक दूसरे को सीधा संबोधित नहीं कर रहे थे। शिशिर अकेले मौके की तलास में था जो नहीं मिल पा रहा था और न हीं मिल पाया। पार्टी से जाते समय उसने मेरी ऑखों में झॉका उसके चहरे पर निराशा थी। जाते जाते उन लोगों को राकेश ने दूसरे दिन अपने यहॉ निमंत्रित कर लिया।

जिस मौके की उसे तलाश थी दूसरे दिन उसको मिल गया। अकेले पाते ही वह मेरे से चिपट गया। उसने मेरा हाथ पकड़ लिया। घवड़ा के मै पीछे हट गयी। मेरा चेहरा पीला पड़ गया। मेरा चेहरा देख उसने एकदम से मेरा हाथ छोड़ दिया। बोला "सॉरी मैने सोचा तुम मेरा लेना चाहतीं हो"।

उसके बाद उसका बर्ताव एकदम शालीन हो गया और सहजताा से उस शाम से वह मुझे भाभी कह कर बुलाने लगा। दोनों घरों में बहुत निकटता हो गयी। अक्सर मिलना होने लगा। लेकिन मैं अभी तक उसे ठीक से संबोधित नहीं कर पा रही थी।

ग्रुप भी आये दिन मिलने लगा। कभी मलहोत्रा के यहॉ कभी अग्रवाल के यहॉ कभी शिशिर के यहॉ तो कभी मेरे यहॉ। अब खुल कर सेक्स की बातें होने लगी थीं। मिसिज मलहोत्रा जितनी दुपा छुपा के कहतीं थीं मिसिज अग्रवाल उतनी ही साफ साफ जबान में जिनमें हाव भाव और चेष्टायें भी सामिल होती थीं। राकेश और शिशिर अब बेधड़क बोलने लग गये थे जिसमें करने लग गये थे। कुमुद अथ सुनी सी करती थी लेकिन मै बडे ध्यान से सुनती थी। मुझे बड़ा ही आनन्द आता था।

शिशिर सचमुच में मेरा और अपनी बीवी का बड़ा ख्याल रखता था। दोनों परिवार साथ जाते तो मेरे उठने बैठने चाय पानी और जरूरतों के लिये तैयार रहता। भाभी भाभी कहता और उसी तरह मानने लगा था। एक बार ग्रुप में बैठे थे।

किसी बात पर मेरा ध्यान बटाने के लिये पुकार उठा "भाभी. भाभी"।

मेरे मुॅह से अचानक निकल पड़ा "हॉ बोलिये देवर जी"

सबने तालियॉ बजाई "अब सही माने में देवर भाभी हुये"।

उसके बाद मैं उस देवर कह कर ही बुलाने लगी।

पहली बार की हाथ पकड़ने की घटना के बाद उसने फिर कोई चेष्टा नहीं की।

लेकिन अब मुझे अच्छा नहीं लग रहा था।मुझे वह अनजाना शिशिर ही भा रहा था।मैं उसका लंड देखने को तरस रही थी।उसके द्वारा कुमुद की चुदायी देखना चाहती थी।जब भी वह सेक्स की बात करता था मै़ गरम हो जाती थी।आखिर मेरे से न रहा गया।

एकदिन दबी जबान से कह दिया “देव्रर जी तमाशा दिखाओ न”

वह चौंक गया।देर तक मेरी तरफ देखता रहा लेकिन बोला कुछ नही।

उस रात उसकी खिड़की के पट खुले हुये थे।गयी रात कमरे की बत्ती जली तो शिशिर पलंग के किनारे नंगा खड़ा था।मोटा लंबा लंड मुॅह बाये सामने तन्नाया।सामने टॉगें चौड़ी किये हुये कुमुद पलंग के किनारे पड़ी हुयी थी।उसकी चूत का मुॅह खुला हुआ था।शिशिर ने झुक कर लंड उसकी चूत में लगा के जैसे ही पेला़ मैं धक्क से रह गयी।उधर शिशिर पेले जा रहाा था।कुमुद चूत उठा उ ठा करके उसके झेल रही थी और मैं छटपटा रही थी।राकेश को जगा करके मैं अपनी चूत खोल करके उसके ऊपर सबार हो गयी। उससे कस कस कर झटके लगाने को कहा।झड़ जाने के बाद भी मैं पूरी तरह शान्त नही हुयी थी।

उसके बाद मैं शिशिर की तरफ झुकान दिखाने लगी।जानबूझ कर ऑचल गिरा देती और अपना ब्लाउज ठीक करने लगती।सिडक्टिव पोज बना देती।उसके सेक्स के जोक पर मुॅह बना देती। और आये दिन ‘तमाशा’ दिखाने की मॉग करती।

5

महफिल

मिसिज अग्रवाल के यहॉ ग्रुप की महफिल जमी हुई थी।आदत के अनुसार मिस्टर अग्रवाल आ करके काम धंधे पर चले गये थे।

मिसिज मलहोत्रा का जोक चल रहा था

एक दिन अकबर बादशाह ने पूॅछा ःबीरबल मिसिज अग्रवाल जैसी गोरी औरत की अन्दर की चीज क्यों काली है

राकेश बोल उठा “मिसिज मलहोत्रा तुम्हें कैसे पता कि काली है”।

शिशिर ने तुरत जोड़ा “हॉ भई यह तो मिस्टर अग्रवाल या फिर राकेश को पता है”

मिसिज मलहोत्रा भी पीछे रहने बाली नहीं थीं “हाथ कंगन को आरसी क्या ।मिसिज अग्रवाल दिखा दें अपनी”

मेरे को सब्र नही था बोली “अब जोक भी कहो न”

मिसिज मलहोत्रा ने आगे कहा अकबर बादशाह ने एक हफ्ते का समय दिया और कहा कि अगर न बताया तो देश निकाला।

बीरबल बड़े परेशान। उन्हें जबाव ही नहीं सूझता था।उनकी पत्नि ने यह हालत देखी तो पूँछा “आप इतने परेशान क्यों हैं”

ज्यादा जोर देने पर बीरबल ने बादशाह का प्रश्न दोहराया।सुन कर पत्नि हॅसने लगी और बोली बस इतनी सी बात है। आप बादशाह से कहिये मेरी पत्नि इसका जबाव देगी।

दूसरे दिन मिसिज बीरबल अकबर के दरबार में पहुॅची।बादशाह के जबाव मॉगने पर उन्होंने एक जोर का चॉटा अकबर के गल पर लगाया। अकबर का चेहरा गुस्से से लाल हो गया।सब लोग सन्नाटे में आ गये।

मिसिज बीरबल बोलीं “जहॉपनाह एक चोट से ही आपका चेहरा काला पड़ गया हमारी इसको तो कितनी चोटें खानी पड़तीं हैं”।

शिशिर बोला “कितनी स्तेमाल हुई है जानने का अच्छा तरीका पता चल गया”।

मिसिज अग्रवाल भी जोक में कहॉ पीछे रहने वालीं थीं कहने लगीं ‘बात उस समय की है जब मिसिज मलहोत्रा जनरल स्टोर्स को सॅभालतीं थीं।ग्राहक को खुश रखने का उन्हें काफी जोश था।एक बार एक ग्राहक आया।उसे निजी चीजें खरीदना थीं।सबसे पहले उसने अच्छी ब्रेजियर मॉगी।

मिसिज मलहोत्रा ने पूछा “क्या साइज है”

ग्राहक ने कुछ देर सोचा फिर चटखारे लेकर हाथ की एक एक उॅगली चूसने लगा।अगॅूठे को दिखा के बोला इस साइज की।

मिसिज मलहोत्रा “नहीं भई कप साइज क्या है”

ग्राहक की समझ में नही आया।

मिसिज मलहोत्रा ने कहा “देखो इधर”।फिर अपना ऑचल गिरा के अपने उभार सामने करतीं हुई बोली “इतने बड़े हैं या इनसे छोटे”

ग्राहक “इस तरह खड़े नहीं होते”

मिसिज अग्रवाल आगे कुछ कहतीं उसके पहले ही मिसिज मलहोत्रा बोल पड़ीं “हॉ याद पड़ता है मिस्टर अग्रवाल आये थे। उन्होने सबसे बड़ी साइज की ब्रेजियर ली थी।लेकिन दूसरे दिन वापिस ले आये थे कि यह तो बहुत छोटी है”।

लेकिन मिसिज अग्रवाल चुप रहने वाली नहीं थीं “सुनो सुनो फिर ग्राहक ने कण्डोम मॉगा जिसमें अपनी मिसिज मलहोत्रा एक्सपर्ट हैं”।

मिसिज मलहोत्रा ने फिर पूछा "क्या साइज है"

ग्राहक के मुँह पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। मिसिज मलहोत्रा ने सुझाया "स्टोर के पीछे जाओ। वहाँ एक फैन्स है। उसमें तीन छेद हैं। उनमें बारी बारी से अपना डाल कर देखो किसमें फिट होता है"

जैसे ही ग्राहक फैन्स की तरफ गया मिसिज मलहोत्रा अन्दर के रास्ते से फैन्स के पीछे पहुँच गयी और नाप लेने के लिये साड़ी उठा कर उन्होने अपनी रसभरी फैन्स के पीछे बारी बारी से हर छेद से सटा दी।

ग्राहक के लौटने के पहले ही वह बापिस स्टोर पहुँच गयीं औैर उसके लिये कण्डोम निकाल ही रहीं थीं कि ग्राहक बोला "कण्डोम छोड़िये मेरे को **15** फीट फैन्स दे दीजिये"।

इस पर खूब हंगामा मचा। मिसिज अग्रवाल ने चालू रखा 'एक बार एक ग्राहक का मन मिसिज मलहोत्रा की खास चीज पर ही आ गया'। उसकी चाह पूरी करने के लिये वह उसे अन्दर के कमरे में ले गयीं। उसको खुश करने में या खुद खुश होने में उन्हें समय का ध्यान ही न रहा। देखा तो मिस्टर मलहोत्रा के आने का समय हो गया था। जल्दबाजी में भागीं तो पैण्टी पहिनना ही भूल गयीं। एक टैक्सी रोकी और निढाल हो कर पड़ रहीं। होश सँभला तो देखा कि बगैर पैण्टी के अन्दर का सारा नजारा रियरब्यू मिरर में दिख रहा था और टैक्सी ड्राइबर घूरे जा रहा था।

बात बनाने के लिये ड्राइबर बोला "मैडम पेमेण्ट कैसे करेंगीं"।

मिसिज मलहोत्रा को मस्ती अभी भी थी शरारत सेू अन्दर की चीज और दिखाते हुये कहा "इससे कैसा रहेगा"

ड्राइबर ने जबाव दिया "और छोटी साइज का नोट नहीं है"।

मिसिज अग्रवाल ने ट्रम्प कार्ड छोड़ दिया था। वह इसी तरह उलझतीं रहतीं थीं। कभी मेरा और कुमुद का नाम ले आतीं थीं।

अब शिशिर की बारी थी। राजू राजी पति पत्नि थे। राजी की बहिन की शादी थी। काफी पहले से दौनों को वहाँ जाना पड़ा। राजी का भरा पूरा परिवार था। नजदीक के महिमान भी आ गये थे। घर में अच्छी खासी रौनक हो गयी थी। ऐसे में सब औरतों को एक तरफ और मर्दो को दूसरे कमरों में सोना पड़ता था। राजू राजी मजा नही ले पा रहे थे। उन्होने एक तरीका निकाला। राजी ने कहा मैं हीरे की अँगूठी पहिन कर सोया करूँगी। अँगूठी रात के अँधेरे में चमकेगी। जब तुम्हारी तबियत हो तब गई रात आ जाया करो और बगैर आवाज किये मेरी खोल कर अपनी प्यास बुझा लिया करो। लेकिन ध्यान रहे चुपचाप करना क्योंकि अगल बगल में और औरतें सोयीं होंगी। राजू का काम बन गया। आये दिन जाता और तबियत से मजे उड़ाता। राजी उसकी बेजा हरकत पर आवाज भी नहीं उठा सकती थी। उन्होंने अपने इस प्लान का कोड रखा था 'परॉठे खाना'। राजी या राजू एक दूसरे से शरारत करने के लिये कहते 'रात को दो परॉठे खाये'।

एक सुबह राजू खुश था। राजी को देखा तो बोला "पहले तो तुमने बड़ी आना कानी की फिर बड़े मजे लेकर दो परॉठे खाये"

राजी बोली ‘नहीं तो मेरी तो कल से अॅगूठी ही नही मिल रही है”

सामने से इठलाती हुई मोहिनी भाभी आ कर बोलीं “बीवी जी अपनी यह अगॅूठी लो कल बाथरूम में रखी छोड़ आयीं थीं”

ंफिर बोलीं “मेरी अॅगीठी गरम थी सोचा दो परॉठे मैं भी सेक लॅू”

मक्कारी से राजू की तरफ देखती हुई “क्यों लाला जी परॉठे ठीक सिके थे”

शिशिर का जोक सुन कर सब की नजरें बचाकर मदभरी ऑखों से मुॅह बिचका के मैने अपनी आशक्ति जता दी।शिशिर से सेक्स की बातें सुनती थी तो ‘तमाशे’ याद आ जाते थे और मेरी चूत में खुजली होने लगती थी।और उसकी मेरी तरफ वह आत्मियता। उसे मैं अपना समझने लगी थी। मैं पके आम की तरह उसकी झोली में गिरने को तैयार थी लेकिन शिशिर था कि दूरी ही बनाये हुये था।आज तो मौका देख कर हॅसी के बहाने दो बार मैं उसके ऊपर ढल चुकी थी।

इस बार मेरी हरकत का उसके ऊपर असर हुआ।

उसी दिन अकेला पाकर जोक की भाषा इस्तेमाल करता हुआ शिशिर बोला “ भाभी अपनी अॅगीठी पर मुझे परॉठे खिलाओ न”

मन चाही बात सुनकर मैं शोख अदा से बोली “मैंने कब मना किया है जब चाहे खालो”

शिशिर “लेकिन मैं जूठा नही खाता”

मैं “जूठी तो हो ही गयी हॅू देवर जी”

शिशिर “ मेरा मतलब वह नही है भाभी। **24** घंटे तक कम से कम जुठरायी नहीं होनी चाहिये”

मैं “आज कल यह मुश्किल है।होली का समय है राकेश छोड़ते ही नहीं।अच्छा देखती हॅू”

6

होली के रंग

फाग का दिन।सेक्स भरा माहौल।पूरी मस्ती बाला दिन।सुबह से दोपहर तक रंग गुलाल से होली चहेतियों के साथ।मौका मिलते ही चहेती पर जितना हाथ साफ कर सके किया। फिर नहा धो कर घर घर जा कर गुझियॉ पपड़ियॉ।शाम को एक जगह जमावड़ा जहॉ भंग की तरंग में खुल कर ताना कसी छेड़ छाड़ खुले आम सेक्स की बातें। ।रात तक पति पत्नि दोनों ही आनन्द में होते और जम कर मस्त मस्त चुदायी करते।यह है होली का मद भरा त्योहार।

कॉलोनी में औरतें अपना ग्रुप बना लेतीं थीं और आदमी लोग अलग इकट्ठे हो जाते थे।फिर बेझिझक दोनों अलग से होली खेलते रहते थे फागें और अश्लील गाने गाते रहते थे और मनमानी हरकतें करते रहते थे।मालूम पड़ा था कि औरतें ऐसे गाने गातीं थीं और ऐसी ऐसी हरकतें करतीं

थीं कि आदमी भी दाँतों तले उँगली दबालें। औरतों की लीडर एक मिसिज वर्मा थीं बिहार कीं। मिस्टर वर्मा थुलथुल थे और अपनी इंजीनियरी के रौबदौब में रहते थे। मिसिज वर्मा चुस्त थीं बिहार का साँवला रंग और प्रौढ अवस्था में भी छहहरी देह। आगे को उभरे हुये जोबन और पीछे को उभरे हुये कूल्हे। सब मिला के बड़ी सैक्सी फिगर और उतनी ही सैक्सी उनकी बातें। उनको देखे बिना अंदाज भी नहीं हो सकता कि औरत में कितना सैक्स भरा हो सकता है और उसको वह कितने खुले आम प्रदर्शित कर सकती है।

औरतों और आदमियों अलग इकट्ठे होने के पहले मिसिज मलहोत्रा ने अपने पिछबाड़े आपस में होली खेलने का प्रोग्राम बनाया। उनके यहाँ एक पुरानी नाद थी जिसमें उन लोगों ने पानी भर कर रंग मिला दिया। जैसे जैसे लोग आते गये उनको रक्तग से सराबोर कर दिया गया और गुलाल से चेहरा मल दिया गया। लिहाज का पर्दा उठ गया था। आदमी लोग भाभियों को यानि कि दूसरों की बीवियों को पकड़ पकड़ कर रंग मल रहे थे। कुमुद अपने को बचाये हुये दूर खड़ी थी। उसने नयी धानी साड़ी पहिन रखी थी जो शिशिर के कहने पर नहीं बदली थी। काफी खुबसूरत लग रही थी। राकेश का मन उसके ऊपर था। वह गुलाल ले कर उसकी ओर बढा। कुमुद भागी राकेश उसके पीछे भागा। दीवाल के पास राकेश ने उसे पकड़ लिया। गुलाल से बचने के लिये कुमुद मुँह यहाँ बहाँ कर रही थी। राकेश ने कस के उसको चिपका लिया यहाँ तक कि उसकी चूचियों का दबाव वह महसूस कर रहा था। रानों से रानें चिपक गयी थीं। उसने तबियत से कुमुद के गालों पर मुँह से मुँह रगड़ कर अपना गुलाल छुड़ाया। मुट्ठी का गुलाल उसके दोनों उभारों पर मला और नीचे हाथ डाल कर टाँगों के बीच गुलाल का हाथ रगड़ दिया। गुलाल की लाली में उसकी शर्म की लाली छुप गयी। दूर से लोगों ने सब कुछ न देख पाया। न जाने क्यों कुमुद को राकेश पर गुस्सा नहीं आ रहा था बल्कि इस सब से उसके मन में मिठाहस भर गयी थी।

सुनीता ने बहैसियत भाभी के शिशिर को खूब गुलाल मला लेकिन सबसे घाटे में वही रही क्योंकि उसके और शिशिर के मन में जो था सब के देखते कुछ न कर पाये। मिसिज अग्रवाल बापिस जाने लगीं क्योंकि गाँव से उनकी भौजी आयीं हुयीं थीं जिनको वह घर छोड़ आयीं थीं। सब ने कहा कि भौजी को यहीं ले आओ। मिसिज मलहोत्रा मिसिज अग्रवाल को पकड़ कर ले गयीं और वह लपक कर भौजी को खींच लाये। भौजी अच्छी जवान थीं। गदराया शरीर था चहरे पर लुनाई थी। माँन्सल थीं लेकिन मुटापा नहीं था मेहनती देह थी हाथ पैरों में बल था। सीने पर भी अच्छा माँस था। भौजी ने अग्रवाल जी को देखा तो घूँघट खींच लिया और पीठ कर के खड़ी हो गयीं। मलहोत्रा ने अग्रवाल को उकसाया “पलट दो घूँघट अपनी सलहज के संग होली नहीं खेलोगे”। भौजी सिर हिलाती रहीं पर अग्रवाल ने उनका घूँघट उघाड़ दिया और यह कहते हुये भौजी हमसे होली नहीं खेलोगी उनके दोनों गालों पर ठेर सा गुलाल मल दिया। मलहोत्रा ने उन्हें रंग से भिगो दिया।

भौजी बोलीं “बस हो गयी होली”।

वह उस क्षेत्र की थीं जहाँ औरतें कोड़ामार होली खेलतीं हैं पानी में भिगो भिगो कर आदमियों पर रस्से मारतीं हैं। भौजी ने अग्रवाल को उठा लिया और सीधा ले जाकर नाँद में गिरातीं हुई बोलीं

“लाला जी होली का मजा तो लो”।

सब लोगों में खुशी भर गयी।

कुमुद दौड़ी दौडी आयी और भौजी के कान में राकेश की तरफ इशारा करती हुई बोली “भौजी उनको घसीटो ”।

भौजी और कुमुद दोनों ने दौड़ के राकेश को पकड़ पकड़ कर नॉद में गिरा दिया।उसके बाद तो सब की बारी आ गयी।आदमी लोग भी पीछे रहने बाले नहीं थे।सुनीता कुमुद मिसिज अग्रवाल मिसिज मलहोत्रा सब पानी में तर बतर हो गयीं।कपड़े उनके बदन से चिपक गये थे।उभारों पर साड़ी चिपकी थी चूतड़ों की दरार में साड़ी फॅस गयी थी रानों से पेटीकोट साड़ी चिपक गये थे जिससे टॉगों की आकृति और गहरायी दिख रही थी।सब कपड़ों में भी नंगी थीं।सब ललचाई नजरों से देख रहे थे।फिर गुलाल मलने का दौर चला।सबने सब औरतों के अम्ग छुये। उनको चिपका कर उनके बदन की आग ली।जिनकी आपस में रजामंदी थी उन्होंने लंड चूत पर भी हाथ फेरे।कुमुद ने राकेश का लंड सहला दिया।सुनीता ने अपनी रानें एक दम सटा कर शिशिर के लंड पर अपनी चूत दबा दी।मिसिज अग्रवाल और मिसिज मलहोत्रा ने तो सब के लंड का लुफ्त लिया।पूरे चेहरे रंग गुलाल में सन गये।वह भुतनियों जैसी लग रहीं थीं।

अग्रवाल और मलहोत्रा ने भौजी को पकड़ कर नॉद में धकेला तो भौजी अग्रवाल को भी अपने संग खींच ले गयीं।उनकी साड़ी उघड़ गयी थी और उन्होंने अपनी दोनें टॉगें अग्रवाल की कमर के ऊपर बॉध कर उनको पानी में जकड़ रखा था।उन्होंने न तो चडढी पहिन रखी थी न ही ॲगिया।अगर अग्रवाल भी न पहने होते तो उनका का लंड भौजी की चूत में घुस गया होता।अग्रवाल जब पानी से निकले उनका लंड तना हुआ था जिससे पैण्ट में टैण्ट बन गया था।मिसिज अग्रवाल ने उसको देखा सबने देखा।वास्तव मैं सभी आदमियों की यही हालत हो रही थी।गीले पैण्टों से उनके लंड सर उठा रहे थे जिनको वह बड़ी मुश्किल से पैण्ट में हाथ डाल के दबा पा रहे थे।

भौजी जब पानी से निकलीं तो उनकी चूचियॉ तन गयीं थीं गीले ब्लाउज से दो नुकीली चोंचें निकल रही थीं। साड़ी ऊपर तक चिपक गयी थी।दो पुष्ट जाघें दिख रही थीं।वह बड़ी मादक दिख रहीं थीं।दोंनों हाथों में गुलाल भर के वह अग्रवाल से चिपक गयीं उनको तबियत से गुलाल मला।

मुस्करा कर ऑख नचा कर बोलीं “लाला फिर खेलियो होली”।

अकेला मिलने पर वह अग्रवाल से बोलीं “लाला तुम को सरम नईं आवत अपना खूॅटा हमाई ऊके मूॅ पैई लगा दओ।तुमारे सारे सें हम का कैहैं तुमने तौ हमें खराब कर दओ”।

अग्रवाल “कओ तो हम माफी लैहैं पर का करैं भौजी तुम हौई ऐसी कै हमाओ बौ काबू मेंई नई रओ”।

भौजी इतरा के “सबर रखौ ननदी से अच्छी हम थोड़े ही हैं”।

अग्रवाल “तुमारे से उनका का मुकाबला।भौजी जब मूॅ पर रख लऔ तौ भीतर लै लो न”।

भौजी ऑखें दिखाते हुये “लाला तुम बहुत बदमास हौ मैं ननदी से कऊॅगी”।

अग्रवाल “भौजी आप जौ चाहौ करौ हम तौ दिल की बात कै दई“।

भौजी मस्ती से ऑख नचाकर बोलीं “रात में जबई मौका मिलै आ जइयो तुमाई इछा पूरी कर देहैं”।

7

औरतों की होली

इस बीच औरतों का ग्रुप जमा हो गया था। लेडीज उधर चली गयीं। कुछ औरतें बातचीत सें हावभाव से हरकतों से बेकाबू हो रहीं थीं। फूहड़ से फूहड़ बातें कर रहीं थीं। वदन खोल खोल कर के दिखा रहीं थीं। इन सबमें आगे मिसिज वर्मा थी। वह एक बहुत बड़ा डिलडो लिये थीं। हरकतों से ऊपर से अपने में लगा कर दिखाती थीं। किसी औरत से चिपक जाती थीं उसको चूमने लगती थीं ऊपर से डिलडो लगाने लगती थीं।

ढोलक पर थाप पड़ने लगी। कोई स्वॉग भर रहा था। कोई नाच रहा था। कोई गा रहा था। मिसिज वर्मा की मंडली ने सामूहिक गाना शुरू कियाः

“झड़ते हैं जिसके लिये

चूत को याद कर के

ढूॅढ लाया हॅू वही लंड मैं तेरे लिये

बुर में रख लेना इसे हाथों से ये छूटे न कहीं

पड़ा रहेगा यूॅही झॉटों के बाल तले

झड़ते हैं जिसके लिये रोज ही उठ उठ के।

लंड मोटा है मेरा चूत पै फिसले न कहीं

कसके ले लेना इसे चूत उठा उठा कर के

लगाये जायेगा यही धक्के धकाधक से

झड़ते हैं जिसके लिये मूठ मल मल के”।

मिसिज वर्मा ने शेर सुनाना चालू कियेः

दिल तो दिया है तुझे पर एक शर्त लगायी है

लेनी है वो चीज जो तूने टॉगों में छिपायी है।

और उन्होंने टॉगों के बीच में हाथ कर लिया।

फिर

बेदर्द जमाना क्या जाने क्या चीज जुदायी होती है
मैं चूत पकड़ कर बैठी हूॅ घर घर मैं चुदायी होती है।

चूत को उन्होंने मुट्ठी में जकड़ लिया।

फिर

मुड़ कर जरा इधर भी देख जालिम
कि तमन्ना हम भी रखते हैं
लंड तेरे पास है तो क्या
चूत तो हम भी रखते हैं।

यह कहते हुये उन्होंने साड़ी ऊपर उठा दी नीचे कुछ भी नहीं पहने थीं।

शेर कहे शायरी कहे या कहे कोई खयाल
बीवी उसकी चूत उठाये चोदे उसका यार।

यह कह कर टॉगें फैला कर उन्होंने ऐसी हरकत की जैसे चुदवा रहीं हों।

अचानक भौजी ने जोर से कहा “ऐसी गरम हो रई है तौ खोल कै सड़क पै खड़ी हो जा कोई लगा दैगो”।

मिसिज वर्मा को ऐसी उम्मीद नहीं थी उन्होंने चौंक कर भौजी को देखा

और बोलीं “लगता है तुम सड़क पर ही लगवाती होगी तेरा आदमी नामर्द होगा”।

भौजी ने जवाब दिया “मेरा आदमी तेरे जैसी चार को एक साथ करै तेराई आदमी तेरी भूख न मिटा पायै”।

मिसिज वर्मा भौजी के पास आ गयीं बोली” तू कितनों का एक साथ ले सकती है। ला देखूॅ क्या छिपाया है”

यह कहते हुये उन्होंने धक्का देकर भौजी को चित गिरा दिया और आदमी की तरह उन पर पसर

गयीं।

भौजी ने चट पलटा खा कर मिसिज वर्मा को अपने नीचे कर लिया ।एक हाथ से उनके दोनों कला इयॉ जकड़ ली।मिसिज वर्मा ने छुड़ाने की बड़ी कोशिश की पर भौजी की मजबूत जकड़ से न छूट सकीं।

मिसिज वर्मा की साड़ी पलटते हुये भौजी ने कहा "बछिया जैसी गरमा रही है ले मैं लगाती हूॅ बैल का तेरे मैं"।

अपने दोनों घुटने फॅसाकर भौजी ने मिसिज वर्मा की टॉगें चौड़ा दी।चूत मुॅह खोले सामने थी।अच्छा खासा बड़ा सा छेद था।भोसड़ी हो गयी थी।लगता था खूब स्तेमाल की गयी थी।भोसड़ी गीली हो रही थी।गुलाबी नरम गहराइयों में पानी और गाढी सी सफेदी चमक रही थी।मालूम होता था हाल मैं ही लंड का रस चखा था जो थोड़ा अन्दर रह गया था।पाानी बाहर रिस रहा था। सब लोग घेर लगा कर मजे ले कर देख रहे थे। भौजी ने सुपर साइज का डिलडो उठा लिया।

मिसिज वर्मा गिगया उठीं "इसे मत करो मैं नहीं ले पाऊॅगी रियली मैं नहीं ले सकती इसे प्लीज"।

भौजी बोली "लेगी कैसे नई इतना डलवाने के लिये सोर जो मचावै है"।

उन्हौंने डिलडो को चूत के छेद में घुसेड़ा तो बड़ी मुश्किल से अन्दर गया।उन्होंने घुमा कर के और भीतर करना चाहा तो मिसिज वर्मा तड़पने लगीं।वह सिर यहॉ वहॉ पटक रहीं थीं और बोले जा रहीं थीं "मत करो प्लीज"।

भौजी ने जोर लगाके डिलडो को आधा अन्दर कर ही दिया। मिसिज वर्मा के मुॅह से एक चीख निकली।अब भौजी डिलडो को आगे पीछे कर रहीं थीं साथ ही चूत की घुंडी पर अॅगूठा फेरती जा रहीं थीं।धीरे धीरे मिसिज वर्मा को मजा आने लगा।वह आनन्द में भर कर 'सी सी' करने लगीं थीं।बोले जा रहीं थीं "घुसेड़ दो उसको और अन्दर लगाओ और कस के" ।

लेकिन डिलडो उनके अन्दर उससे ज्यादा और नहीं घुस सकता था।

वह भौजी को अपने ऊपर खीचना चाहतीं थीं आदमी जैसा कस के प्यार पाने के लिये।

भौजी ने कहा "लो अब कौन इनको सॅभालेगा"।

और मिसिज वर्मा की एक सहेली चूत खोल के उनके ऊपर लेट गयी।

सेर को सबा सेर मिल गया था।

8

होली की महफिल

होली की शाम को सब लोग नहा धोकर शिशिर के यहॉ इकट्ठे हुये।मलहोत्रा परिवार न आ सका उ नके यहॉ महिमान आ गये थे।कुमुद ने सेब पापड़ी गुजियॉ भंग की बरफी और भंग मिली ठंडाई का इंतजाम कर रखा था।होली के माहौल का असर था ऊपर से भंग का सुरूर सब बहक रहे थे।राकेश

ने सुझाया सब लोग अपने अपने पहले सेक्स का अनुभव सुनायें।सब एक साथ बोले हॉ सब लोग अपनी अपनी बीती बतायें।सबसे पहले मेजमान शिशिर से कहा गया कि वह अपना एक्सपीरियेंन्स बताये।

शिशिर की कहानी

होली का दिन था।मैं इण्टरमीडियेट में रहा हूॅगा।मेरी भाभी मुहल्ले में होली खेल के आयीं।वह बड़ी खुश थीं कुछ गुनगुना रहीं थीं।मैं यह बता दूॅ कि भाभी मेरे से छह सात साल बढी थीं।मेरे से बड़ा लाड़ करतीं थीं जिसमें सेक्स बिल्कुल नहीं था।जब वह ब्याह के आयीं मै दस साल का रहा हूॅगा।वह बिल्कुल भीग गयीं थीं।साड़ी वदन से चिपक गयी थी।उनके उभार और कमर की गोला इयॉ पूरी तरह उभर आयीं थीं।मेरी भाभी में बहुत ग्रेस था।अच्छी उॅचाई थी आकर्षक मुॅखछबि थी और शादी के छह सात सालों में वदन बड़ी समानता से सुडौल हो गया था।

आते ही वह बाथरूम में चली गयीं।बाथरूम में दो दरबाजे थे एक उनके कमरे की तरफ खुलता था एक मेरे कमरे की ओर जो अक्सर बंद रहता था क्योंकि मैं नीचे का बाथरूम इस्तेमाल करता था।लेकिन इस समय मेरी तरफ का दरबाजा खुला हुआ था।उन्होंने भी ध्यान नहीं दिया क्योंकि होली के लिये मुझे अपने दोस्त के यहॉ जाना था और दूसरे दिन बापिस आना था लेकिन मेरा प्रोग्राम ऐन मौके पर कैन्सिल हो गया था।मैं यही होली खेल कर बापिस आ गया था और उसी बाथरूम में नहा धो लिया था।गलती से अपनी तरफ का दरबाजा खुला छूट गया था।मैं कमरे में आराम से लेटा हुआ था जहॉ से बाथरूम का नजारा साफ नजर आ रहा था।

भाभी ने सबसे पहले अपनी साड़ी उतार के फेंक दी फिर पेटीकोट के अन्दर हाथ डाल के अपनी पैण्टी खीच ली।वह रंग से तर हो रही थी जैसे उस पर ही निशाना लगा कर रंग फेंका गया हो।जैसे जैसे वह ब्लाउज के बटन खोल रहीं थीं मेरी सॉसे गरम होती जा रहीं थीं।ब्लाउज उनके शरीर से फिसल कर नीचे गिर गया।वह मेरे सामने केबल ब्रेजियर और पेटीकोट में खड़ी थीं।ब्रेजियर उनके सीने से चिपक गयी थी बादामी शहतूत से निप्पिल और उनके घेरे साफ नजर आ रहे थे।पेटीकोट आगे से उनकी रानों से बुरी तरह चिपक गया था और चूतड़ों के बीच में क्रैक में फॅस गया था।सामने झॉट के बाल नजर आ रहे थे। उत्तेजित हो कर मेरा लंड एक दम खड़ा हो गया।

उन्होंने पीछे हाथ कर के जैसे ही हुक खोल कर ब्रेजियर अलग की कि स्प्रिंग की तरह दो सफेद बालें सामने आ गयीं।बहुत ही मताबाले भरे हुये जोबन थे।भाभी ने अपना हाथ पेटीकोट के नाड़े की तरफ बढाया तो मेरा लंड और ऊपर हो कर हिलने लगा।उन्होंने एक झटके में नाड़ा खींचा और पेटीकोट नीचे गिर गया।माई गॉड मेरे सामने भाभी पूरी नंगी खड़ी थीं।बड़े बड़े उभार बादामी फूले फूले निप्पिल चिकनी सुडौल जाघें भरे भरे उभार लिय चूतडों की गोलाइयॉ और जाघों के ऊपर तरासे हुये बादामी बाल।मैने अपना लंड पकड़ लिया नहीं तो वह हिल हिल के बुरा हाल कर देता।

भाभी की जाघों पर चूतड़ों पर रंग के धब्बे लगे हुये थे।चूत के बाल भी रंग में चिपक गये थे।उन्होंने साबुन से मल के रंग को छुड़ाया।इसके बाद उन्होंने जो कुछ किया मैं उठ के खड़ा हो गया। भाभी ने साबुन का ढेर सारा झाग बनाया और अपनी टॉगें चौड़ी कर उँगली से साबुन का झाग अपनी चूत को अन्दर बाहर करने लगीं।मेरे सामने उनकी चूत का मुँह खुला हुआ था।छेद के ऊपर फॉकों के बीच की और अन्दर की साबुन मिली लाल गहरायी मेरे सामने थी।लगता था वह रात के लिये तैयारी कर रहीं थीं।मेरे से न रहा गया और मैं दरबाजे के सामने जा खड़ा हुआ लंड एकदम तना हुआ।

भाभी ने मुझे देखा और उनके मुँह से चीख निकली "उई मॉ"

फिर एक हाथ से उन्होंने अपनी चूत ढॅक ली और दूसरे से अपनी चूचियॅा छिपाते हुये बोलीं "ऐसे क्या देखते हो जाओ न"

फिर खुद ही भाग कर अपने कमरें में चलीं गयीं।

मैं बहुत गरम हो चुका था।उत्तेजना में मेरा लंड फड़फड़ा रहा था। ऑखों के सामने भाभी का नंगा वदन नाच रहा था।मैं बाथरूम में घुस गया।पैण्ट उतार कर लंड को कस कस के झटके दिये जब तक कि गाढा गाढा सफेद पदार्थ काफी देर तक उगलता रहा।भाभी की पैण्टी उठा के उससे पौंछा।पता नहीं भाभी ने यह सब देखां या नहीं।

शाम को भाभी मिलीं तो शर्म से लाल हो रहीं थीं।ऑखें नहीं मिला रहीं थीं।

हिम्मत करके मैंने उनसे से कहा "भाभी आप अन्दर से भी उतनी सुन्दर हैं जितनी बाहर से"

भाभी बोलीं "तुम बहुत बेशरम हो गये हो जल्दी तुम्हारी शादी करना पड़ेगी"।

उसके बाद बहुत दिनों तक वह मुझसे शर्माती रहीं।मैं भी उनसे बहुत दिनों तक सहज न हो पाया।

सुनीता सोच रही थी कि शिशिर उसमें अपनी भाभी को देखता है और इसीलिये शुरू से उसको ताकता है और भाभी भाभी कहता है।जैसी अपनी भाभी के सामने न बढा उसी तरह उसके आगे भी नहीं बढता है।सुनीता ने निश्चय कर लिया कि इसका यह बैरियर तोड़ना ही पड़ेगा।

कुमुद की कहानी

मेजमान के रूप में अगली बारी कुमुद की थी।कुमुद ने पहले सेक्स बाली बातें महफिल में नहीं सुनाई थीं।पहले तो झिझकी

लेकिन फिर कहने लगीः

'होली मनाने मेरी दीदी मैके आयीं थीं ।उनकी शादी को एक साल से कम हुआ था।होली बाले दिन जीजाजी भी आ गये।जीजाजी बड़े खुले और मजाकिया किस्म के हैं।मेरी भाभियों ने उनसे

छेड़खाानी की गंदे मजाक किये जिनका उन्होंने तुरत बढकर जबाव दिया उनके संग होली खेली जिसमें मर्यादा को ध्यान में रखते हुये उन्होंने एक दूसरे के अम्ग छुये।मेरे साथ भी जीजाजी ने होली खेली लेकिन उस समय वह मर्यादा भूल गये।रंग लगाने के बहाने उन्होंने मेरे दोंनों उरोजों मसला और हाथ बढा कर चूत के ऊपर भी रगड़ दिया'।यह कह कर कुमुद ने सवेरे की होली को लक्ष कर दबी ऑखों से राकेश की ओर देखा।

कुमुद ने कहना चालू रखा 'मेरी दीदी ने देख करके अनजानी कर दी।भाभियॉ हॅसती रहीं।मेरे ऊपर कुछ सुरूर आ गया।रंग बाजी खतम हुई तो कहा गया सब लोग नहा धोकर तैयार हो जाओ क्येंकि जीजाजी के चाचा जी ने सब को बुलाया है जो उसी शहर में रहते थे।एक भाभी ने ताना कसा कि मेरी ननद यानी दीदी के संग तो होली मनाई ही नही है तो वह मुस्कराके बोले अभी मनाउॅगा।मैं नहाने के लिये गुसलखाने में घुस गयी।कपड़े उतार के नीचे की ओर देखा जहॉ जीजाजी ने हाथ लगाया था तो सिहरन हो आयी।मैंने वहॉ पाानी की तेज धार छोड़ दी।साबुन उठाने के लिये ताक पर हाथ बढाया और ऊपर देखा जहॉ से छत साफ नजर आती थी।वहॉ जीजाजी दीदी को पकड़े हुये थे।छत की सीढियों का दरबाजा उन्होंने बन्द कर रखा था।दीदी रंग से सराबोर हो रहीं थीं।दीदी अपने को छुड़ा के भागीं।जीजाजी ने छत की मुॅरेड़पर दीदी को पकड़ लिया और सामने से चिपका लिया।दीदी मुॅरेड़ पर झुकतीं गयीं और जीजाजी उनकी चूचियों को चूमने लगे।दीदी ने उनके सिर के ऊपर हाथ रख कर और जोर से सिर चूचियों पर दबा लिया और दूसरे हाथ से जीजाजी का लंड टटोलने लगीं।जीजाजी को जैसे करैंट लग गया हो।वह दीदी से अलग हो गये और पेटीकोट समेत उनकी साड़ी उलट दी।गीले अण्डरवियर को नीचे खींच कर उतार लिया फिर उॅगली में घुमाते हुये नीचे सड़क पर फेंक दिया।अपने हाथ से पैण्ट के बटन खोलने लगे इस बीच दीदी अपने ब्लाउज के बटन खोल चुकीं थीं और उन्होंने ब्रेजियर के हुक खोल कर उसको अलग कर दिया।उनके भरे जोबन मुॅह बाये खड़ थे।मुझे नहीं मालूम था कि उनकी गोलाइयॉ इतनी बड़ी थीं।जीजाजी ने अपनी पैण्ट गिरा दी।उनका मोटा लंड एकदम अटैन्शन में खड़ा था।उस बीच मैं साबुन घिस घिस के बहुत सारा जीजाजी का लंड सामने आया अपने आप मेरा हाथ चूत के छेद पर चला गया और मैंने सारा का सारा झाग चूत में घुसेड़ लिया।

दीदी ने अपने आप टॉगें चौड़ा दीं।वह चूत का मुॅह फैलाये मुरेड़ से टिकी झुकी हुयीं थीं पीठ मुरेड़ पर पसरी हुई थी।दीदी का सिर मुॅड़ेर से बाहर निकला हुआ था।सड़क पर जाने वाला कोई भी ऊपर देखे तो उनकी पोजीशन को देख सकता था लेकिन इस समय उनको इसकी फिक नहीं थी।जीजाजी ने खडे खड़े ही लंड को हाथ से पकड़ कर उनकी चूत के मुॅह पर रखा और धीरे धीरे अन्दर डालना चालू किया।दीदी की चूत उसको लीलती गयी।दीदी ने कस करके दोनों बाहें जीजाजी की पीठ पर बॉध लीं।पहले तो जीजाजी धीरे आगे पीछे करते रहे फिर उन्होंने धकाधक धकाधक चालू कर दी।दीदी भी चूत उठा उठा कर के झेल रहीं थीं।

इस बीच पता नहीं कब मै गुसलखान में रखी कपड़े डालने की रैक से टिक गयी थी और उसकी खॅूटी की घुॅण्डी को अपनी चूत मेंघुसेड़ लिया था।जब जीजाजी धकाधक लगा रहे थे मैं भी खॅूटी पर उसी रिदिम से आगे पीछे हो रही थी।मैं मजे में पूरी तरह डूबी थी कि दरबाजा खटखटाने से होश में आयी।बड़ी भाभी कह रहीं थी अब निकलोगी भी बाहर या नहाती ही रहोगी सब को तैयार

होना है।

मैने जल्दी से अपनी सफाई की और बाहर निकल आयी।जीजाजी अभी भी दीदी को लगाये जा रहे थे।

उसी दिन शाम जीजाजी के चाचा जी के यहॉ मेरी शिशिर से मुलाकात हुई।वास्तव में हम लोगों को मिलाने के लिये ही यह आयोजन किया गया था।

कहानी खत्म होने पर बड़े कामुक तरीके से राकेश ने कुमुद को देखा।

राकेश की कहानी

अब बारी राकेश की थी।उसने कहाः

मेरी शादी की तैयारियॉ हो रहीं थीं।कॉलिज के मेरे दोस्त जमा हो गये थे।शादी के कामों में नाइन का काफी रोल होता है।बहुत सारे नेगों में नाइन का अहम पार्ट होता है। भाभी ने उपटन की रस्म की तो मेरे को हल्दी बेसन और चंदन से अच्छी तरह उपटन देने के लिये नाइन बैठी।कलावती उसका नाम था।कलाबती दुबली पतली थी सॉवला रंग था।बड़ी बड़ी ऑखों बाले उसके चेहरे में बेहद आकर्षण था।कामकाजी शरीर एकदम चुस्त और छहररा था कहीं भी बेकार का फैट नहीं।उसके लंबे वदन की कशिश किसी को भी बॉध लेती थी।वह एकदम जबान थी।उपटन लगाते हुये जब दोस्तों ने देखा तो कइयों का दिल उस पर आ गया।शाम को जब हम सब लोग बैठे तो रमेश ने जो मैरिड था कहा कि वह नाइन की लेना चाहता है।उसके बाद तो एक एक करके सब मैरिड और क्वॉरे दोस्तों ने अपनी मंशा जता दी कि वह कलावती को चोदना चाहते हैं।डर था कि नाइन की उनकी बात सुन कर भड़क न उठे और जंजाल खड़ा कर दे।रमेश बोला 'मैं रह नहीं सकता मैं नाइन से बात करूँगा'।मेरे को बड़ा डर लगा कि कहीं बवंडर न उठ खड़ा हो।रमेश न समझाया कि तुम मत घबड़ाओ मैं सीधे पूँछ लूँगा। न चाहेगी तो बात खतम।

नाइन को एक नौकरानी के जरिये यह कह कर बुलाया गया कि दूल्हे राजा बुलाते हैं।मैं और सब दोस्त अन्दर के दूसरे कमरे में बैठ गये केवल रमैश उस कमरे में रहा।कलावती आयी तो मुझे पूछने लगी।रमेश बड़ी नम्रता से बोला "कलावती दूल्हेराजा तुमसे शर्मा रहे हैं।मुझसे कहा है कि तुमसे बात करूँ।देखो कलावती मेरी बात तुम्हें अच्छी न लगे तो नाराज न होना मैं दूल्हेराजा की तरफ से तुमसे माफी मॉग लूँगा लेकिन बात आगे मत बढाना"

कलावती सहम गयी "आप क्या बात करते हैं बाबू जी बोलिये क्या है"

रमेश "कलावती तुम बहुत अच्छी हो तुम्हारा घरवाला बहुत ही भाग्यवान है।बात यह है कि तुमने हम लोगों का दिल जीत लिया है।हम लोग चाहते हैं कि तुम हमें सुख दे दो कि हम हमेशा तुम्हें याद करते रहें"।

कलावती कुछ समझी कुछ नहीं बोली"मैं क्या सेवा कर सकती हूँ"।

रमेश को सीधा कहना पड़ा "हम लोग तुमको भोगना चाहते हैं"

मेरा दिल धकधक कर रहा था।

कलावती के चेहरे पर लाजभरी खुशी दौड़ गयी। मस्ताके बोली "सबसे पहले दूल्हेराजा को करना होगा। अपनी दुल्हन से पहले मेरे साथ सुहागरात मनॉयें। उनसे सोने का गहना लॅगी फिर तुम सब लोगों की तबियत खुश कर दूॅगी"।

शर्त बड़ी टेढी थी। शादी शुरू हो गयी थी नेग हो रहे थे। मैं सुनीता के लिये बेकरार था कलावती से संभोग नहीं कर सकता था। उसको बहुत समझाया ज्यादा पैसे का लालच दिया लेकिन वह टस से मस न हुई। यहॉ मेरे दोस्त मेरे ऊपर दबाव डाल रहे थे वह कलावती को चोदने को उताावले थे। कहने लगे नाम के लिये डाल देना बस। उतने सारे दोस्तों का मन रखने के लिये मुझे उनकी बात मानना पड़ी।

तय हुआ कि बारात उठने के पहले जब मुझे तैयार होने के लिये एक कमरे में अकेला छोड़ दिया जायेगा कलावती चुपचाप कमरे में आ जायेगी। नाइन होने से उसका आना जाना आसान था। शादी के बाद जब मैं सुनीता रातें रंगीन कर कहा हूॅगा मेरे दोस्त भी कलावती के संग आनन्द मनायेंगे।

जब कलावती कमरे मे आयी मैं उसे देखता ही रह गया। लगता है उसने अपना भी उपटन कर डाला था। चेहरे पर गजब की लुनायी थी। बहुत कीमती न सही लेकिन उसने एक अच्छी साड़ी और राजिस्थानी चोली पहन रखी थी जो उसके ऊपर खूब फब रही थी। आते ही उसने मेरे पैर छुये। मैंने यह कहते हुये कि ये क्या करती हो अपने से चिपका लिया। उसकी कमनीय देह बेल सी मेरे से चिपक गयी। उसका वदन मेरे व्दन के उतार चड़ाव में फिट हो गया था। मेरी रानों में उसकी जॉघें समा गयीं थीं। लंड के ऊपर चूत फिट हो गयी थी। सीने पर उसके सख्त स्तनों और चूचियों की चुभन महसूस कर रहा था। वह और भी चिपकती हुई खड़ी रही। जल्दी से निपटने के लिये मैंने चूत छुने को साड़ी में हाथ डालना चाहा तो वह बोली "राजाजी इत्ते बेसब्र न हो। लो इनसे खेलो"। हाथ पीछे कर उसने चोली की डोर खींच दी। नीचे उसने कुछ भी नहीं पहन रखा था। लपक कर मैंने दोनों गोलाइयों को मुट्ठी में दबा लिया। उसकी छातियॉ छोटी पर सख्त थीं।

छातियो को मसलते ही कलावती 'आह आह' कर उठी। मैंने सिर झुका के उसकी वायीं चूची मुॅह में कर के धीरे से दॉतों से दबा ली। खलावती जोर जोर से 'उइईईईई' कर उठी। जल्दी ही वह गरम हो गयी थी। उससे अब रहा न गया लंड को पकड़ के हिलाते हुये बोली इसे निकालो न। मैंने पजामा और अण्डरवियर नाड़ा खोल कर नीचे गिरा दिया।

उसने मेरा तना हुआ लंड देखा तो मुॅह से निकल गया"उई दैया इत्ता बड़ा हथियार है मेरी लिल्ली में कैसे घुसेगा"।

मैंने कहा "तो फिर अपनी लिल्ली दिखाओ न" और उसके पेटीकोट का नाड़ा खींच दिया। साड़ी समेत पेटीकोट नीचे गिर गया।

जैसे ही वह नंगी हुई भाग के बिस्तर पर लेट गयी। मैं भी पूरा नंगा हो कर उसके ऊपर जा गिरा।

कलावती ने मेरे से पूछा "राजाजी तुमने पहले किसी को चोदा है"।

मैं झूठ बोला "नहीं तो"

कलावती का चेहरा चमक उठा “ओ मइया मैं ही इसका पहला रस लूँगी।मैं ही आपकी सही औरत बनूँगी”।

फिर बोली “इसका प्रसाद चखना होगा”।

मेरे को पलटा कर वह दोनों टॉगों के बीच बैठ गयी।दोनों हाथों से लंड को छू कर हाथ माथे पर लगा लिये जैसे यह भी कोई पूजा की चीज हो।दॉई मुठ्ठी में लंड को बंद कर उसके मालिस के अ भ्यस्थ हाथों ने मुठ्ठी पूरे लंड पर इस तरह आगे पीछे की मैं हवा में तैरने लगा।फिर अगले हिस्से की खाल हटा कर सुपाड़ा उसने मुँह में ले लिया और उसे चूसने लगी।मेरा लंड फड़फड़ाने लगा।फिर पूरे लंड चचोरने लगी।

मैं बेकाबू हो गया।चूतड़ उठा उठा कर लंड उसके मुँह में ही पेलने लगा।

मेरे से उसने कहा “जब झड़ो तो रूकना नहीं।ज्यादा से ज्यादा आने देना।

इसके बाद उसने जो रिदिम चालू की कि मेरे चूतड़ हवा में ही उठे रह गये और बढ बढ के धकाधक करने लगे।

कलावती भी मुँह से पसंदगी जता रही थी   “उऊँ ऊँ ऊँ ऊँ”

मेरे से रोका न गया।लंड ने एक झटका दिया और जैसे ही उगलना चालू किया उसेन फिर सुपाड़े को दॉताों में थाम लिया और निकलते हुये रस कोपीती गयी।

जब लंड ठंडा हो गया तो आखिरी बार चाटती हुई बोली” अपने मर्द के अलावा बस मैंने तुम्हारा प्रसाद लिया है।उनका भी बस चखा भर था।आपके दोस्त किसी का भी नहीं चखूँगी”।मैने खींच करके उसको अपने सीने से चिपका लिया।

कलावती ने मेरे सीने की बूँद को मुँह में ले लिया और हाथ नीचे ले जा कर मेरे लंड के ऊपर ढ़क लिया।सीने से चिपके चिपके ही वह धीरे धीरे मेरी निपिल चूसने लगी और बड़े सूदिंग तरीके से लंड सहलाने लगी।मेरा लंड बढता ही गया और थोड़ी ही देर में पत्थर की तरह सख्त हो गया।

‘लो अपनी सुहाागरात मनालो’ कह कर पलट कर चित्त लेट गयी।

फिर बोली “मैं बताती हूँ कल अपने दुल्हन की सील कैसे तोड़ोगे”।

टॉगें चौड़ा के उनके बीच में मुझे घुटनों के बल बैठा लिया।फिर अपने मेरे दोनों कंथों पर रख लिये।उसके चूतड़ हवा में उठ गये थे।मेरे सीथे सामने चूत का मुँह खुल गया था।छेद अन्दर तक दिख रहा था।

अन्दर तक चूत गीली थी और पानी रिस कर रॉनों पर फैल रहा था।

कलावती ने अपनी मुठ्ठी से लंड पकड़ कर चूत के मुँह से सटा दिया और बोली “इसे धीरे थीरे घुसेड़ दो”।

मैने जोर लगाया।उसकी चूत टाइट थी पर   मेरा पूरा लंड आसानी से उसमें चला गया।चूत की ग्रिप में उसको बहुत आनन्द मिल रहा था।

कलावती कहने लगी "राजाजी हमारी इसमें तो आराम से चला गया लेकिन कल ऐसा नहीं कर पाओगे।दुल्हन की फुद्दी में घुसेगा नहीं और रिपट कर ऊपर खिसक जायेगा। और जब घुसने लगेगा तो दुल्हन अपनी फुद्दी पीछे हटातीं जायेंगीं क्योंकि उनको दर्द होगा।इस आसन में तुम दुल्हन पर पूरा काबू रख सकते हो। अगर टॉगें कस के जकड़ लोगे तो वह पीछे नहीं हट पायेंगी।रूक रूक कर के डालना लेकिन वह मना करें चीखें भी तो मत रूकना पूरा अन्दर कर ही देना"।

मैं इस बीच थीरे धीरे अन्दर बाहर कर रहा था।

कलावती कहने लगी "मेरी इसको तो कूटो न कस के कि इसकी सारी गरमी निकल जाये"।

मैने बाहर तक निकाला और झटके से पूरा अन्दर कर दिया।

कलावती के मुॅह से निकला "हाय राजा क्या लौड़ा है अन्दर तक हिला दिया और लगाओ कस के"।

उसके मुॅह से खुला खुला सुन कर मैं और उत्तेजित हो गया।पिस्टन की तरह धकम पेल करने लगा।बड़ी दूर तक बाहर निकालता और खड़ाक से अन्दर कर देता।उसने कस के बॉहों से मेरी पीठ को जकड़ रखा था।

हर चोट पर वह पीठ में नाखून गड़ा देती और जोर से चिल्लाती "ओ रज्जा फाड़ दो इसको छोड़ना नहीं"

उसकी जबान गंदी से गंदी होती जा रही थी "रज्जा इस की भोसड़ी बना दो आज बड़ा सताती है मुझे"

मेरे को उसकी गंदी बातें बुरी नहीं लग रहीं थीं बल्कि मैं आनंदित हो रहा था और अपनी चोटें बढाता जा रहा था।

अचानक उसने कसके चूत चिपका दी "अ अ ओ ओ ओ र ज्ज जा जा मैं ीं तो तो झ झ झ ड़ ड़ ड़ ग यी यी यी यी"

और अपने दॉत मेर सीने गड़ा दिये।मैने भी लंड अन्दर रहते हुये ही उसकी क्लिटोरिस के ऊपर ळंड की जड़ को कस के रगड़ा और सारा का सारा लोड छोड़ दिया।

काफी देर तक हम लोग बैसे ही पड़े रहे।फिर वह उठी।उकडूॅ हो कर के उसने अपना सिर मेरे पैरों पर रखा दिया।मैने उठ कर के एक सोने का हार उसके गले में डाल दिया।

वह बोली " राजाजी मेरे को भूल मत जाना।मैं भी आप औरत की तरह हूॅ।सुहागरात आपने मेरे साथ मनाई है"।

और वह कपड़े पहिन कर चली गयी।कहॉ तो मैं जल्दी निपटना चाहता था कहॉ एक घंटे से ऊ पर उसके साथ हो गया।

कुमुद अपना क्षोभ न छुपा सकी "हाउ इनसैंसिटिव।बेचारी सुनीता"

अब सुनीता की बारी थी।

सुनीता की कहानी

सुनीता ने कहाः

मेरा पहला और आखिरी सेक्स बस राकेश से ही है।लेकिन मैं अपनी कहानी तब कहूँगी जब राकेश यहॉ से चले जायें।

राकेश ने जाने से मना कर दिया।सब लोगो के जोर देने पर आखिर राकेश को वहॉ से जाना ही पड़ा।

सुनीता ने कहना शुरू कियाः

राकेश से मेरी मुलाकात की शुरूआत देखने दिखाने के सिलसिले में औपचारिक रूप से हुई थी।हम लोग एक ही शहर में रहते थे।बाद में मेरी एक सहेली के जरिये जो उनकी कॉलोनी में रहती थी हम लोंगों का सम्पर्क बन गया था।हम लोग मिलते रहते थे लेकिन एक दूसरे को बॉहों में लेने या चुम्बन लेने से आगे नहीं बढे थे मैने ही नहीं बढने दिया था।

यह प्रसंग मेरी और राकेश की शादी का ही है।राकेश के रिस्तेदार और दोस्त इकट्ठे हो गये थे।मेरे यहॉ भी मेरी सहेलियॉ और मेहमान जमा थे। विवाह के पहले के नेग हो रहे थे।बारात आने के एक दिन पहले सहेली के जरिये मुझे राकेश का एक गुप्त नोट मिला आज रात होटल ताज के इस रूम में जरूर से हमसे मिलो।हल्दी बगैरह चड़ ने के बाद मैं घर से कैसे निकल सकती थी लेकिन जरूर मिलो की खबर सुनकर जाना तो था ही।बड़ी मुश्किल से अकेले कमरे में आराम करने का बहाना कर सहेली की सहायता से छुप छिपा कर बाहर निकल पायी।होटल पहुँची तो सिहरन होने लगी।ऐसा लग रहा था कि इस राकेश से मैं पहली बार मिलने जा रही हूँ।मिलन की कामना से शरीर गरम हो गया।कमरे में पहुँची तो शर्म से दुहरी हो रही थी।गहने और शादी के जोड़े के अलावा मैं सब तरह से दुल्हन थी।

कमरे में पहूँचते ही राकेश ने मुझे दबोच लिया और कस कर होंठों पर अपने होंठ रख दिये।मैने भी उसे कस कर जकड़ लिया।बैसे ही ले जाकर उसने मुझे बैड पर गिरा दिया और खुद मेरे ऊपर गिर गया।ब्लाउज के ऊपर ही दायें उरोज पर उसने मुँह रख दिया और वॉयें को मुट्ठी में दबोच लिया।मुझे न करने की इच्छा ही नहीं हुई।वह धीरे धीरे बात करता रहा और मेरे बटन और हुक खोलता रहा।उसने जो बताया मैं शर्म से गड़ गयी।

दो दिन पहले मेरे यहॉ मेंहदी की रस्म हुई थी।एक चौकी पर बैठी मैं मेंहदी लगबा रही थी घुटनों पर हथेलियॉ फैलाये तभी राकेश और उसके दोस्त बहॉ आ गये थे।उस दिन रिवाज के अनसार मैने लहॅगा पहना था।आदत न होने के कारण लहॅगे का ऊपर का हिस्सा मुड़े हुये घुटनों के ऊपर चढ गया था और नीचे का हिस्सा जमीन पर गिर गया था।टॉगों के बीच का नजारा साफ दिख रहा

था।मैने पिंक सिल्क की पैण्टी पहिन रखी थी।शायद मैं आने रंगीनियों को याद कर के बहुत गरमा रही थी क्योंकि पैण्टी पर चूत के ठीक ऊपर एक बड़ा गीला धब्बा फैला हुआ था।उसके सब दोस्तों ने उसको देखा।मेंहदी लगाने बाला भी बार बार वहॉ देख रहा था।राकेश ने ऑखों से इशारा किया लेकिन मैने ध्यान ही नहीं दिया था।राकेश ने उठे लहॅगे को नीचे करने की कोशिश भी की थी लेकिन सबके सामने छू भी नहीं सकता था और सब ने देख तो लिया ही था।

यह सही है कि इन दिनों दिमाग में राकेश की याद कर के मेरी चूत रिस रही थी लगबाने के लिये बेकरार थी।

मैने राकेश से कहा "मुझे माफ कर दो मैं   "

पूरा बोलने के पहिले ही राकेश कहने लगा "डार्लिंग क्या बात करती हो तुमने जानबूझ कर थोड़ी किया।चलो उसी बहाने दोस्तों को मजा मिल गया बैसे तो तुम दिखाती नहीं।

मैने कहा "धुत बेशरम"

राकेश फिर बोला "एक बात है उस दिन मेरा लंड एक दम खड़ा हो गया था और रोज खड़ा हो जाता है।उसी का इलाज करने के लिये तुम्हें बुलाया है"।

मैने कहा "कल शादी की रस्म तो पूरी हो जाने दो"

राकेश ने प्रश्न किया "मानलो मैं तुमको आज करना ही चाहॅू तो"

मैने सहज भाव से कहा "मैं तुम्हारी हॅू यह शरीर तुम्हारा है जो चाहे करो।लेकिन रीति निभाने के लिये एक दिन का सर्ब रखो न"।

तब राकेश ने कलावती और दोस्तों की सब बात मुझे बता दी और कहा "मैं तुमसे पहले किसी को नहीं भोगॅूगा।सुहागरात तो तुम्हारे साथ ही मनेगी।बोलो क्या कहती हो"।

मैने बॉहें और टॉगें फैला दी "लो मनाओ अपनी सुहागरात"।

राकेश आहिस्ता आहिस्ता चूमता हुआ आगे बढने लगा।

मैने उसके कान में रहा "मुझे जल्दी से जल्दी बापिस पहॅुच जाना चाहिये।मैं तो तैयार ही हॅू।मेरी यह गीली ही बनी रहती है।लगा दो न इसमें"।

राकेश ने एक झटके में पेटीकोट और साड़ी खींच दी।फिर अपने कपड़े उतार फेके।मैं उसके मजबूत लंड से खेलना चाहती थी वह भी मेरी चूचियों से और चूत से खिलबाड़ करना चाहता था लेकिन समय नहीं था।

मैने उसका लंड पकड़ करके चूत से सटाया और जैसे ही उसने जोर लगाया मैं चिल्ला उठी।मेरी तबियत हो रही थी लेकिन लंड का घुसना इतना आसान नहीं था जितना मैं समझ रही थी।जब भी वह लगाता मैं चिल्ला उठती और वह हटा लेता।

मैं कहने लगी कि बस रहने दो लंड चूत का मिलना तो हो ही गया है।

इस बार राकेश ने अपने थूक से लंड को गीला किया अपने हाथ से पकड़ कर घुमा कर सुपाड़ा थोड़ा

छेद में फॅसाया और मेरी कमर पकड़ करके पूरे जोर से पेल दिया।मैं चिल्लाती रही लेकिन वह रूका नहीं जब तक पूरा लंड अन्दर तक नहीं गुस गया।

मैं रोने लग गयी थी।उसने मेरे ऑसू पौंछते हुये कहा "डार्लिंग तुम को जो सजा देना हो दे लो"।

लंड के आगे पीछे होने से अब भी चूत के भीतर छुरी जैसी चल रही थी।

मैने कहा "अब और मत सताओ"।

वह बोला अच्छा और घुसे हुये लंड पर ही जोर लगा कर अपनी इच्छा शक्ति से उसने पानी छोड़ दिया।पानी निकलने के पहले उसने अपना लंड बाहर निकाल लिया।

जब मैं उठी तो बैड पर खून देख कर घबड़ा उठी।राकेश ने समझाया कोई बात नहीं होटल बाले को वह चादर के पैसे दे देगा और उसने वह चादर लपेटकर अपने पास रखली जो आज भी हमारे पास है।

जब मैं होटल से निकली तो शादी के पहिले ही लुट चुकी थी।

कुमुद की भावना अब राकेश के बारे में बदल चुकी थी।वह उसे और भी सराहने लगी थी।

सुनीता ने आगे कहाः

जहॉ तक कलावती का सबाल है कलावती ने खुद सुनीता को सब बता दिया और कभी अपना हक नहीं जताया।सुनीता उसकी सहायताा करती रहती थी।तीज त्योहार पर उसको साड़ी गहने आदि भी देती रहती थी।होली दिवाली वह राकेश के साथ मनाती थी।उस समय वह राकेश से चुदबाती थी।एक होली को जब राकेश उसको चोद रहा था तो राकेश का लंड फच्च्च फच्च्च कर रहा था।राकेश ने पूॅछा क्या बात है तो कलावती ने बताया कि यहॉ आने के पहले उसने अपने मर्द से होली मनायी थी जो अन्दर ही झड़ गया था।राकेश ने कहा कि अगली बार से वह होली दिवाली उ सके संग पहले मनाये फिर अपने मर्द के साथ।

आखिरी बारी मिसिज संगीता अग्रवाल की थी।

मिसिज संगीता अग्रवाल की कहानी

यह घटना शादी के काफी बाद की है।शादी के पहलें गॉव में पली बढी।वहॉ ऐसा कुछ खास नहीं घटा सिबाये इसके कि मेरी बगल में एक लड़का रहता था।जब मैं छत पर जाती थी तो वह अपना लंड खोल कर के खड़ा हो जाता था।शादी हो कर मैं शहर में आ गयी।संयुक्त   परिवार था।सास ससुर थे दो जिठानियॉ थीं।मैं सबसे छोटी थी सबसे सुन्दर और सबसे पढी लिखी।परिवार में सब लोग मेरी सुनते थे लाड़ भी करते थे खासतौर पर बड़ी जिठानी।पति भी बात मान लेते थे क्योंकि चुदाई में मैं उनको खुश कर देती थी।मैं बहुत सैक्सी थी।सैक्स की कहानियॉ पढ कर मन बहलाती थी। मैं काफी दबंग हो गयी थी।जो चाहती कर लेती थी।

गर्मियों के दिन थे।बड़ी जिठानी के मैके मैं उनके छोटे भाई की शादी थी।बड़ी जिठानी मैके जाने

के लिये बहुत उत्साहित थीं। उनको लिबाने उन के भाई आ रहे थे। हमारे यहॉ का रिवाज था कि शादी व्याह के मौके पर खास रिस्तेदारों को लिबाने के लिये उनके मैके से कोई आता था। उनका वही भाई आया जिसका व्याह था। ऊँचा अच्छा खासा गबरू जबान। नाम था प्रदीप। मैके जाने के उत साह में सीढियॉ उतरते हुये जिठानी का पैर फिसला और उनके पैर की हडडी टूट गयी। वह तो जा नहीं सकतीं थीं तय हुआ उनकी जगह मैं जाऊॅगी। हम लोगों के यहॉ यह भी रिवाज है बल्कि इसको अच्छा भी माना जाता है। इससे यह भावना बनती है कि परिवार की सब बहुयें बहिनें हैं। उनका अपना घर ही मायका नहीं है बल्कि देवरानियों जिठानियों के घर भी उनके मायके हैं।

ट्रेन का लम्बा सफर था। ग्वालियर से दोपहर में ट्रेन चलती थी और दूसरे दिन दोपहर में जबलपुर पहुॅचती थी। मेरे मन में शरारत सूझी क्यों न सफर का मजा लिया जाये। सबसे पहले मैने सम्बोधन ठीक किया। कहा "मैं तुमसे छोटी होउगी मुझे संगीता कह कर पुकारो और खुद मैं उसे प्रदीप जी कहने लगी। टू टियर में हम दोंनों का रिजर्वेशन था लेकिन दिन में तो हम लोग नीचे की बर्थ पर ही बैठे। जगह ज्यादा थी फिर भी मैं उससे सट कर बैठी। गरमी होने का बहाना कर मैंने अपना पल्लू गिरा दिया। सामने की बर्थ पर बूढे आदमी औरत बैठे थे जो आराम कर रहे थे बैसे भी मैंने उनकी चिन्ता नहीं की। मेरे बड़े बड़े मम्में ब्लाउज को फाड़ते हुये खडे थे। मैंने नीचे तक कटा भ्लाउज पहिन रखा था जिसमें से गोलाइयॉ झॉक रहीं थीं। वह दबी ऑखों से मेरे गले के अन्दर झॉक रहा था। मुझे छका कर मजा आ रहा था। सामान उठाने रखने के लिये झुकने के बहाने मैं अपनी चूचियॉ उससे चिपका देती थी। पहले तो वह सिमट जाता था पर थोड़ी देर में प्रदीप की झिझक जाती रही कि मैं उसकी बहिन की देवरानी हूॅ और उसकी बहिन की जगह जा रहीं हूॅ। उससे मेरी रिस्तेदारी तो थी नहीं।

उसे भी मजा आने लगा और वह अपनी बॉहों से ही मेरी चूचियॉ रगड़ने लगा। सोने का बहाना कर उसने ऑखें बंद कर रखी थीं। उसकी ऑखें खोलने के लिये मैने कहा "ओह कितनी गरमी है" और ब्लाउज के ऊपर का बटन खोल दिया। अब मेरे फूले फूले निप्पिल भी दिखायी देने लगे थे। वह टकटकी लगा कर मेरे हिलते हुये मम्मे देख रहा था। उसके टॉगों के बीच में भी हलचल दिखायी दे रही थी। और ज्यादा टीज करने के लिये मैने कहा "प्रदीप जी मैं तो अन्दर तक भीग गयी हूॅ" और उसके सामने ही साड़ी में हाथ डाल कर चडढी बाहर खींच ली। वह अचकचा गया। गोद में हाथ रख कर उसने अपने उठान को छुपा लिया। मै भी मानने वाली नहीं थी। जब उ सने हाथ हटा लिये तब हाथ में पकड़ी मैगजीन को उसकी गोद में गिरा कर उठाने के बहाने उसके मोटे लंड को अच्छी तरह टटोल लिया। अब स्थिति साफ थी। उसके खड़े पोल से टैण्ट जैसा बन गया।

मैंने इशारा करते हुये कहा "ये क्या है अपने को काबू में भी नहीं रख सकते ऐसी वेशरमी करते हो"।

झेंपने के वजाये उसने चट से जवाव दिया "जब उसकी अपनी चीज सामने हो तो मिलने को वेकरार तो होगा ही"

मैने चोट की "उसकी चीज **16** तारीख तक दूर है"। **16** को उसकी शादी थी।

उसने कहा"उससे भी अच्छी चीज सामने है"।

मैंने कहा "मुँह धो कर रखो"।

लेकिन छूने छुलाने का उपक्रम करते रहे।

रात के करीब आठ बजे गाड़ी बीना पहुँची।प्रदीप सामान उठाते हुये बोला "यहॉ उतरना है"।

मैने सोचा यहॉ ट्रेन बदलनी है।हम लोग नीचे उतर आये।कुली से सामान दूसरे प्लेटफार्म पर ले जाने की बजाये प्रदीप सामान स्टेशन से बाहर निकाल ले गया।एक ऑटो से हम लोग कहीं चल दिये।मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था।जब ऑटो एक होटल के सामने रूका तो मेरी समझ में कुछ आया।

प्रदीप बोला "आज की रात यहीं रूकेंगे"।

उसने अचानक प्रोग्राम बदल दिया था।नहले पर दहला लगा दिया था।कहॉ तो मैं मजा चखा रही थी अब वह मजा चखा रहा था।

मैने पूछा "यहॉ क्यों रूक गये हैं" तो मुस्कराके बोला "तुमको ज्यादा गरमी लग रही है उसको निकालना है"।

मैं तो सोच भी नहीं सकती थी कि प्रदीप ऐसा कर सकता है।

कमरा उसने मिस्टर मिसिज प्रदीप के नाम से बुक कराया।खाना कमरे में ही मॅगाया।अपने लिये शराब भी।मैंने शराब के लिये मना कर दिया।मैने कहा मैं नहा लूँ तो बोला "संगीता डार्लिंग एक राउण्ड नहाने के पहले हो जाये फिर नहाने के बाद में।आज तो रात भर जश्न मनायेंगे"।मुझे पकड़ कर मम्मे दबाते हुये बोला"तुम्हारे इन रस कलसों ने ट्रेन में बड़ा तड़पाया है इनसे तृप्ति तो कर लूँ"।

उसने मेरा ब्लाउज और ॲगिया उतार फेकी।कस कस के कुच मर्दन करने लगा।मैं धीमे धीमे आवाजें करने लगी।चूचियॉ मेरी कमजोरी हैं।उन पर मुँह रखते ही मैं काबू में नहीं रहती ।कोई भी मेरी इस कमजोरी को जानकर मुझे चोद सकता है।प्रदीप ने मेरे निप्पिल मुँह में लिये तो मैं उत्तेजना से 'उॅ ह उॅ ह' करने लगी और उसका लंड थाम लिया।उसने नाड़ा खीच कर मुझे पूरा नंगा कर दिया।और खुद ही अपने सब कपड़े उतार फेंके। उसका लंड देख कर मैं दंग रह गयी।खीरे की तरह मोटा और लम्बा तना हुआ खड़ा था अग्रवाल साहब से दुगना।कमर में हाथ डाल कर वह मुझे बैड पर ले गया।चित्त लिटा कर मेरी टॉगें खोल दीं।मैंने सोचा अब वह डालेगा।मैं लेने को उत्सुक हो गयी।लेकिन मेरी चूत की तरफ वह देखता ही रह गया।

उसके मुँह से निकला "ओ माई गॉड क्या डबलरोटी की तरह फुद्दी है और ये चूतड़ों की गोला इयॉ।मैने तुम्हारी जैसी औरत देखी ही नहीं है

मैने पूछा "प्रदीप जी कितनी देखी हैं इस तरह"

वह हॅसने लगा "होने बाली बीवी की देखी है दो भाभियों की देखी है और ऐसी ही एक दो और देखी है"।

संगीता जान गयी कि वह खेला खाया हुआ है।

मैने इस बीच उसका लंड पकड़ लिया था जो मुट्ठी में भी नहीं आ रहा रहा था। चूत की तरफ उसे खींचा तो वह बोला "इसकी पहली जगह तो यहॉ है" और लंड उसके होठों से सटा दिया। मैने मुॅह एक तरफ फेर लिया बोली "यहॉ नहीं लूॅगी"।

प्रदीप बोला "चलो तुम नहीं लेकिन मैं तो अमृतपान करूॅगा"।

वह बैड के नीचे ही बैठ गया। दोनों टॉगें कंधों पर धर लीं और अपना मुॅह मेरी चूत के छेद पर रख दिया। मुझे उसकी भी आदत नहीं थी। मैने उसका मुॅह हटाना चाहा तो उसने और जोर से चिपका लिया।

मैं छुड़ाने के लिये टॉगें उसकी पीठ पर मारने लगी "ये मत करो"

वह मार सहता गया । उसने मेरी क्लिटोरी को अपने होठों में दबोच लिया और चूसने लगा। मैं एकदम आनन्द में भर गयी। टॉगों का मारना बंद हो गया। मैं बुदबुदाये जा रही थी "ओ मॉ इ स त र ह म त क रो ओ प्र दी प इ स त र ह "

मेरे शब्दों का उल्टा ही मतलब था। मैं आनन्द मे भरी हुई थी और चाहती थी कि वह करता ही रहे।

उसने अपनी जीभ छेद में डाल दी तो मैने चूत हवा में उठा दी। प्रदीप के सिर पर हाथ रख के कसके दबा लिया और अपनी चूत उसके मुॅह से रगड़ने लगी। मेरे सारे शरीर मे करेंट दौड़ रहा था।

बोले जा रही थी "प्रदीप चाटो इसे और कस के चाटो पूरी जीभ अन्दर कर दो करते रहो न"

प्रदीप ने जीभ निकाल के एक उॅगली अन्दर पूरी डाल दी और अन्दर बाहर करने लगा।

मैं एकदम एक्सप्लोड हो गयी चिल्ला उठी "ओ ाे ह ह मॉ ऑ ऑाााााााााााा क्याााााााााााााा कररररररररररररररर दियाााााााााााााााााााााााााा"

बड़ी देर तक झड़ती रही। यह मेरा पहला एक्सपेरियन्स था। मैं खलास हो चुकी थी। प्रदीप का अभी तना हुआ था।

प्रदीप मेरी बगल में आ कर लेट गया। उसेन मेरी चूची पर हाथ रखा तो मैंने हटा दिया। अब मेरी तबियत नहीं थी। मैं एक रात में एक बार ही चुदाई कराती थी। प्रदीप ने धीरे धीरे बताना चालू किया कि किस तरह उसने अपनी बड़ी भाभी की ली थी। जब कहानी क्लाइमैक्स पर पहॅुची तो मैने महसूस किया कि मेरी चूत में सरसरी होने लगी है और मैं प्रदीप के लंड से खेल रही हूॅ। प्रदीप चहता था कि उसके लंड से खेलती रहूॅ लेकिन मैं उसके उस भारी हथियार को अपनी चूत में लगबाना चाहती थी जो बड़ा गरम हो रहा था। आखिर वह मान गया। मैने घुटने मोड़ कर टॉगें इतनी फैला लीं जितनी फैल सकती थीं। हाथ से पकड़ कर सुपाड़ा चूत के अन्दर किया तो बड़ी मुश्किल से घुसा। उसने जोर लगाया तो थोड़ा और अन्दर घुसा। मैं मना कर रही थी कि प्रदीप ने और धकेल दिया। लेकिन लंड पूरा न जाके बीच में फॅस गया। यह चूत कितनी बार पिल चुकी थी लेकिन उस लंड को नहीं ले पा रही थी। उसका लंड खूब गरम हो रहा था। तकलीफ हो रही थी लेकिन मैं झेलने को तैयार थी।

मैने कहा "क्या देखते हो राजा करदो पूरा अन्दर एक बार में"।

और कहने की जरूरत नहीं थी।प्रदीप ने मेरे घुटने थामे और एक झटके में मूठ तक घुसेड़ दिया।मैं चाहती थी कि वह थोड़ा ठहरे लेकिन उसने मौका नहीं दिया।उसने निकाला और फिर अन्दर कर दिया।

चूत की दीवालों को रगड़ता हुआ उसका लंड घुसता था तो मैं आनन्द से भर जाती थी।निकलता था तो फिर लेने के लिये चूत उठा देती थी।वह धकाधक पेल रहा था।मैं उसे उत्साहित कर रही थी।

हर चोट पर सीत्कार निकल जाती थः "ऊॅ ऊॅ ह ऊॅ ऊ्ऊ्ऊ्हहहहह मॉअअअअअआाा इतने जोर से क्यौोओंओंाा माााररररतेएएएए हो"

वह भी कहता "ले ऐऐ ऐ ब हू हू हू त त ग ररर मी लगग ररर ही थी न तुझ्झ्झ को ओ ओ "

फिर चोट पर "ओओ मइइइइयााा मै मैंऐं ऐ तो मरररररर जााााऊॅऊॅगींींींींींींींींीं"

और कस के धपाक "ले एएएए इस को ले ते री रींींींीं सासा रींींींीं चूऊऊऊऊऊत की गररररररमींींीं निकललल जाााााायेयेये"

मेरी चूत ने न जाने कितनी चोटें खायीं।

अचानक एक चोट ऐसी पड़ी कि चूत हवा में उठ गयी मैने कस के उसको जकड़ लिया "औ ाे ाे मैं क्याा करूरूरूरू मैंऐंऐं तोओओ गईईईईई"

प्रदीप "लेऐऐ ऐ मै भी अअआाायााााा"।उसने फाइनल स्ट्रोक दिया और अपना गाढा गाढा रस छोड़ दिया।

इसके बाद मैं नहाने चली गयी।प्रदीप भी साथ ही नहाया।नहाते समय फिर हम लोग गम हो गये।उस रात कई बार मैं चुदी यहॉ तक की पीछे वाले छोद में भी उसने डाला।

सुवह उठे तो मैने प्रदीप को चिढाया "हाय राम तुमने मुझे खराव कर दिया"।

दूसरे दिन बगैर रिजर्वेशन के बड़ी मुश्किल से हम लोगों को ट्रेन में घुसने भर की जगह मिली लेकिन मुझे कोई शिकायत नहीं थी।

जब मौका मिलता मैं उससे कहती"हाय राम तुमने मुझे खराब कर दिया"।

आने के पहले मैं एक बार और उसके सुपर डुपर का आनन्द लेना चाहती थी।उसको भी कोई ऐतराज नहीं था।अपनी नबेली से तो वह सुहागरात मना ही चुका था और प्रदीप के ही शब्दों में उसके मुकाबले में सुपर थी।लेकिन शादी की भीड़ में कोई सुनसान जगह नहीं मिल पा रही थी।एक दिन उसने बताया कि साथ बाले उसके घर में भूसा भरा रहता है।अगर मैं चाहूॅ तो बहॉ हो सकता है।भूसा क्या मैं तो उससे लगबाने के लिये कहीं भी तैयार थी।आने के एक दिन पहले भूसे पर लिटा कर उसने मेरी मस्त चुदायी की।

10

सुनीता और शिशिर

होली के दूसरे दिन शिशिर जब लंच से लौटा तो सुनीता भाभी का फोन पर मैसेज था जितनी जल्दी हो घर आओ। शिशिर सब शुभ हो कि कामना करते हुये सुनीता के घर जल्दी से जा पहुँचा। सुनीता भाभी ने दरवाजा खोला तो वह खुबसूरत साड़ी में सजी धँजी खड़ी थीं।

शिशिर ने पूछा कि क्या बात है भाभी तो बड़ी अदा से बोलीं 'देवरजी तुम कह रहे थे कि भाभी होली नहीं मनाओगी तो मैने सोचा चलो तुम होली मना लो। तुम्हारी शर्त पूरी करने के लिये बड़ी मुश्किल से कल अपने को तुम्हारे भइया से बचा के रक्खा है आज तो वह छोड़ेंगे नहीं इसलिये अभी मना लो'। वह एक प्लेट में से मुट्ठी में गुलाल ले कर आगे बढीं।

शशिर बोला 'भाभी इतनी मँहगी साड़ी खराब करोगी' लेकिन इसके पहले ही उन्होंने शिशिर के चेहरे पर गुलाल मल दिया। शिशिर ने उनको पकड़ लिया और अपना गुलाल लगा गाल उनके गुलाबी गाल पर रगड़ने लगा। फिर उसने उन्हें बाहों में लेकर उनके रसीले ओंठों पर चूमा और अपने ओंठ गढा दिये। फिर उन्हें प्यार से चूसने लगा। सुनीता भाभी उससे चिमट गयीं और चुम्बन का जबाव पूरे जोर से देने लगीं। कुछ देर वह ऐसे ही चिपके रहे फिर भाभी ने उसकी पीठ के ऊपर हाथ ले जा कर शिशिर का सिर पकड़ कर उसे नीचे को खींचा। शिशिर का मुँह उनके कंधों को चूमताा हुआ सीने पर जा पहुचा। वह अपने गालों का गुलाल सुनीता भाभी के उभारों के ऊपर रगड़ कर ब्लाउज पर लगाने लगा। सुनीता को करैंट सा लगा। वह उत्तेजित हो उठी निपिल सख्त हो गये। शिशिर को एकदम पता लग गया। उसेन दायॉ हाथ सुनीता की कमर में डाल के सामने से चिपका लिया और बॉये हाथ से उनके ब्लाउज के बटन खोल दिये। सुनीताा ने पीछे हाथ करके ब्रेसियर की हुक खोल कर के उसको अलग कर दिया। उसके सुडौल गदराये उरोज सामने थे जिनके ऊपर गहरे पिंक फूले हुये निपिल तने खड़े हुये थे। शिशिर उनको देखता ही रह गया। सुनीता भाभी ने टोका 'क्या देख रहे हो'। शिशिर सच बोला 'भाभी इतनी खुबसूरत गोलाइयॉ नहीं देखी'। सुनीताा ने चोट की 'कितनों की देखी हैं।

शिशिर का खड़ा हुआ लंड सुनीता की चूत को चुभ रहा था। उसने हाथ बढा कर उसको पकड़ लिया। प्रतिकिया के रूप में शिशिर ने सुनीता भाभी की दॉयी चूची मुॅह में ले ली। सुनीता के मुँह से सीत्कार निकल गयी। उन्होंने सारा भार शिशिर के ऊपर डाल दिया। उन्हें बाहों में सँभाल न लिया होता तो गिर जातीं। सहारे से बैडरूम में ले जाकर शिशिर ने पलंग पर लिटा दिया। उन्होंने गले में बाहे डाल कर अपने ऊपर खींचा।

शिशिरने कहा 'पहले अपने नीचे का खजाना तो दिखाओ'।

शोख अदा से बोलीं 'पहले खजाने की चाभी देखेंगे'

इसके साथ ही उन्होंने मेरे पैण्ट के बटन और जिपर खोल डाले और अण्डरवियर समेत पैण्ट पेरों के नीचे गिरा दिया। कमीज उतार कर वह एकदम नंगा हो गया। उसका लंड फनफनाकर कर खड़ा था।

'उई ई ई ई मांााााा इतना बडाााा और मोटाााााा है कैसे समायगा' उत्तेजना में सुनीता भाभी की जवान लड़खड़ा रही थी।

शिशिर ने साड़ी की ओर हाथ बढाया और एक झटके में साड़ी खींच दी और सिल्किन पेटीकोट का नाड़ा खोल लिया। उन्होंने कुछ कहे बगैर अपने चूतड़ उठा दिये और आसानी से खिंच कर के पेटीकोट नीचे गिर गया। उन्होने कीमती पैण्टी पहिन रखी थी। एक बड़ा सा धब्बा चूत के पानी से फैल गया था। शिशिर पैण्टी उताारने लगा तो बोली'इसे पहने रहने दो' लेकिन उतारबाने में उज्र नहीं किया। क्या नजारा था। संगमरमरी वदन सामने था। भाभी की पतली कमर मॅासल चूतड़ फूली हुई चूत बड़ी गोल गोल ऊँचाइयॉ और मदहोश मुश्कान आमंत्रित कर रहीं थीं। शिशिर मतबाला सा सुनीता भाभी की ओर बढा और उन्होंने हाथ फैला कर उसको समेट लिया।

उसने उनकी दॉये निपिल को मुॅह में ले लिया और बॉयीं चूची को हाथ से मसलने लगा। भाभी 'सी सी' कर उठीं। उन्होंने मुठ्ठी में लंड थाम लिया और चूत के ऊपर फेरने लगीं। शिशिर ने पोजीशन बदल दी और बॉई निपिल को मुॅह में लिया तो भाभी ने एक लम्बी आवाज कीः

'आााााााााहहहहहह'

कानों में फुसफुसयीं 'देवर जी अब क्यों तड़पा रहे हो'

साथ ही दोनों हाथों से उसका सिर पकड़ कर नीचे को खीचने लगीं। शिशिर नीचे खिसकता गया। भाभी ने लंड की उत्सुकताा में अपनी टॉगें चौढी कर ली। लेकिन शिशिर खिसकता ही गया। वह जाघों तक खिसक आया। भाभी की टॉगें दोनों कंधो पर आ गयीं। उसने भाभी की चूत पर मुॅह रख दिया। सुनीता भाभी अचकचा उठीं 'देवर जी ये क्या करते हो' और उन्होंने अपनी हथेली चूत के ऊपर रख ली। उनके लिये यह नयी बात थी। शिशिर ने एक हाथ से बल के साथ उनका पकड़ा और हटा दिया। दूसरे हाथ से उनकी चूत की फॉकें खोली और अपना मुॅह गड़ा दिया। भाभी ऐतराज में अपनी दोनों टॉगें उसकी पीठ पर मारने लगीं और हाथ से शिशिर का सिर उठाने लगीं। लेकिन शिशिर का मुॅह उनकी चूत से चिपक गया था सो हटा ही नहीं। वह चटकारे लेकर उनकी चूत के रस को पी रहा था। जैसे ही उसने अपनी जीभ भाभी की क्लिटोरी के ऊपर रक्खी उनका पैर मारना एकदम रूक गया। आवाज करने लगीं

'म्म्म्म्म्म्पफफफ ओ माईईईई '

उठाने की जगह उन्होने उसके सिर को कस के चूत में दबा लिया। शिशिर ने भाभी की क्लिटोरी को दोनों ओठों के बीच ले लिया। सुनीता 'ओहहह मैं अब और नही रूक सकती' ' मुझे कसके दबा लो लो लो ओ ओ मै तो गई ' सुनीता भाभी ने चूत उठा कर के जोर से उसके ओठों से चिपका दी और काफी देर तर उनकी चूत में कॅपकॅपी बनी रही।

शिशिर भाभी की बगल में एक करबट लेट गया और हाथ बढा के उनको खींच लिया। भाभी उससे चिपक गयीं और सीने में सिर छुपा लिया। शिशिर ने उनके सिर पर हाथ रख कर और कसके चिपका लिया। थोड़ी देर वह इसी तरह पड़े रहे एक दूसरे में मग्न। भाभी फुसफुसायीं 'देवर जी तुम्हारे

प्यार करने का तरीका भी निराला है'

'हॉ इसमें टॉगें पीठ पर खानी पड़ती हैं'

भाभी ने सिर उसकी छाती पर रगड़ा 'चलो हटो कहीं ऐसा भी कोई करता है'

'आपको मजा आया'

भाभी ने हॉमी में सिर हिला दिया। बोलीं 'देवर जी ये बताओ कुमुद इतनी अच्छी लम्बी सुन्दर है फिर तुम मेरे पीछे क्यों पड़े रहते धे।

शिशिर तुरन्त बोला 'भाभी आपने अपने को पूरे आईने में देखा है आप मै नारोक पाने बाली अपील है। मैं काबू में ही न रह पाता धा। फिर कुमुद सेक्स मै चुलबुली नही है।

वह फिर बोला 'भाभी आपकी कशिश में कितने खिचे रहते होंगे'

सुनीता भाभी बोलीं 'जानती हूॅ लेकिन राकेश को पूर्ण समर्पित हूॅ तुम्हारे अलाबा'

शिशिर ने आनन्द से उन्हें भींच लिया। आहिस्ता से एक निपिल मुॅह में लेना चाही तो उन्होंने मना कर दिया 'अब नई'

वह शान्त हो गयीं थीं।

शिशिर बोला 'बस भाभी सीने पर मूह रख के लेट ने दो'

वह चित्त हो गयीं और बड़े प्यार से उसका गाल अपने बॉये उभार पर दबा लिया।

शिशिर गाल और दबाता गया फिर धीरे धीरे रगड़ने लगा। धोड़ी देर बाद उसने बगैर दबाव के अपनी दॉई हधेली उनके बॉये सीने पर रख दी। भाभी ने मना नहीं किया। उन्हें अच्छा लग रहा धा। वह अब अपनी तरफ से उसके सिर पर दबाव बढातीं जा रहीं धीं। शिशिर ने आहिस्ताा से अपने ओंठ खोल कर दॉयें निपिल को अन्दर कर लिया। भाभी ने झुक कर उसके माधे को चूम लिया। सुनीता भाभी अब गर्माने लगीं धीं। मैने ओंठों मे। निपिल कसके दबोच ली और चूसने लगा।

वह कराहीं 'उईईईईईईई मॉाााााााा तुम तो काटते हो'

लेकिन सिर को कस के चूची पर दबा लिया। अब में दॉयी चूची को मजे से चूस रहा धा और बॉयीं को कसके मसल रहा धा। वह अब चूतड़ हिलाने लगीं धीं। शिशिर ने दॉया हाध चूची से हटा कर उनकी चूत पर रख दिया। उन्होंने दोनो जाघों से कस के दबा लिया। उसका सिर दूसरी चूची की तरफ करतीं हुयीं बोलीं 'इस को चूसो न'

शिशिर ने दूसरी चूची मुॅह में ले ली और दो उॅगलियों से चूत की दराज खोलते हुये तीसरी उॅगली छेद में डाल दी। चूत गीली हो रही थी।

भाभी ने चट से अपनी जाघें खोल दी बोलीं 'पूरी अन्दर डाल दो'

अपने दॉयें हाध से उसका फर्राया हुआ लंड मुट्ठी बन्द कर लिया 'ओ माई गाड ये तो मेरे हाध में भी नही आ रहा है'

शिशिर उॅगली अन्दर बाहर करने लगा।उनकी बुरी तरह रिसने लगी थी।बाहर पानी निकल रहा था।

'हाय अन्दर तक घुसेड़ दो ने जल्दी जल्दी से' वह पूरी तरह उत्तेजित थीं।

वह कसकस के उसके लंड पर मुट्ठी चलाने लगीं थीं।

शिशिर बोला 'भाभी इसकी जगह कोई और भी होती है।

'तो डालो न उस जगह'

शिशिर के कुछ कहने के पहले उन्होंने पलट के अपनी चूत उसके लंड के ऊपर कर ली और हाथ से लंड पकड़ कर सुपाड़ा चूत में घुसेड़ लिया।

अब शिशिर के पास और कोई चारा नही था।उसने सुनीता भाभी को पलटा।उनकी टॉगों के बीच में घुटनों को बल बैठ गया।उन्होंने उतावली में टॉगें पूरी चौड़ा दी और चूत ऊपर उठा दी।चूत की पंखुड़ियॉ अलग अलग थीं गुलाबी छेद खुला हुआ था अन्दर पानी चमक रहा था।शिशिर ने लंड का सुपाडा चूत के मुॅह पर रखा और धीरे धीरे घुसाने लगा।

सुनीता भाभी की सहमी सी आवाज निकली 'देवर जी आहिस्ता से डालियेगा बहुत बड़ा और मोटा है'

लेकिन उनकी चूत लंड के पुरा का पूरा लील गयी।भाभी के मुॅह से निकला 'हा य'

उसेन बाहर किया और घच्च से अन्दर।वह और जोर से 'हा य' कर उठीं।

उसेन फिर बाहर किया फिर और जोर से घच्च।उनकी सीत्कार और ऊॅची हो गयी।

शिशिर का सीधा खड़ा लंड सुनीता भाभी की चूत में सड़ाक से पूरा घुस जाता था।

जैसे जैसे घच्च घच्च की स्पीड बढती गयी भाभी की 'हाययययय उईईईईई माााााााा मरररररररी' की सीत्कार भी।

अकुछ देर तक झटके लगाने के बाद शिशिर पलंग के नीचे खड़ा हो गया।सुनीता भाभी को दोनों टॉगो से खींच कर पलंग के किनारे कर लिया।उनकी टॉगें चौड़ा कर उनके बीच में खड़ा हो गया।अब खड़े खडे उसका लंड भाभी की चूत के सामने था।उसने लंड चूत के मुॅह पर लगाया और कहा 'अपनी दोनों टॉगें मेरी कमर पर बॉध लो।भाभी की दोनों चूचियों को दोनों हाथों से मसलते हुये शिशिर ने एक चोट में सड़ाक से लंड अन्दर कर दिया तो भाभी हिल गयीं मुॅह से चीख निकल गयी।

शिशिर ने चूत के सामने काफी बाहर तक लंड निकाल कर एकदम चोट मारी।भाभी और जोर से चीखीं 'ओ मा ॅम मर जाऊॅगी'

उन्होंने कस के शिशिर के कंधे दोनों हाथों से जकड़ लिये और अपना मुॅह उसकी छाती में गड़ा लिया।

शिशिर ने जब चोट मारी तो वह बुदबुदायीं 'शिशिर ये तुम्हारी है जैसे चाहे लो इसको'

पहली बार उन्होंने उसे शिशिर कह के बुलाया था।

शिशिर धकाधक चोद रहा था। उसका लंड चूत की गहराइयों तक जा रहा था।हर चोट में लंड की जड़ चूत के ऊपर धप्प से पड़ती थी।

भाभी आपे में नहीं थीं 'आााह आााह ऊँऊँहहहहहहह हााााय ऊईईईईईईइ ओ शिशिर ऐ तुम्हारी है फाड़ डालो इसको उफ्फ्फ्फ ओ शिशिर'

हर झटके में उसी वेग से सुनीताा भाभी बढ बढ के लंड को झेल रहीं थीं।जोरों से चूत से फच्च फच्च की आवाज निकल रही थी।

अचानक भाभी ने उसकी कमर में टॉगें एकदम जकड़ लीं 'ओ मैं और नही ले सकती मैं तो गईई ईईईईई मेरे शिशिरररररर'

भाभी ने अपना ज्वालामुखी उगल दिया।उनकी चूत इतनी जोर की कॉपी कि शिशिर भी न ठहर पाया 'भा भी ईईईईईई मै भी आयाााााााा ये लोओओओ'

उसने गहराई तक ले जाके पानी छोड़ दिया और देर तक छोड़ता रहा।जब उसने अपना लंड बाहर निकाला दो भाभी की चूत से गाढा गाढा सफेद फैन सा फैलता रहा।उन्होंने पैण्टी से उसे पैाछा भी नहीं जैसी उनकी आदत थी।निढाल पड़ी रहीं।शिशिर ने उनका हाथ पकड़ा तो शिकायत के लहजे में बोलीं

'देखो तुमने इसकी क्या हालत कर दी है।हथौड़ा सा चलाते हो।मैं अब राकेश को रात में कैसे दूॅगी।इसे देख कर उन्हें शक हो गया तो।

शिशिर ने कोमलता से उनका हाथ थाम लिया। सुनीता भाभी ने उसे दोनौं बाहो में लाड़ से भर लिया और सीने में छुपाा लिया।

11

सुनीता

होली के आनन्द के बाद जब भी शिशिर की मुझे भोगने की तबियत होती कह देता “भाभी परॉठे सेकने हैं **24** घंटे का उपवास रखना”।जब मेरी तबियत मचलती शिशिर से कहती “हथौड़ा लूगीं”।मैं पूरी तरह सन्तुष्ट थी।राकेश भरपूर चोदता था।स्पेशल चुदाई शिशिर से कराती रहती थी।ग्रुप की महफिल के बाद खासतौर पर मुझे हथौड़े की जरूरत पड़ती थी।शिशिर का व्यवहार मेरी तरफ कोमल बना हुआ था केवल चोदते समय वह कोई लिहाज नहीं करताा था।मै बहुत खुश रहती थी।

गर्मियॉ शुरू हो गयीं थीं।गर्मियों में **10** या **15** दिन के लिये या तो हम लोग रजनी के यहॉ जाते थे या रजनी और रूपेश हमारे यहॉ आ जाते थे।इस बार वह लोग हमारे यहॉ आये।रजनी और मैं कॉलिज के जमाने की सहेलियॉ थीं पक्की दोस्त।एक दूसरे के बारे में सब कुछ जानती थीं।हम

दोनों ही खुबसूरत समझी जाताी थीं। रजनी मेरे से ज्यादा लंबी थी और दुबली भी। मेरी बॉडी शुरू से ही सॉचे में ढली हुई थी। रजनी तबियत की मस्त थी। खुल कर सैक्स की बातें करती और आगे बढने के लिये भी तैयार। मैं इस बारे में बिल्कुल पक्के खयालें की। अब रजनी के सीने और कूल्हों पर मॉस चढ गया था लेकिन वदन उसका इकहरा ही था आकर्षक। मेरी शादी रजनी से दो साल पहले हो गयी थी। रजनी की शादी हुई तो उसके पति रूपेश मेरे ऊपर दीबाने हो गये। हमें चोदने के लिये बेचैन रहने लगे। रजनी को भी उन्होंने तैयार कर लिया। शादी के थोड़े दिनों बाद ही रजनी ने मेरे से कहा "रूप तेरी चूत की सैर करना चाहता है बदले में राकेश को मैं अपनी नयी नबेली का रस चखा दूॅगी"।मैने एकटूक जबाव दिया "मैं राकेश को पूरी तरह समर्पित हूॅ ऐसा कुछ भी नहीं करूॅगी"।जानबूछ कर मैंने पता नहीं किया कि राकेश को रजनी ने रसपान कराया या नहीं। रजनी के आने पर राकेश की खुशी देख कर लगता था कि वह स्वाद चख चुके थे। इस बात पर इसके बाद परदा पड़ गया था।

जैसे ही रजनी मुझसे मिली कह उठी "लगता है तुम्हें यह जगह रास आ गयी है बडी खुश दिखती हो"।जल्दी ही रजनी और रूपेश सबसे घुलमिल गये। शिशिर से रूपेश की भी पटने लगी। ग्रुप की महफिलों में भी दोनों ने खुब बढ बढ के भाग लिया। रजनी ने तो ऐसे किस्से सुनाये कि उस रात जरूर लोगों ने बीवियों से जम कर कसर निकाली होगी। ज्यादा दिन तो सैर सपाटों में ही निकल गये। जब तब शिशिर और कुमुद या अकेला शिशिर भी सामिल हे जाते थे। जो बात कोई जान पाया था रजनी इतनी जल्दी भॉप गयी बोली "अब तुम्हारी खुशी का राज समझ में आया। शिशिर से इश्क लड़ाया जा रहा है"।मैं लाल हो गयी बोली "तुम भी रजनी गजब हो शिशिर मेरा देवर है"। रजनी बोली "सब जानती हूॅ"।

उसके बाद मैं कुछ चौकन्नी रहने लगी। लेकिन इस बीच ही शिशिर परॉठे सेकने की फरमाइश कर बैठा।मैने समझाया कि अभी रजनी रूपेश हैं लेकिन न्हीं माना। दिन में ही समय निकाल कर उसने मुझे बहुत ही जबरदस्ती से चोदा।मैं त्राहि त्राहि कर उठी। चूत पर इतनी चोटें पड़ी थी कि मैं ढीक से चल भी नहीं पा रही थी। अपनी दोनों टॉगें फैला फैला के चल रही थी। शाम को रजनी ने देखा तो मेरी चूत पर चिउॅटी काटी। मेरे मुॅह से जोर से शी निकल गयी।

रजनी बोली "इसकी कसके रगड़ाई हुयी है क्या"। लेकिन राकेश तो ऐसा नही करता। क्या बात है शिशिर से लगबा के आयी हो"।

उसने मेरी चोरी पकड़ ली थी।मैं बोली "क्या करूॅ रजनी वह माना ही नहीं"।

रजनी ने उलाहना देते हुये कहा"जब रूप ने मॉगी थी तो साफ मना कर दिया था कि मैं तो बस राकेश को ही देती हूॅ"।

मैं"हॉ मैं केबल राकेश की हूॅ। शिशिर स्पेशल है हमारा ही"।

रजनी"अरे जाओ ऐसे लोग जिस किसी पर भी फिसलते रहते हैं"।

मैं "न रजनी यह केबल मेरा और शिशिर का सम्बन्ध है भाभी और देवर का"।

रजनी “अगर मैने शिशिर को फॉस के दिखा दिया तो”।

मैं “तो जो चाहोगी दूँगी।लेकिन क्या सबूत दोगी”।

रजनी “शिशिर का अण्डरवियर दूँगी मेरी चूत के रस से पौछा हुआ चाहो तो सूँघ के देख लेना”।

रजनी को अब एक मिशन मिल गया शिशिर को सिड्यूश करने का।

12

रजनी

सुनीता को उकसाना तो एक बहाना था। सुनीता को देख कर मेरी चूत भी शिशिर से बैंग कराने के लिये बेकरार हो रही थी।शर्त के बाद मुझे खुला मौका मिल गया।डोरे डालने के लिये मैंने स्त्री सुलभ हथियार का स्तेमाल किया जिसमें शरीर की भाषा नैनों की भाषा और प्रेम की भाषा सामिल थी।मैं बड़ी सेक्स भरी आवाज में उससे बातें करने लगी।नैन मैं रस भर के कहती “मैं भी तो तुम्हारी भाभी हूँ ।सुनीता जैसा मेरा भी तो अधिकार है”।कभी वदन को ऐंठ कर कुटिलता से कहती “रात को तो मेरी हालत खराब हो गयी”।आफिस फोन कर देती कहीं ले जाने या लंच पर ही ले जाने के लिये।रैस्ट्रारैंट में बड़े टाइट कपड़े पहिन कर जाती जिनसे मेरी निप्पिल के आकार साफ दिखायी देते चूतड़ के उभार साफ नजर आते।बात बात पर उस पर गिर पड़ती कंधे पर सिर रख देती।साथ में सेक्स भरी बातें भी करती जाती।इन सब का असर यह हुआ कि शिशिर मेरे से बहुत खुल गया।दो मतलब लिये हुये सैक्स भरा मजाक भी करने लगा।जल्दी ही एक दिन शिशिर के ऑफिस में ही मैने हाव भाव से साफ जाहिर कर दिया कि अब क्यों देर करते हो लगाओ न मुझे में और उससे सट कर मैने उसका हाथ पकड़ लिया।लेकिन शिशिर पीछे हट गया। उसने एक दम हाथ नहीं झटका न ही मुझे धकेला बरन बाहर चलते हुये बोला “चलो घर चलें कुमुद इंतजार कर रही होगी”।

मैं समझ गयी कि लोहा पूरी तरह गरम करने के लिये शारीरिक तरीके से बढने की जरूरत है।मैं शरीर का मजा देने के लिये मौके की तलाश में थी और वह मौका मुझे मिल गया।शहर में नुमायश लगी थी।सुनीता राकेश शिशिर कुमुद मैं रूप सब लोग गये।मैं टाइट सलबार सूट में थी।एक जगह स्टेज पर गाने बजाने हो रहे थे।लोग घेरा बना के जमा थे। अँधेरा हो रहा था और वह जगह ज्यादा ही अँधेरी थी।हम सब लोग भी गाने सुनने के लिये खड़े हो गये।मैं शिशिर के सामने खड़ी हो गयी।अनजानी सी पीछे हुई और अपने पीछे का हिस्सा उसके सामने से चिपका दिया।मेरी चूतड़ों की गोलाइयॉ उसकी जॉघों में पूरी तरह फिट हो गयीं थीं।मैं दरार में उसके सख्त होते हुये लंड को महसूस करने लगी थी कि तभी वह बहॉ से हट गया और सुनीता के पीछे जा कर खड़ा हो गया।सुनीता के चेहरे पर एक मुस्कान उभरी जो मुझे चिड़ाने के ल्यिे भी थी और शिशिर की उसको लंड लगाने की मक्कारी पर भी।

मैने सीधी डोज देने की ठान ली क्योंकि मेरे वहॉ रहने में कुल छह दिन और रह गये थ जिनमें मुझे अपनी मनमानी करनी थी। अगले ही पिकनिक थी। मैने उस दिन साड़ी पहनी लेकिन अन्दर पैण्टी नही पहनी। पिकनिक में चादर पर मैं शिशिर के सामने बैठी घुटनों को ऊपर करके। जब देखा कि लोग नहीं देख रहे हैं तो अपनी टॉगें थोड़ी चौड़ी कर दीं जिससे अन्दर का नजारा दिख सके। मैने नोट किया कि शिशिर के ऊपर असर पड़ा है। वह दबी ऑखों से मेरी साड़ी के अन्दर झॉक रहा था। ऐसा मैं कभी कभी ही कर पा रही थी क्योंकि इतने लोगों के बीच में बैठी थी लेकिन उनको शक भी नहीं हो सकता था कि मैने पैण्टी नही पहनी है। अपकी बार मौका मिला तो मैने टॉगें पूरी खोल दी इतनी कि मेरी चूत का मुँह भी खुल गया होगा। अब नजारा उसके सामने था और वह भी जैसे सब कुछ भूल कर आश्चर्य से घूरे जा रहा था। मैं भी उसकी तरफ मक्कारी से मुस्करा रही थी।

शिशिर सोच रहा था 'ओ माइ गॉड कैसी फूली फूली रसभरी चूत है सुनीता भाभी से कम नही'

सुनीता की नजरों से यह खेल छुपा न था। जब सुनीता ने शिशिर को रजनी की चूत को घूरते हुये देखा तो हैरानी भी हुई और शिशिर पर गुस्सा भी आया। उसने आवाज दे कर शिशिर को कार से खेल का सामान लाने को भेज दिया।

जब अकेले में शिशिर भाभी भाभी करता हुआ सुनीता के पास आया तो सुनीता बोली "देवर जी बड़ी लार टपक रही थी। ये समझ लेना कि कहीं और मुँह मारा तो अपनी भाभी से परॉठे कभी भी नहीं खा पाओगे"।

मैने सुनीता की चालाकी जान ली थी जब उन्होंने शिशिर को हटा दिया। उसके बाद उन लोगों को कुछ घुसपुस करते हुये भी देखा। समझ गयी कि मान मनौअल चल रहा होगा क्योंकि सुनीता को अपना कण्ट्रोल खतम होतो हुये दिख रहा है। मुझे अपनी चूत के पावर पर भरोसा था। जानती थी ऐसी चूत देखने के बाद कोई अपने को काबू में नहीं रख सकता। उस रात मैने उधेड़बुन करके कैसे भी शिशिर से अकेले में मिलने का समय निकाला।

मैं शिशिर से झूटी नाराजी दिखाती हुई बोली "क्या देखे जा रहे थे। आज मैं पैण्टी पहिनना भूल गयी तो तुमको शर्म नहीं आती अन्दर ताकझॉक करते हो"।

शिशिर "जब देखने लायक चीज होगी तो ऑखें अटकेंगी हीं"

मैं "तो फिर चहिये है उसको"

शिशिर "उसके दाबेदार तो और भी हैं। आप मेरी भाभी की सहेली हैं हमें आपकी इज्जत करनी है"।

मैं कुछ बौखला सी गयी "सुनीता और हम एक हैं। तुम और सुनीता मैं क्या है मुझे सुनीता ने सब

बता दिया है फिर हमको लेने मैं क्यों परहेज करते हो"।

शिशिर मेरा हाथ पकड़ कर अनुनय भरे स्वर में बोला "जब आप सब जानती ही हैं तो इन संबंधों को हम लोगों के बीच में ही रहने दीजिये न।सैक्स छोड़ दीजिये बाकी सब बातें मैं आपकी सुनीता भाभी की ही तरह मानूँगा।आप को कोई शिकायत नहीं होगी"।

उसकी तरफ देख कर कहने को कुछ और नहीं रह गया था।

मैं सोच भी नहीं सकती थी कि मेरी जैसी औरत देने को तैयार हो और कोई आदमी लेने से मना कर दे।सुनीता भी शायद नहीं सोच सकती थी क्योंकि जब मैने बताया तो अचानक खुशी से वह उछल पड़ी और मेरे गले लग गयी।सब कुछ बता देने के बाद

मैंने सुनीता से कहा "अच्छा भई मैं भाभी भक्त देवर को मान गयी लेकिन जाने के पहले उसका मजा तो चखा दो जिसने मेरी सहेली की यह हालत कर दी है"।

सुनीता पहले तो मुखर गयी।जब बहुत मिन्नतें कीं तो बोली "अच्छा देखेंगे"।

13

सुनीता और शिशिर

उसी दिन शाम को शिशिर और कुमुद सुनीता के यहॉ दिनर पर आये।शिशिर का बर्ताब मेरी तरफ बड़ा नरम था जैसे कुछ हुआ ही न हो।

मैने सुनीता को उकसाया तो अकेला पा कर उसने शिशिर से बात की।

सुनीता "तुम बाकई भाभी के हकदार हो।तुमको अपने को सोंप कर मैने कोई भूल नहीं की।रजनी बापिस जा रही है। वह मेरी बढी अन्तरंग है।उसकी तमन्ना पूरी कर दो।समझो मेरी तरफ से यह तोहफा है"।

शिशिर आश्चर्य से "भाभी क्या बात करती हो मैं तुम्हारे और कुमुद के अलाबा किसी को नहीं छुऊ ॅगा फिर तुन ही तो उस दिन मुझ पर लांछन लगा रहीं थीं।मेरे से अलग हो जाना चाहतीं थीं"।

सुनीता " वह तो तुमको समझने के लिये कहा था।अब उसकी अच्छी तरह से मरम्मत कर दो कि शर्त लगाने की हेकड़ी भूल जाये"।

शिशिर "भाभी मैं तो तुम्हारे बगैर किसी को नहीं करूॅगा"।

सुनीता हॅस के "तो फिर कुमुद को क्यों लगाते हो"।

शिशिर "कहो तो करना छोड़ दूँ"।

सुनीता "नहीं नहीं तुम कहॉ बात ले जाते हो।मैं कह रही हूँ कि तुम रजनी को करो बस"।

शिशिर "तो आप को भी मौजूद रहना पड़ेगा"।

सुनीता " यह कैसे हो सकता है रजनी मेरे सामने कैसे करायेगी"।

शिशिर "क्यों नहीं करायेगी जब आपकी अन्तरंग है आपसे फरमायश कर सकती है"।

सुनीता "अच्छा देवर जी अब समझी तुम्हारी चालाकी दोनों को एक साथ लगाना चाहते हो"।

शिशिर "जाओ मैं नहीं करूँगा"।

सुनीता "अच्छा भई दोनों हाजिर हो जायेंगी"।

14

रजनी

मुझे यह जान कर बड़ी खुशी हुई कि सुनीता ने शिशिर को तैयार कर लिया है ।सुनीता का साथ रहना भी मुझे भा रहा था।सुनीता ने जब प्रश्न उठाया कि लेकिन राकेश और रूप से बच कर मिलोगी कैसे तो मैने उसको चैलेन्ज जैसा लेते हुये कहा तुम इसकी फिक्र न करो मेरे ऊपर छोड़ दो।लेकिन यह बड़ी समस्या थी ।हम लोग छुट्टियों मैं थे और सब लोग साथ ही निकलते थे।उनसे अलग रह कर एक रात निकाल पाना टेड़ी खीर था।मैने एक प्लान बनाया।सुनीता को नहीं बताया नहीं तो वह मना कर देती।मैने सोचा कि रूप और राकेश को किसी और के संग लगा दें।ठीक भी था जब हम लोग मजे ले रहे थे तो उनको भी मजे ले लेने दें।सब के ऊपर नजर दौड़ायी तो मिसिज अग्रवाल ठीक लगीं।अच्छा भरा वदन था।खूब उभार लिये सीने थे।भारी सेक्सी चूतड़ थे।और उनके जल्दी राजी हो जाने की उम्मीद भी थी।मैंने प्लान पर काम करना चालू कर दिया।

सबसे पहले मिसिज अग्रवाल का तैयार करना था।उनसे अकेले मैं मिली तो सैक्स की बातों के साथ उनकी सैक्सी बॉडी की बड़ी तारीफ

कर दी और कहा "बुरा न मानो तो एक बात कहूँ रूप तो तुम्हारे ऊपर मर मिटा है।जब भी मुझे करता है तुम्हारा नाम ले लेकर ही लगाता है"।

मिसिज अग्रवाल शर्माती हुई बोलीं "ओ मॉ बड़े बुरे हैं वो"।

मैने उनके हाथ को दबाते हुये कहा "बुरे नहीं जब तुम्हारे नाम का लगाते है तों तारे नजर आ जाते हैं।तुम लगबाके देख लो न"।

मिसिज अग्रवाल "तुम उन्हें परमीशन दे दोगी"।

मैं "जिस सुख को लेना चाहते हैं क्यों रोकूँ।तुम अपनी बताओ तुम्हें मंजूर है"।

उन्होंने ऑखों से हामी भर दी।

उसी रात मैने रूप से चुदायी करायी।उसकी मन की भरी बात कर तबियत खुश कर दी।

जब वह स्ट्रोक लगा रहा था मैने बात छेड़ी “रूप मिसिज अग्रवाल का दिल है तुम्हारे ऊपर तुमसे मजा लेना चाहतीं हैं”।

रूप ने पूछा “तुमको कैसे मालूम हुआ”।

मैंने कहा “खुद उन्होंने मुझ से इशारे में कह दिया।तुमसे कहने की हिम्मत नहीं हुई कि तुम मना न कर दो”।

यह बातें करते हुये रूप के स्ट्रोक की रफ्तार बढ गयी।

मैने बात जारी रखी “लेकिन रूप एक बात है उनका ज्यादा माल खाने का मन है।तुम्हारा और तुम्हारे दोस्त राकेश दोनों का साथ साथ खाना चाहतीं हैं”।

रूप का मन थोड़ा बुझ गया “पता नहीं राकेश का।वह उसकी बीवी पता नहीं”।

मैने चूत कस कर लंड पर जमाते हुये उसको उकसाया “तुम्हारा दोस्त है तैयार करो उसको।तर माल खाने को मिल रहा है”।

रूप ने जबाव में पूरा पेलते हुये कहा “करता हूॅ उसको तैयार”

मैने चूत उसकी झॉटों से रगड़ते हुये कहा “डार्लिंग जल्दी करना वह मुझसे पूॅछेगी”।

उसके बाद रूप के चोदने में बहुत उत्साह आ गया।

दूसरे दिन ही जबाव मिल गया।राकेश बखुशी तैयार हो गया।.मुझे अब फिर से संगीता अग्रवाल से बात करनी थी।मैं पुराने जमाने की कुटनी का रोल कर रही थी।पत्नियॉ चुदवाना चाहतीं थीं पति चोदने को बेकरार थे लेकिन कितनी अजीब बात थी दोनों ही किसी और के लिये दीवाने हो रहे थे।किसी और को चूत देने के नशे में मैंने कैसी कैसी चालें चलीं थीं।मिसिज अग्रवाल से मिली तो अलग ले जाकर चिउॅटी काटती हुई मैं फुसफुसा के बोली “तेरे मजे हैं रूप और राकेश दोनों ही लगाना चाहते हैं”।संगीता समझी नही बोली “अभी तो एक बार मिलना बहुत है”।मैने कान में कहा “एक साथ ही दोनों हॉ” और मैने उसका हाथ दबा दिया।

संगीता के चेहरे पर घबड़ाहट थी बोली “न बाबा न ऐसा कैसे हो सकता है”।

मैं झूट बोली “बड़ा मजा आता है मैं तो कई बार करा चुकी हूॅ।सोचो दो लंडों का अलग अलग स्वाद मिलेगा”।

संगीता के चेहरे पर वासना नाच उठी “सच क्या मैं करा पाउॅगी”।

मैने हाथ दबा कर उसके तसल्ली दे दी।वह भी लगवाने के लिये उत्तेजित हो गयी।

भाग्य से मिस्टर अग्रवाल को दो दिन बाद बाहर जाना था।उस दिन की रात मिसिज अग्रवाल के

यहॉ रूप और राकेश के लिये बुक हो गयी। मिसिज अग्रवाल खाना बड़ा जायकेदार बनातीं थीं और खुद भी जायकेदार थीं। रूप और राकेश की बड़ी दावत पक्की थी। हम लोगों के लिये मैदान साफ हो गया। मैने सुनीता को सुझाया कि वह घर में इन्तजाम न करे । किसी भी कारण से रूप और राकेश वापिस आ पहुँचे तो हम लोग रंगे हाथों पकड़े जायेंगे। सुनीता ने शिशिर को खबर कर दी।

15

सुनीता रजनी और शिशिर

शिशिर ने एक आलीशान होटल में रूम रिजर्व कर दिया। सुनीता और रजनी आठ बजे रात को होटल पहुँची शिशिर को साढे आठ बजे आना था। कमरे को देख कर दोनों दंग रह गयीं। शिशिर ने पॉच स्टार होटल का एक पूरा स्वीट बुक कर दिया था। खाने के लिये डाइनिंग टेबिल़ बैठने के लिये सोफा चमचमाता बाथरूम क्वीन साइज बैड और उसके सामने ढेर सारी खुली जगह। शिशिर साढे आठ के पहले ही पहुँच गया। बैल दबाने पर दरवाजा खुला तो सुनीता और रजनी सामने खड़ी थीं एक दम सजी धजी। सुनीता ने दूध सी सफेद साड़ी पहिन रखी थी। उसका गोरा रंग उससे मिल गया था । गले में मोतियों का हार। कानों में हीरे के बड़े टाप्स। सुर्ख लिपस्टिक रॅचे होंठ और कमान सी ऑखें। रजनी ने धानी कुर्ता सफेद चूड़ीदार । हाथों में ठेर सारी हरी चूड़ियॉ। मैचिंग कीमती हार इयरिंग और सुघड़ मेकअप। शिशिर उनको तकता ही रह गया। सुनीता शर्मा के बोली अब आओगे भी या ऐसे ही खड़े रहोगे। शिशिर जैसे सोते से जाग गया हो।

उसने हाथ के बैग से एक सफेद मोगरे की माला निकाली और सुनीता से बोला “भाभी ये आपके लिये”। सुनीता उसकी ओर पीठ करके खड़ी हो गयीं। उसने माला उनके जूड़े में बॉध दी। मोगरा महक उठा। पलट कर सुनीता ने उसके गले में बॉहें डाल दी। शिशिर ने उन्हें खीच कर अपने से चिपका लिया। दोनों ऐसे ही जुड़े थोड़ी देर खड़े रहे। सुनीता ने एक चुम्बन उसके होठों पर लेकर अपने को अलग किया।

शिशिर रजनी की तरफ बढा और बैग से सुर्ख गुलाब का बुके उनकी ओर करके बोला “रजनी जी ये आपके लिये”

रजनी बोली “रजनी नहीं भाभी”

शिशिर ने अपने को सुधारते हुये कहा “रजनी भाभी यह आपके लिये”।

रजनी ने बढ के दोनों बॉहें उसके गले में डाल दी और अपने होंठ कसके उसके होंठों पर गड़ा दिये। शिशिर उनको चूमता रहा।

इस बीच सुनीता डाइनिग टेबिल पर जार में रखी सुगंधित मोमबत्ती जला दी थी और उसकी भीनी भीनी खुशबू कमरें में भरने लगी थी। सॉफ्ट म्यूजिक लगा दिया था। सुनीता ने लाइट ऑफ कर दी। शिशिर ने सुनीता की ओर देखा। मोमबत्ती की मंद रोशनी में वह परी सी लग रही थी। रजनी की कमर में हाथ डाले हुये शिशिर सुनीता की ओर बढा और उसको अपने से चिपका लिया। रजनी उ

सके बॉयें कंधे से चिपकीं थीं सुनीता दॉयें से। इसी हालत में वह लोग थिरकते रहे। शिशिर कभी सुनीता को चूमता था कभी रजनी को। शिशिर का लंड गरमाने लगा था। रजनी उस पर हाथ फेरने लगी थी। उसने झुक कर सुनीता के दॉयें उभार को ब्लाउज के ऊपर से ही मुॅह में ले लिया। सुनीता सी सी कर उठी।

सुनीता ने फुसफुसा के कहा "देवर जी पहले रजनी को सुख दीजिये मैं तो आपके पास ही हूॅ आज की रात उसकी है"।

शिशिर ने रजनी को प्यार से चूम लिया "रजनी भाभी भी तो अपनी हैं" फिर सुनीता को और भींजते हुये बोला "भाभी शुरूआत तो मैं आप से ही करूॅगा लेकिन तुम दोनों इतनी अच्छी लग रही हो कि मैं कुछ भी नहीं उतारना चाहता"।

लेकिन रजनी उसका पैण्ट उतार चुकी थी। अण्डरवियर खींच कर रजनी ने उसके लंड को मुट्ठी में बॉधा तो जैसे लोहे की गरम रॉड पर हाथ रख दिया हो। शिशिर का बड़ा मोटा और लंबा लंड सॉप की तरह ऊपर मुॅह बाये खड़ा था। पत्थर की तरह सख्त।

उसको देखते ही रजनी के मुॅह से निकल गया "ओ माई गुडनैस अब समझी सुनीता इतनी दिवानी क्यों हो रही थी"। रजनी शिशिर की बॉहों से खिसक कर नीचे घुटनों के बल बैठ गयी। मुट्ठी में बॉध कर उसका लंड सीधा अपने सामने कर लिया और मुॅह खोल कर अपने नरम होंठ उसके ऊपर रख दिये। होंठ लगते ही शिशिर की वासना एकदम जाग उठी। हाथ बढा कर शिशिर ने रजनी को उठा लिया और सुनीता की कमर में हाथ डाल कर उन्हें खींचता हुआ बैड तक ले गया। रजनी को बैड के पॉयताने कारपैट पर बैठा दिया और सुनीता को बैड पर चित गिरा दिया। शिशिर ने सुनीता की साड़ी ऊपर तक उलट दी। बाहर के ही नहीं अन्दर के कपड़े उसने कीमती पहिन रखे थे। लेस लगी डिजाइनर पैण्टी पर चूत के पानी से एक बड़ा धब्बा बन गया था। शिशिर ने पैण्टी अलग की। सामने दो चिकनी सपाट जॉघें थीं सन्तरे की रसभरी फॉक की तरह सूजी सूजी चूत की पंखुड़ियॉ थीं जिनके भीतर से गुलाबीपन झॉक रहा था अर्धगोल सुडौल नितम्ब थे जिनके बीच में गहरी दरार थी।

उसके मुॅह से निकल गया "भाभी तुम बाकई बहुत खुबसूरत हो"।

दोनों हाथों से उसने सुनीता को खींच लिया और उसकी जॉघें अपने कंधों पर धर लीं। सुनीता का धड़ पलंग पर था नितम्ब पलंग से ऊपर उठे हुये थे और मुॅह खोले चूत शिशिर के मुॅह से सटी हुई। सुनीता की चूत से मदमस्त अरोमा निकल रहा था। शिशिर ने अपने होंठ सुनीता की पंखुड़ियों से सटा दिये और चूतड़ आगे कर अपना लंड पलंग से टिकी बैठी रजनी के होंठों से लगा दिया।

रजनी ने सिर ऊॅचा कर उसका लंड अपने होठों में ले लिया।

जैसे ही शिशिर ने चूत के अन्दर के उभार को होंठों में दबोचा सुनीता के मुॅह से एक शीत्कार निकल गई और वह तनकर के धनुष की तरह हो गयी। वह चूत की उठान को होंठों से इस तरह चूसने लगा जैसे संतरे की फॉक चूस रहा हो। नीचे बैठी रजनी शिशिर के लंड को जड़ से दायें हाथ की मुट्ठी में बॉधे पाप्सिकिल की तरह चटखारे लेकर चूस रही थी। शिशिर दोहरे मजे ले रहा था। रजनी ने मुट्ठी को लंड के सिरे तक फिसला कर उसके ऊपर की खाल को हटा दिया। लंड का सुपाड़ा निकल

आया।जैसे पाप्सिकिल खा रही हो उसने सुपाड़ा अपने मुँह में लेकर हल्के से दाँत लगा दिये।शिशिर उत्तेजना से कराह उठा और उसने चूत की उठान पर हल्के से दाँत लगा दिये। सुनीता के मुँह से चीख निकल गयी़ बोली “ओ देवरजी तुम तो काटते हो”।

शिशिर हिल पर जीभ फेरने लगा।सुनीता की सिहरन बढ गयी।उसने शिशिर के सिर पर हाथ रख कर और कस के उसका मुँह चूत पर दबा लिया।शिशिर ने साथ ही चूतड़ आगे कर और जोर से लंड मुँह में पेला। रजनी ने होंठों की ग्रिप और बढा दी।जब रजनी जोर बढा देती थी तो शिशिर सुनीता की चूत पर कसर निकालता था और जब सुनीता रगड़ बढा देती थी तो शिशिर रजनी पर कसर मिटाता था। शिशिर सुनीता और रजनी के बीच माध्यम बन हुआ था।

सुनीता जोरों से ‘उई ई ई ई ॅ ी ी ी ी ी ाााााााााा ‘ करे जा रही थी।

रजनी के मुँह से न्किल रहा था ‘उ हूँहूँहूँ हूँ ऊँ ऊँ ऊँ ् ् ्््् ‘ जैसे बढी स्वदिष्ट चीज चाट रही हो।

शिशिर की जीभ चूत की गहराइयों तक घुस जाती थी और सुनीता तड़प तड़प जाती थी।

शिशिर दोनों हाथों से सुनीता की दोनों चूचियों को मसल रहा था।उसके दोनों निपिल ब्लाउज के ऊपर ही एक एक इंच उभर आये थे।

रजनी उँगली और अँगूठे की रिंग बना के शिशिर के लंड को उसमें ले रही थी साथ ही मुँह से चूसती जाती थी।

काफी देर तक वह मजे लेते रहे।सुनीता की गुलाबी बटरफ्लाई तन कर सख्त हो गये थी। शिशिर ने उसके ऊपर अँगूठा रखा।

सुनीता एक दम काँप गयी “ ओ ओ माँ माँ ाँ ाँ ाँ ाँ आँ ॅॅॅॅॅ आँ ाााााााााााााााााा ाााााा ाााााा ााा में तो ग ग ई ई ई ई ई ई ॅॅॅॅॅॅॅॅ “

उसने कसके चूत शिशिर के मुँह से चिपका दी औ़ जोरों से दोनों हाथों से उसका सिर टाँगों में दबा लिया।

शिशिर बड़ा उत्तेजित हो उठा। उसने लंड पेलने की स्पीड बढायी और उसके लंड ने उगलना चालू कर दिया।

रजनी ने मुँह से लंड निकाल लिया। लंड से गाढा रस निकलता ही जा रहा था। रजनी ने सुनीता की पैण्टी उठा ली और ढेर सारा लोड उस पर ले लिया।

रजनी उठी और खड़े हो कर शिशिर से चिपक गयी। शिशिर के वीर्य से भरे अपने होंठ़ सुनीता के रस से गीले शिशिर के होठों से सटा दिये।

रजनी ने उठ कर सुनीता की ओर देखा। वह निढाल पड़ी हुई थी। साड़ी उलटी हुई थी। बड़ी ही चिकनी और सुडौल टाँगों के बीच चूत की फाँकें तराशी हुयीं डबलरोटी की तरह फूली हुई थी।ं उनके ऊपर बड़े सलीके से कतरे हुये सुनहरे बालों का तिकोन सा बना था। दोनों फाँकें फैल गयीं थीं। अन्दर का गुलाबीपन दिखायी दे रहा था जिसके अंदर से नमी झाँक रही थी । बुरी तरह चुसने

से चूत लाल हो गयी थी। पेट और टॉगों पर जरा स भी ज्यदा मॉस नहीं था। सब कुछ एकदम अनुपात में। ब्लाउज बुरी तरह से मॅसला हुआ था जिसमें से सुडौल गोलाइयॉ उभरी हुयीं थीं। सफेद साड़ी में चूत खोले कोई अप्सरा पड़ी थी। रजनी पहली बार अपनी अंतरंग सहेली के अन्दर के भागों को देख रही थी। इस बीच शिशिर बाथरूम चला गया था। रजनी की चूत में आग लगी हुई थी।रजनी ने एक झटके से अपनी सलबार का नाड़ा खोल लिया और चूत के रिसने गीली हो गयी पैण्टी को खींच कर निकाल फेंका।अपना कुर्ता भी निकाल फेंका और बिल्ली की तरह चलती हुई सुनीता के ऊपर आ गयी।वह सुनीता के ब्लाउज के बटन खोलने लगी। रजनी पहली बार ऐसा कर रही थी। सुनीता भौंचक रह गयी।

बोली "रज नीई ये क्या करती हो"।

रजनी तब तक उसका ब्लाउज और ब्रेजियर अलग कर चुकी थी। बड़े बड़े गोले स्प्रिंग से उछल कर बाहर आ गये थे। रजनी ने देखा तो बोल पड़ी

"सुनीता तू बाकई बहुत खुबसूरत है"।

रजनी ने सुनीता का बायॉ उभार निपिल सहित मुॅह में भर लिया और अपनी चूत सुनीता की चूत के ऊपर बैठा दी।जब रजनी की चूत की पंखड़ियों ने सुनीता की चूत के अन्दर रगड़ा तो सुनीता को बहुत अच्छा लगा।उसने रजनी की पतली कमर अपनी दोंनों टॉगों के बीच भर ली और अपनी टॉगें उसकी कमर पर कस कर उसकी चूत को और कस कर अपनी चूत में घुसा लिया।

रजनी ने अपनी दॉयी चूची उसके मुॅह में दे दी ।

शिशिर जब बाथरूम से आया तो उसने देखा कि सुनीता चित लेटी है। रजनी उसके ऊपर लेटी है। रजनी सुनीता की एक चॅूची चूस रही है और सुनीता रजनी की चूची पर पिली पड़ी है। सुनीता की नारंगी की तरह रस से भरी हुई सुनहरे तराशे बालों बाली चूत रजनी की लम्बी फॉक बाली रसीली सपाट चूत में लॉक है। सुनीता की चूत का एक होंठ रजनी की चूत में घुसा है और रजनी की चूत का एक होंठ सुनीता की चूत के भीतर। दोनों एक दूसरे के चूत के अन्दर के दाने को रगड़ रहीं हैं। चूत को ज्यादा से ज्यादा खुला रखने के लिये सुनीता ने अपनी टॉगें रजनी की कमर पर कस रखी हैं और रजनी ने टॉगें फैला रखी हैं। दोनों कस कस के आवाजें निकाल रहीं हैं।

यह देख कर शिशिर का लंड तन कर उत्तेजना से हिलने लगा। वह आगे बढा और पलंग के पैताने जा कर उसने उन दोनों को बैसी ही गुॅथी हालत में पलंग के किनारे तक खींच लिया ।पायताने खड़े खड़े ही उसने अपना लंड हाथ से पकड़ा सुनीता की चूत के मुॅह पर रखा और एक झटके में ही पूरा अन्दर कर दिया।

सुनीता के मुॅह से निकला " उईई मॉााा"।

उसने दो तीन बार उसको अन्दर बाहर पेला। फिर अपना लंड बाहर खींच लिया। फिर से मुट्ठी में बॉधा और अबकी बार रजनी के सुराख से मिलाया और जोर लगा के घुसाता ही गया।

रजनी कराह उठी "ओ मा ई गॉ ड "।

दो तीन बार उसने उसकी चूत में ही अन्दर बाहर किया फिर खींच लिया। फिर उसने सुनीता की बुर

पर लगाया बोला “लो भाभी अब तुम लो” और सारा का सारा अन्दर कर दिया।

सुनीता बनाबटी शिकायत से “देवर जी तुम तो अन्दर तक हिला देते हो”।

बाहर खींच कर शिशिर ने रजनी की बुर में एक झ्टके मेंपूरा भीतर “लो रजनी भाभी तुम लो”।

रजनी “हॉ लगाओ तुम्हारे लंड में जोर है तो मेरी चूत भी कम नहीं”।

शिशिर एक बार सुनीता को चोदता था और एक बार रजनी को। दोनों के अन्दर उसका लंड एक से निकलता दूसरी की में घुस जाता।

उसको दुहरा स्वाद मिल रहा था। एक बार सुनीता की मॉसल स्पंजी लंड को जकड़ने बाली बुर का दूसरी बार पतली लंबी गरम सुरंग का जिसमें लंड गहरायी तक घुस जाता था।जब वह रजनी पर चोट करता तो रजनी झेलते हुये अपनी चूत सुनीता की चूत पर रगड़ देती। झब वह सुनीता पर जोर लगाता तो सुनीता तॉगों की जकड़ और बढा देती कि उसकी चूत रजनी की बुर पर रगड़ मार देती। शिशिर की रफ्तार बहुत बढ गयी थी। धकाधर धकाधक वह लगाये जा रहा था।सुनीता में रजनी में फिर सुनीता में।सुनीता रजनी एक दूसरे की चूचियों को कस के जकड़े हुये थीं।उनका सिसकना बढ गया था।

जैसे ही चोट लगती सुनीता बुदबुदाती “ओ ओ शिशिर मैं क्या करूॅरूॅऊरूऊॅ हू हू ़ु हू हू ़ू हू “।

सुनीता जब ज्यादा आनन्द में आ जाती थी तो शिशिर का नाम ले कर पुकारने लगती थी।

रजनी का चुनौती बाला रूख अब भी बना हुआ था हालॉकि उसमें रहम जैसा भाव आ गया था

उसके अन्दर धक्क से जाता तो रजनी कराह उठती “ ओ मेरे राााााााम्म्म्म हॉ हा ॅॅ ॅ ॅ ॅहॉ काट डालो इसको आज इसे छोड़ना नहीं”।

शिशिर ने सुनीता की जॉघों को दोनों हाथों से थाम रखा था जो रजनी की कमर पर कसी हुईं थीं खड़े खड़े वह एक के बाद एक दोनों को पेले जा रहा था जैसे पिस्टन शंट कर रहा हो।

सुनीता में घुसता सुनीता तड़पती “ओओ ओ ओ ओ ो ो ो आ ा आााााााा आो आाो मेरी मम्मीमींींींी ओ माईई ॅॅ गॉ गॉ ड

उईईई मॅाऑऑाााााााााााा मैं ा मरीईईईई “

रजनी झेलती तो दॉतों के ऊपर दॉत जकड़े हुये अन्दर ळांबी सॉस खींचती “ऊऊऊऊऊऊऊऊऊऊऊ”

जब चोट पड़ चुकती तो जोर से सॉस बाहर करती “फुअफुअफुअफुअफ्फ्अफुअ”।

सुनीता की बुर बुरी तरह से रिस रही थी। जॉघों तक पानी फैल गया था। रजनी की बुर भी पूरी गीली हो रही थी। दोनों की चूत गुत्थमगुत्था थी और एक दूसरे के पानी से लथपथ हो रही थी। शिशिर का लंड उनकी चूत से फच्च्व फच्च्व की आवाज निकाल रहा था।

सुनीता और रजनी की कराह बढती जा रही थी।

“ओओ ओ ओ ओ ो ो ो आ ा आााााााा आो आाो मेरी मम्मीमींींींी ओ माईई ॅॅ गॉ गॉ ड

उईईई मॅाऑऑाााााााााााा मैं ॅ   मरीईईईई “

“"ऊऊऊऊऊऊऊऊऊऊऊ”

“फुअफुअफुअफुअफय्अफुअ”

शिशिर ने और स्पीड बढायी तो रजनी ने सुनीता की चूची को छोड़ अपने होंठ उसके होंठों पर गढा दिये।शिशिर ने हाथ बढा कर सुनीता की दोनों चूचियॉ हथेलियों में थाम लीं और शंटिंग चालू रखी। दोनों होंठ चूसती जातीं थीं और ‘ऊॅऊॅ’ की आवाज करती जाती थीं। जैसे ही शिशिर ने चूचियों की घुंडियों को उॅगलियों में मसला सुनीता चिल्ला उठी

“ओ शिशिर मैं तो ग ई ई ई......मत निकालो ओ बाहररररररर”।

इसके साथ ही अपनी कमर उठा कर उसने रजनी की चूत से इतने कस के सटा ली कि रजनी हिल न सकी। उसकी रगड़ से रजनी का पानी भी छूट गया “अआााााआा मैंऐऐं क्याााा करूरूरूरूरूरूरूरूरूरूरूरूॅ मॉाााााााााााा मेरींंंंंंंंंंंंंंंंंंंंंंी मैं झड़ींींींींीईई......।”

शिशिर ने जल्दी से पूछा “रजनी भाभी आपने बर्थ कंट्रोल पिल ली है”।

रजनी के हॉ कहते ही शिशिर ने रजनी की बुर में अपना पूरा लंड अंदर किये हुये ही सारा लोड उगलना चालू कर दिया।

करीब करीब एक साथ तीनों लोग सिहरते रहे। जब शिशिर ने लंड बाहर किया तो रजनी की मसली चूत के अन्दर से गाढा गाढा सफेद लिक्विड बाहर   निकल कर सुनीता की चूत पर गिर रहा था।

रजनी ने उठ कर अपनी चूत को पौंछा। सुनीता ने हाथ से खींच कर शिशिर को   अपनी बगल में लिटा लिया। शिशिर ने हाथ बढा के रजनी को अपनी दूसरी तरफ लिटा लिया। दोनों ने शिशिर के एक एक कंधे पर सिर रख लिया।

रजनी बोली “थैंक यू शिशिर मैं पूरी तरह संन्तुष्ट हो गयी हॅू खासतौर पर तुमने मेरी सहेली से मेरी जान पहचान करवा दी”।

सुनीता लजाती हुयी बोली “धत्त ऐसा भी कोई करता है”।

शिशिर बोला “रजनी भाभी अभी कहॉ अभी आपसे अकेले की मुलाकात तो करनी है।

रजनी “न बाबा और मैं न ले सकॅूगी”।

सुनीता “शिशिर इसको मत छोड़ना। इतनी इठलाती थी हेकड़ी तो बन्द हो इसकी”।

शिशिर ने सुनीता को भींच कर चूम लिया फिर रजनी को भींच कर उसको चूम लिया।

जब सुनीता और रजनी शिशिर से मुलाकात का बेसब्री से इन्तजार कर रहीं थीं ठीक उसी समय राकेश और रूपेश मिसिज अग्रवाल के घर पर दस्तक दे रहे थे। मिसिज अग्रवाल ने दरवाजा खोला। एकदम सजी धजी पूरा श्रंगार किये। कमनीय तो थी हीं और मादक हो उठी थीं। पूरे उठे हुये जोवन उभरे गोल गोल चूतड़ दमकता रंग ऑखों में सुरूर। मोटी नहीं थी पर शरीर अच्छा भरा हुआ। उन्होने राकेश का हाथ पकड़ते हुये कहा “आइये देवर जी” फिर ब की ओर देखते हुये “आ इये रूपेश जी”।कोई हिचकिचाहट नहीं थी न शर्मा रही थीं। अन्दर आ कर राकेश ने कीमती परफ्यूम प्र्जेण्ट की तो वह उससे सट के खड़ी हो गयीं बोली “लीजिये लगा दीजिये”। राकेश उनके उभार की नजदीकी महसूस करने लगा था। उसके शरीर में झनझनहट सी लगने लगी थी।

वह बोलीं “बैठिये”।

लिविग रूम में शानदार सोफे पड़े हुये थे। खुशहाली और सुरूचि चारों ओर नजर आ रही थी। राकेश और रूपेश बड़े से सोफे पर बैठ गये।

मिसिज अग्रवाल ने पूछा “ आप लोग कुछ हार्ड डिंक लेना चाहेंगे मैं तो लेती नही”।

राकेश “अगर आप साकी बनेंगी तो जरूर लेंगे”।

मिसिज अग्रवाल “ आप बनाइये तो सही मैं सब कुछ बनूगी। आज की रात आपके नाम है अगर कुछ कमी रह गयी तो सुनीता और रजनी शिकायत करेंगी”।

राकेश और रूपेश दौनों ड्रिन्क बना लाये और मिसिज अग्रवाल के लिये कोक। मिसिज अग्रवाल बड़ी बेतक्लुफी से उनके सामने लवसीट पर बैठ गयीं। दौनों टॉगें चौड़ाई हुई थीं। अगर साड़ी से न ढकी होती तो सामने चूत का पूरा मुॅह खुला दिखता। उन दौनों को नमकीन देने को ठीक उनके मुॅह के सामने इस तरह झुकती थी कि उनकी छातियॉ निप्पिल तक दिखायी देती थीं। रूपेश से न रहा गया तो उनको पकड़ा तो उसके ऊपर इस तरह गिरीं कि हाथ उसके लण्ड पर रख दिया फिर उठती हुई बोलीं “तसल्ली रखो लाला जी”।

अब की बार सामने और बेतक्लुफी से बैठीं। टॉगें चौड़ाये दोनों पैर सोफे पर रख लिये। टॉगों के ऊपर की साड़ी ऊपर हो गयी थी नीचे की नीचे गिर गयी थी सामने चूत को केवल सिल्किन अण्डरवीयर के हुये थी जिसके ऊपर एक धब्बा उभर आया था। दो एकदम फक्क गोरी सुडौल रानें उनके बीच फॅसी हुई पतली काली पट्टी वह दोनों उत्तेजित होने लगे थे। लण्ड उठने लगे थे जिनको वह बढे ध्यान से देख रहीं थीं।

राकेश कहने लगा “भाभी तुममें गजब है ऐसी चीज को अग्रवाल कैसे छोड़ कर चले जाते हैं”

मिसिज अग्रवाल “जाने के पहले अपनी पूरी कसर निकाल लेते हैं बाकी आने पर पूरी कर लेते हैं। हाथ लगाने से दुख रही है। पहले से तुम लोगों से वायदा न होता तो आज मैं आराम कर रही होती”।

रूपेश ने कहा “भाभी ऐसा भी क्या तड़पाना नाहीं छुपाते हो नाही मुॅह दिखाते हो”।

मिसिज अग्रवाल ने ऑख नचाई “मुॅह दिखाई की रश्म होती है”।

राकेश उठते हुये “लो मैं रश्म पूरी किये देता हूँ”।

मिसिज अग्रवाल जल्दी से उठते हुये “ना ना पहले दूल्हे मियॉ को तो देखने दो”। वह रूपेश और राकेश के बीच में सट के बैठ जातीं हैं। दोनों तरफ हथेलियों से दोनों लण्ड थाम लेती हैं। राकेश कमर में हाथ डाल के अपनी तरफ खी च लेता है। वह सामने से छातियॉ पूरी गड़ा के कस के चिपक जाती हैं उसके होंठों को अपने होठों से दबा लेती हैं और नीचे हाथ डाल के उसका लण्ड बाहर निकाल के फुसफुसाती हैं “ये तो बहुत ज्यादा दबंग है”।

राकेश पीठ पर ब्लाउज के बटन और ब्रेजियर के हुक खोल देता है। रूपेश उठ कर के उनकी साड़ी खी च लेता है और आगे हाथ डाल के नाड़ा खोल के पेटीकोट खी च लेता है। वह उतारने के लिये पैण्टी पकड़ता है कि मिसिज अग्रवाल उठ कर के खड़ी हो जाती हैं “इसको अबी रहने दो”। उनका पूरा वदन दमकता है। उम्र के बाबजूद उनकी भरी छातियॉ गोल और सख्ती से खड़ी हुई हैं। काली घुण्डियॉ तन करके आथा इंच ऊची हो गयीं।वदन पर कोई थुलथुल मॉस नहीं।

बोलीं “पहले आप लोगों की बारी है”। इसके साथ ही वह राकेश का पैण्ट उतारने को बड़तीं हैं लेकिन इसकी जरुरत नही पड़ती वह दोनों अपने अपने कपड़े उताार फेंकते हैं। दोनों का तन्नाया लण्ड खड़ा होता है।

मिसिज अग्रवाल के मुँह से निकल जाता है “हे मॉ आप दोनों तो एक दूसरे से होड़ ले रहे हैं मैं कैसे लूगी ये”। उत्तेजना में राकेश उनको बॉहों मे बॉध लेता है। वह राकेश को लिये हुये सोफे पर गिर जाती हैं फिर फिसल कर नीचे कार्पेट पर घुटने के बल बैठ जाती हैं। राकेश के लण्ड की सुपाड़ी खोल कर अपने होठों में दबा कर उसको चूसने लगती हैं।राकेश का शरीर एकदम तन जाता है। रूपेश पीछे से उनकी चूचियॉ जकड़ लेता है तो दूसरा हाथ बढा कर वह उसका लण्ड पकड़ लेती हैं और लण्ड पकड़े हुये राकेश के बगल में बैठा लेती हैं। राकेश को अब पूरा का पूरा निगलती जाती हैं और रूपेश के लण्ड मुट्ठी मारती जाती हैं। मिसिज अग्रवाल ने दोनों गोलाइयॉ राकेश के पैरों पर दबा ली हैं। राकेश हाथ डाल कर उनकी चूचियों को मुँह हथेलियों में भींच लेता है और अपने होंठ उनकी चिकनी सुडौल पीठ पर चिपका देता है। मिसिज अग्रवाल की घुटी घुटी चीख निकल जाती है वह बुदबुदाती जाती हैं जिसमें प्लेजर मिला हुआ है। ब पीछे से पैण्टी के अन्दर हाथ ले जाके बीच की उँगली उनकी चूत के अन्दर कर देता है जो तर हो रही है। मिसिज अग्रवाल एकदम उछल जाती हैं। राकेश के लण्ड पर दॉत गड़ा देती हैं। रूपेश का लण्ड बहुत कस के मुट्ठी में जकड़ लती है। वह दोनों चीख उठते हैं। मिसिज अग्रवाल की रफ्तार बहुत तेज हो जाती है साथ ही वह अपनी चूत भी रूपेश की उगली पर ऊपर नीचे करती जाती है। क्योंकि रूपेश उगली ज्यादा अन्दर नही। कर सकता है। तीनों लोग जोर जोर से आवाजें निकाल रहे है।

सबसे पहले मिसिज अग्रवाल चिल्लाती हैं “ओ मॉऑाा मै तो गइईई“।वह बडी जोर से राकेश के लण्ड को चूसती हैं। रूपेश के लण्ड पर कस के मुट्ठी मारती हैं।वह बड़ी देर झड़ती रहती हैं साथ ही जोरों से शीईई... की आवाज करती रहती हैं। राकेश अपना गाढा रस उनके मुँह में उगल देता है। रूपेश की धार हवा फव्वारे की तरह छूट जाती है। मिसिज अग्रवाल अपना मुँह हटा लेती है। रिस रिस करके सफेदी नीचे गिरती जाती है।

मिसिज अग्रवाल सोफे पर दोनों के बीच बैठ कर उनके सिर अपनी छातियो से चिपका लिया। तीनों देर तक निढाल से पड़े रहे। फिर दोनों को चूम कर उन्होने बैडरूम में चलने को कहा। बैडरूम में शानदार किंग साइज का बैड पड़ा था और एक दीवाल पर सोफे लगे हुये थे। मिसिज अग्रवाल बाथरूम से आके बोलीं "अब मैं अपनी दिखाने को तैयार हूँ लेकिन दूँगी तब जब आप अपनी मस्त चुदायी की कहानी सुनायेंगे"।

राकेश और रूपेश बैसे ही नंग धडंग सोफे पर बैठ गये थे। उनके सामने पलंग पर बैठ कर मिसिज अग्रवाल ने एक झटके से अपनी कच्छी खींच कर उताार दी।वह उनके जूस से तर हो रही थी। फिर उन्होंने उँगली में घुमा के उन लोगों की ओर फेंका। वह रूपेश के मुँह पर पड़ी। ब ने बड़े प्यार से मस्ती से उसे चूमा और लम्बी साँसों से सूघा। मिसिज अग्रवाल ने टाँगें चौड़ी कर दीं। माई गॉड़ डबलरोटी की तरह फूली उनकी फुद्दी थी एकदम सपाट। पैर फैलाने से संतरे की फाँक से ओंठ खुल गये थे।बीच में तितली सी क्लीटोरिस उठी हुई थी और उसके नीचे चूत का छेद खुला हुआ था एकदम पिंक गहराई तक गीला और चमकता हुआ। एकदम पकी हुयी मैच्योर। रूपेश के मुँह से निकल गया " ओ माई गॉड ऐसी चूत तो मैने आज तक नहीं देखी"। दोनों के लण्ड जो उठे हुये थे तन्ना कर सीधे ऊपर हो गये। उठ कर वे पलंग की तरफ बढे।

मिसिज अग्रवाल ने टोका "पहले सुनीता रजनी की चुदायी की बातें"।

अभी बताते हैं उन्होंने कहा पर राकेश ने उनको पलंग पर खींच लिया और टाँगें दोनो़ ओर कर अपना मुँह उनकी गदूली सी चूत के ऊपर रख दिया। होठों के बीच घुण्डी ले कर चूसने लगा। मिसिज अग्रवाल के मुँह से किल्कारी निकल गयी। रूपेश ने सिरहाने पहुँच कर उनकी एकं चूची मुँह मे लेली और दूसरी हथेली में कस के दबा ली। उसका बड़ा सा लण्ड मिसिज अग्रवाल के मुँह के सामने लटक रहा था जो उन्होंने आगे बढ कर मुँह में ले लिया।राकेश उनकी चूत को बहुत बुरी तरह से चूस रहा था। उनकी रानें को दोनो ंहाथों के जोर से पूरा फैला लिया था और अपना मुँह जितना घुसा सकता था घुसा लिया था।बीच बीच में जीभ उनके मैं करता था। मिसिज अग्रवाल अपनी चूत उठा उठा दे रहीं थी। रूपेश का लण्ड काफी बड़ा था जो वह पूरा नहीं ले पा रहीं थीं। लेकिन जब राकेश चूत को चाटता था तो बह सिर ऊँचा कर रूपेश का लण्ड पूरा गपक लेती थीं। गाय की बछिया की तरह चटकारे लेकर चूस रहीं थीं। चूतड़ बेचैनी से रगड़ रहीं थीं। जब राकेश ने फिर से जीभ चलायी तो उन्होने रूपेश के लण्ड से मुँह खींच लिया

"हू हू ऊऊऊऊ ओ माँ ऑाा तुम न तोौओो आग लगााआा दी है। ळण्ड डाल दो अपनाा"

राकेश "पर वो चुदायी की कहानी तो़ःःः"

"कहानी फिर पहले मेरीई चुदार्यीीीीीीी" और उन्होंने खुद उसका लण्ड पकड़ कर चूत पर लगाया और चूतड़ उठा कर के घप्प से अन्दर ले लिया।

बोलीं "लगाओ कस कस के"।

राकेश ने तीन चार बार उनको कसकस के पेला। हर झटके पर वह और जोर से लगाने को उ कसाती थीं।

राकेश ने लण्ड बाहर निकाल लिया और उनसे कहा " आप घुटनों के बल उकडूँ हो जाइय मैं पीछे से लगाउॅगा आगे से आप रूपेश का लण्ड ले लीजिये"।

मिसिज अग्रवाल पलट के घुटनों और बॉहों के बल उकडूँ हो गयीं। पीछे से राकेश ने लण्ड लगाया। जैसे ही पेला वह सड़ाक से उनकी चूत में घुस गया। उसने हाथ डाल के उनकी दोनों चूचियॉ पकड़ लीं। रूपेश उनके ठीक मुॅह के सामने लण्ड तन्नाके खड़ा था। उन्होंने एक मुट्ठी में लण्ड पकड़ के मुॅह में ले लिया। राकेश निप्पिल को उॅगलियों में रगड़ रगड़ के लण्ड अन्दर बाहर शण्ट कर रहा था। हर चोट पर मिसिज अग्रवाल का धड़ आगे हो जाता था और रूपेश का ळण्ड उ नके तालू तक घुस जाता था। जितनी चूत पर चोट पड़ती थी उतनी ही तेजी से वह रूपेश के लण्ड को मुॅह में ले रहीं थीं। रूपेश अपने दोनों हाथें से उनके दोनों गोल गोल चूतड़ मजबूती से जकड़े था अऔर अपना लण्ड ऐसे पेल रहा था जैसे चूत में धकापेल कर रहा हो। उसकी जकड़ से मिसिज अग्रवाल के पीछे का क्रेक फैल गया था। आगे पीछे स्पीड से सटासट हो रहा था। मिसिज अग्रवाल पूरी तरह आनन्द में थीं।

"ओ मेरी मॉ दो दो लण्ड मेरे अन्दर हो रहे हैं। इतना मजा ता मैने नहीक्त लिया"

राकेश और रूपेश के ऊपर वासना का भूत सबार था। राकेश पूरा लण्ड खच्च से घुसेड़ता आवाज निकालता "ले पूरा ले ले"

रूपेश आगे बढ के मुॅह में घुसेड़ देता "ले मेरा ले अब"।

मिसिज अग्रवाल अलग से चिल्ला रहीं थीं " हॉ हॉ लगाओ छोड़ना नहीं आज इसको फाड़ के रख दो पूरा"।

राकेश ने स्पीड बढा दी। यकायक चिल्लाया " मैं झड़ा। लो लो लो और लो"

मिसिज अग्रवाल " नो नो अभी मत झड़ना। इस को फाड़ के रख दा े मेरे को बीच में मत छोड़ो"।

लेकिन राकेश ने सफेदी उगलना चालू कर दी थी। मिसिज अग्रवाल ने जल्दी से अपनी चूत बाहर खींच ली।

राकेश को खिसका कर ब तेजी से उस ओर आया। कमर में हाथ डाल के उसने मिसिज अग्रवाल को चित्त कर दिया और अपना लण्ड धपाक से पेल दिया। राकेश ने जबर्दस्त चुदाई की थी। वह बुरी तरह लथपथ था। बाथरूम में घुस गया।

मिसिज अग्रवाल ने रूपेश को खीच कर कसके भींच लिया।दोनों बाहें उसकी पीठ पर बॉध लीं और टॉगें उसकी कमर के इर्द गिर्द जकड़ लीं।

बोलीं " ओ मेरे लाला अब मेरी इसकी पूरी मरम्मत कर दो"।

रूपेश ने बाहर कर अचानक धक्के से अन्दर करते हुये कहा "लो भौजी तुम भी क्या याद रखोगी किस लौड़े से पाला पड़ा था"।

बिसात बिछी हुई थी। खेल चालू था। दोनों एक दूसरे से चिपके हुये चुदाई किये जा रहे थे और

बतिया रहे थे।

मिसिज अग्रवाल " हॉ लौड़ा तो तुम्हारा जबर्दस्त है। अन्दर तक धुनाई कर देता है। आज तो मजा आ गया पहले वनिला अब चाकलेट आइसक्रीम"।

रूपेश "और अग्रवाल साहब क्या हैं"।

मिसिज अग्रवाल "इटालियन बार क्रंची और मजेदार"।

रूपेश "और कितने स्वाद चखे हैं"।

मिसिज अग्रवाल "बहुत पहले चखा था देसी बरफ। पत्थर की तरह। बड़ी तकलीफ हुई थी"।

रूपेश "कम आन भौजी़ इतनी चटोरी चीज और स्वाद न ले"।

मिसिज अग्रवाल के चेहरे पर झेंप फैल गयी " जाओ भी तुम बहुत तेज हो। चख लेतीं हूॅ दूसरा स्वाद कभी कभी। लेकिन दो स्वाद कभी नहीं चखे। पर खाती मजे से हूॅ और खूब खाती हूॅ"।

रूपेश "हॉ मैं तो चीज देख के ही जान गया हूॅ बेमिसाल। मैने तो ऐसी कभी नहीं चखी"।

मिसिज अग्रवाल " ऐसी कितनी चखीं हैं"।

रूपेश "चख लेता हूॅ कभी कभी"।

मिसिज अग्रवाल "बहुत शॉतर हो" उसको कस के चूम लेती हैं फिर कहतीं हैं "लेकिन ये चाकलेट क्यों पिघल रही है" ।

रूपेश "ना भौजी इसमें बड़ा दमखम है।" उसेने उकड़ॅू बैठ के दूर तक लण्ड बाहर कर के घप से घुसेड़ दिया। हर बार पर उसका पेडू़ धप्प से खुली चूत पर पड़ने लगा। उसने दोनों हथेलियों में दोनों उभारों को भर लिया और बुरी तरह गॅूधने लगा। मिसिज अग्रवाल की उत्तेजना आने मैं देर नहीं लगी। उन्होने मोनिंग शुरू कर दी। रूपेश का लण्ड और तेजी से चूत में होने लगा।मिसिज अग्रवाल हिस्टिरिक हो चुकी थीं। उन्होंने जोरों से ब के सीने में सिर छुपा लिया। अपने दॉत ब के उभरे निपिल पर गढा दिये।

वह जोर जोर से आवाज निकाल रही थीं "हॉ हॉ लगाओ और मारो फाड़ डालो मेरी बुर को देखें कितना जोर है लौड़े में"।

रूपेश भी जवाब दे रहा था "ले और ले आज तक तुमने इटालियन आइस ही खायी है आज जम्बो चाकलेट का मजा चख"।

दोनों का बहसीपन बढता ही गया। रूपेश लगाता गया मिसिज अग्रवाल लेती गयी। रूपेश ने ॲगूठा ले जाके जैसे ही क्लीटोरि पर रखा मिसिज अग्रवाल एक्सप्लोड हो गयीं।

वह चिल्लायीं "ये लल्लाााााा ये क्याााा कियाााा ऊऊऊऊऊऊऊ मैऐै तो ः्ः्ः् हे राम मै क्या करूरूरूॅःःःःःःः"। उनकी चूत हवा में उठ गयी। रूपेश ने उनकी कमर पकड़ के बड़ी तेजी से लण्ड चूत मैं आगे पीछे किया।

फिर वह भी चिल्लाया " लो भौजी मै। भी खलाााासस हुअअअअअआााााा" ।

मिसिज अग्रवाल ने हाथ से पकड़ के उसका लण्ड बाहर खींच दिया। वह उनकी चूत के ऊपर बड़ी देर तक रस उगलता रहा।

राकेश बाथरूम के दरवाजे से यह नजारा देख रहा था उत्तेजित भी थोड़ा हो रहा था।

मिसिज अग्रवाल निढाल पड़ी थीं। बोली "तुम लोग तो गजब के चोदू हो। लगता है सुनीता और रश्मि भी बड़ी चुदैल हैं।"

अपनी चूत पर हाध रखते हुये वह बोलीं "ओ मॉ ये तो भुस बन गई है हाध लगाने से दुखती है। मैं तो अब पूरी तरह सन्तुस्ठ हो गयी हूॅ। कुछ दिन इसको छेड़ूॅगी भी नहीं। तुम लोग फ्रैस होलो। चलो मैं तुम लोगों के लिये गरमागरम काफी बनाती हूॅ। फिर तुम्हारी कहानी सुनेंगे"।

नेपाल की राधिका

रूपेश ने गरम गरम चाय सिप करते हुये कहा "मैं सुनाता हूॅ अपनी कहानी। ये मेरी परस्त्रीगमन की पहली यादगार है। मैं रजनी की एक दोस्त को चोदना चाहता था लेकिन उसने मना कर दिया था। उसके बाद रजनी ने मुझे सेक्स में इस तरह सुख दिया कि उसकी चूत का ही दीवना हो गया। मेरी रजनी से शादी हुये एक साल हुआ था। मेरे ऑफिस की एक शाखा नेपाल में थी। आफिस की तरफ से मुझे तीन महिने के लिये मुझे नेपाल जाना पड़ा। कुछ दिनों बाद रजनी भी वहॉ आ गयी थी फिर एक महिने साथ रह कर लौट आयी थी क्योंकि चुदवाने के सिवाय उसे करने को कुछ नहीं था।

लोगों को नेपाल के बारे में बहुत गलत धारणायें हैं। गोरखों और शेरपाओं को देख कर सोचते हैं कि सभी लोग इस तरह के है जबकि ज्यादातर लोग भिन्न हैं। नाक नक्श में भारत जैसे व्यक्तित्त्व में आकर्षक। गरीबी है लेकिन लोंगों में दयनीयता नहीं। बड़े महनती और साफ सुथरे लोग हैं। कोई मोटा नहीं दिखता है खासतौर पर औरतें एकदम स्लिम हैं। पहली बार देखा कि सादा बदन में कितना आकर्षण हो सकता है। कसरत से संन्तुलित शरीर भला लगता है पर प्राकृतिक मेहनत से ढाले हुये शरीर में जो लोच और कशिश होती है उसको देख कर ही जाना जा सकता है। जितने शहर से दूर होते जाइये उतनी ही कमनीय काया की औरतें देखने को मिलेंगी। डियोडरैंट न लगाने से लोगौं से गंध आती है लेकिन औरतों से आती गंध बुरी नहीं लगती बल्कि मादकता बढाती है। कार से पोखरा जाते हुय मै कई गॉव से गुजरा। एक गॉव में एक मामूली से घर की औरत को देखा। उसकी लम्बी नपी तुली देह ऐसी कि आ6ख न हटे। एक बस स्टैंण्ड पर एक औरत भट्टे बेच रही थी। रंग तॉवियॉ उम्र भी **35 40** के आसपास लेकिन छहरहे वदन की गजब की रौनक। हाथ उठा के भुट्टे देती तो मुॅहबाली चूचियॉ एकदम तन के उठ जातीं। हर जगह बॉकी औरतें और कुछ तो इतनी मदमाती कि देखते ही रह जाओ।

राकेश और रूपेश को चिपकाते हुये मिसिज अग्रवाल बोलीं ः

मैं अपनी कहानी सुनाती हूॅ। यह मेरी पहली खराबी की कहानी तो नहीं है लेकिन मेरी प्यार की पहली चुदाई की कहानी है जिससे शरीर और मन को बड़ी सन्तुष्ठि मिली थी। बात उन दिनों की है जब हम लोगों को पैसे की काफी तंगी थी। इन्होंने अपना नया काम शुरू किया था। अमित बेटा करीब 6 साल का था। हम लोग दिल्ली में तीसरे मंजिल की एक बरसाती में रहते थे। कुल एक कमरा था और बस खुली हुयी छत जिस पर किचिन और बाथ। सास ससुर साथ में रहते थे। चुदाई का मौका ही नही मिल पाता था। कभी कभार ही चुदाई हो पाती थी वह भी जल्दी जल्दी। शरीर में सेक्स की भूख सी भरी रहती थी जिसको अग्रवाल साहब और उभार देते थे। वह सेक्स में माहिर थे और चुदाई एन्ज्वाय करने की उन्होंने आदत डाल दी थी।

मकान मालिक एक बूढ़े दम्पति थे जो नीचे की मंजिल पर रहते थे। दूसरी मंजिल काफी हवादार थी। तीन कमरे थे छत थी। इस मंजिल एक कम्पनी का बड़ा आफिसर रहता था। जवान मियॅा बीवी थे। बीवी दूसरे शहर में काम करती थी। छुट्टी में वह आ जाती थी या फिर मियॅा वहॅा चला जाता था। वह भी अग्रवाल ही थे नाम थे शेखर और माया। शेखर सुदर्शन था कद काठी से अच्छा देखनें खूबसूरत ऊॅचा। माया भी ठीक थी लेकिन ऐसी कोई खास बात नहीं। दोनों ही खुशमिजाज थे। मकान मालिक और शेखर माया से हम लोगों की अच्छी मेल मुलाकात होती रहती थी। साथ साथ ताश खेलते थे। एक दूसरे से खुल कर मजाक करते रहते थे।

शेखर मुझे संगीता भाभी और मेरे पति को भाई साहब कह कर बुलाता था। मेरे सास ससुर का आदर करता था उन्हें आये दिन घुमाने ले जाता था क्योंकि मेरे पति काम नया होने से काफी व्यस्त रहते थे। अमित के लिये भी चाकलेट और गिफ्ट लाता था। अमित उससे काफी घुलमिल गया था। मेरे सास ससुर उसको बड़ा पसंद करते थे। जब भी घर में कोई खास चीज बनती उसको भिजबाते थे। मैं देने जाती थी तो वह काफी हिचक दिखाता था। मैं खाना अच्छा बनाती थी और उसको मेरा खाना बेहद पसंद था।

लेकिन एक बात मैं देखती थी। जब मैं छत पर कपड़े डालने या किसी और काम के लिये होती थी शेखर मुझे घूरता रहता था।उसके कमरे की खिड़की से छत एकदम सामने पड़ती थी। उसकी ऑखों में वासना साफ नजर आती थी। वह भी भूखा ही रहता था।

मैं जानबूझ कर लापरवाह रहने लगी जैसे मुझे मालूम ही न हो।अपना पल्लू गिरा देती और रस्सी पर कपड़े डालने के लिये पंजों के बल खाड़ी हो दोनों हाथ ऊपर तान देती जिससे मेरी चूचियॅा उसके सामने एकदम खड़ी हो जातीं। कभी मैं अकेले पेटीकोट में आ जाती और उसकी तरफ चूतड़ कर के पैर फैलाके झुक जाती जिससे मेरी दोनों गोलाइयॅा और बीच की दरार उसके सामने आ जाये। इस तरह से खिजाने में तो मुझे हमेशा से मजा आता है। जितानी ही उसकी वासना भड़काती उतना ही ज्यादा मजा आता था। मेरी तबियत खुश रहती थी। जब कभी इनसे चुदाई कराती थी तो उसमें भी ज्यादा मजा आता था। कई बार तबियत होती कि नंगी ही छत पर आ जाऊॅ या कम से कम ब्रा और पैण्टी में चली जाऊॅ लेकिन इतनी हिम्मत नहीं पड़ती थी।

जब भी मिलते थे अब ज्यादा मजाक करने लगे थे। मजाक में सैक्स का पुट भी आने लगा था। अग्रवाल साहब को भी यह सब कुछ बुरा नहीं लगता था वह शेखर को पसंद करते थे। मैं भी ज्यादा खुल गयी थी। जब तब सैक्स का तीर छोड़ देती थी।

जैसे एक शाम मकान मालिक के यहॉ सब लोग ताश खेल रहे थे। पड़ोस के और भी मियॉ वीवी भी आ जाते थे।

बाजी हारने पर मेरे मुॅह से निकल गया "मै लूज हो गयी"।

शेखर शरारत से बोला " अरे भाई साहब ने इतनी जल्दी लूज कर दिया"।

मै भी कहॉ चूकने वाली थी "तुम्हारे बस का तो है नहीं किसी को लूज करना"।

और सब हॅस दिये जिन में मेरे पति भी सामिल थे।

खेल में मैं और शेखर पार्टनर रहते थे। खूब घुलमिल गये थे खुल कर हॅसी मजाक करते थे। लेकिन मैं शरारत से बाज नहीं आती थी।

जितना मैं शेखर को निसहाय पाती उतना ही मैं बोल्ड होती जा रही थी। खेल में उसके सामने बैढती। जब मौका पाती सबकी निगाह बचाके अनजानी बन कर पल भर के लिये अपनी टॉगें इस तरह खोल देती कि उसे मेरी कच्छी तक दिख जाये। कभी तो मैं कच्छी भी न डालती और फट्ट से चौड़ा देती कि उसे अन्दर का नजारा दिख जाये लेकिन सेन्टर पीस न दिखे। उसके चेहरे पर तनाव उभर आता ऑखें जलने लगती और वह ताव खाकर रह जाता। अजीब बात थी पति बगल में बैठा होता था और मैं चूत किसी और को दिखाती थी लेकिन देर सवेर जब पति से चुदवाने को मिलता था तो ज्यादा आनन्द आता था।

इन दिनों शेखर के लिये मुझे तरह तरह का खाना बनाना बहुत अच्छा लगता था। कभी कभी जो कम चीज हो तो खुद न खाती थी उसको दे देती। मैं खाना ले कर कम जाती थी क्योंकि जब मैं उसके सामने अकेली होती थी तो इतनी उत्तेजित हो उठती थी कि मेरी चूत गीली हो जाती थी। ज्यादातर मैं अमित से खाना भिजवा देती थी। चूत की जब प्यास मिटी होती थी तब ही जाती थी और जल्दी से वापिस आ जाती थी । उसका ख्याल रखने में मुझे कुछ कुछ सैक्स का सुख मिलता था।

ताश के समय बड़ा ही हल्का फुल्का माहौल रहता था। किसका बर्थ डे है किसकी ऐनीवर्सरी है सब बातें होती रहती थीं। साथ में वधाइयॉ भी और पार्टी का इसरार भी। ऐसे ही एक बार मेरी बर्थ डे पर सब ने खूब वधाइयॉ दी! शेखर ने जिद की मैं तो पार्टी लेकर ही रहूॅगा।

शेखर की बात रखने के लिये दूसरे दिन मैने खीर पकवान बनाये। सबसे पहले उसके लिये ही लेकर गयी।

शेखर के सामने खाना रखते हुये मै बोली "लो बर्थ डे की पार्टी"।

वह बोला " भाभी तुम्हारे जैसा नहीं देखा। फाइव स्टार रैस्टोरैण्ट में पार्टी होना चाहिये"।

जैसे उसने मेरी दुखती नस पर हाथ रख दिया हो ऑखों में ऑसू आ गये

“लाला तुम जानते हो कि तुम्हारी भाभी गरीब है इसलिये मजाक उडाते हो”।

शेखर ने अपने दोनों कान पकड़ लिये “भाभी   ये क्या कहती हो। इतनी खूबसूरती की मालिक इतने गुणों बाली कैसे गरीब हो सकती है। तुम्हारे देवर में जब सामर्थ है तो तुम कैसे गरीब हो। मुझे अपना देवर मानती हो तो आगे से अपने को गरीब मत समझना”।

आगे बढ कर भवना में मैने उसे अपने से चिपका लिया।   वह कुर्सी पर बैठा था। उसका सिर मेरी दोनों टॉगों के बीच फॅस गया ठीक मेरी बुर के ऊपर।

मुझे ध्यान आया तो मैं वहॉ से भाग आयी।

इसके बाद हम लोगों का रबैया बदल गया। शेखर अमित के लिये ढेर सारी चीजें लाता। अमित उसके वहुत नजदीक हो गया। उसके घर में ही एक कमरे में पढने का ठिकाना बना लिया। एक चाभी उसने हमें दे दी थी। मेरे लिये भी शेखर तरह तरह की गिफ्टें लाता। मैं भी उसका ख्याल रखने लगी थी। घर साफ कर देती चीजें जमा देती बिस्तर बदल देती जिसकी तरफ से वह लापरवाह था और माया ही आने पर कुछ कुछ कर पाती थी। अब मुझ में सकुचाहट आ गयी थी और उसमें खुलापन।

एक बार उसने एक पैकिट मुझे दिया “भाभी तुम्हारे लिये”।

अपने बाथरूम में जाकर खोला क्योंकि वही एक अकेली जगह होती थी। बड़ी मॅहगी और खूबसूरत ब्रेजियर और पैण्टी के **6 6** आइटम थे। मन तो बहुत खुश हुआ लेकिन नीचे आकर मैने शेखर से कहा

“भाभी को ऐसी गिफ्ट दी जाती है कहीं”।

वह बोला “भाभी आपके पास अच्छी ब्रा और पैण्टी नहीं हैं इसलिये सोचा दे दूॅ”।

बाकई मेरे पास बहुत ही सस्ती ब्रेजियर थीं। इसका मतलब है उसने सूखने डाले अन्दर के   कपड़े अच्छी तरह देख लिये थे। तब तो उसने यह भी देख लिया होगा कि मेरी पैण्टियों का चूत के सामने बाला भाग कैसा काला हो गया है। सोच कर बड़ी शरम सी आयी।

उसने पॅूछा “आपको अच्छा नहीं लगा”।

मेरे मुॅह से निकल गया “ बहुत अच्छी प्रेजेण्ट है”।

वह शरारत से बोला “ क्या पता अगर पहिन कर दिखाओ तव पता लगे”।

मैंने ऑखें ततेर कर कहा “क्याया”।

वह पीछे हट गया “सॉरी भाभी”।

लेकिन मेरे वदन में सिहरन दौड़ गयी चूत में फुरफुरी हो आयी फिर भी बोल गयी ः

“ मैं अग्रवाल साहब के अलाबा किसी को नहीं दिखाने बाली”।

एक दिन सोचा कि उसके गद्ददे को झाड़ दूॅ। गद्ददे को उठाया तो कई मैगजीन रखी थीं। कबर पर

ही औरत की नंगी फोटो। एक को उठा के देखा तो ऑखें खुली की खुली रह गयीं। दूसरे पेज पर ही एक पूरी नंगी औरत दोनों उॅगलियों से चूत खोले हुये लेटी थी और सामने एक नंगा आदमी खड़ा था जिसका बड़ा सा लण्ड तन कर खड़ा था। आगे वाले पेज में तो इससे भी बढ कर था। औरत आदमी का आधा लण्ड लील चुकी थी। पूरी मैगजीन में एक से बढ कर एक सीन थे। ओ मॉ साथ में जो कहानियॉ थीं चुदाई का पूरा सचित्र वर्णन। सोचा मैगजीन को वहीं रख दूॅ। लेकिन छोड़ी ही नहीं गयी। मैं वहीं शेखर के बैड पर लेट गयी। पढते पढते न जाने कब अपनी चूत सहलाने लगी। मैगजीन पूरी भी न कर पायी। जब एक कहानी का नायक बुरी तरह से नायिका को पेल रहा था और वह चिल्ला रही थी मैं अपनी चूत को बुरी तरह से रगड़ रही थी। शरीर ऐंठ गया था। चूचियॉ तन गयी थीं। मैं अपनी बुर में लण्ड चाहती थी। उसी वक्त लेने को छटपटा रही थी। उस रात मेरी चुदाई न होती तो मैं शायद अपने को न रोक पाती रात में ही शेखर के पास आ जाती। जब अग्रवाल साहब ने अपना लण्ड घुसेड़ा मैंने उन्हें कस के भीच लिया और खलास हो गयी ऐसा बहुत कम होता था मुझे झड़ने में बड़ा समय लगता था । कई बार तो बगैर झड़े रह जाती थी। उनको भी बड़ा ताज्जुब हुआ।

यह शेखर के बारे में नई बात जानी थी। मुझे भी उन नंगी फोटो और चुदाई की कहानियॉ पढने की लत लग गयी। बहुत सोचती नहीं पढूॅगी लेकिन जब भी बैड ठीक करने जाती उसी के विस्तर पर ले कर बैठ जाती। उसके बाद चूत में जो आग लगती उसे बुझाने के लिये अग्रवाल साहब का लौड़ा लेने के लिये जतन करने पड़ते। तबियत होती शेखर के पास का कर प्यास बुझा आऊॅ। जब कभी नई मैगजीन न पा पाती बड़ी बेचैन रहती।

सोचा शेखर के अण्डरवियर बनियान भी क्यों न धो कर डाल दूॅ पूरे हफ्ते के जमा हो जाते हैं। जब अण्रवियर साफ कर रही थी तो देखा कइयों पर झड़ा हुआ वीर्य सूख गया है। उस पर साबुन लगाते समय कॅपकॅपी आ गयी। शाम को जब उसने देखा कि मैने अण्डरवियर बनियान धोये हैं तो उसे बहुत खेद हुआ। बड़ा जोर लगाया कि मैं ऐसा हर्गिज न करू लेकिन मैं भी जिद पर अड़ गयी कि इसमें कोई बुरायी नहीं। जब भी मैं अण्डरवियर साफ करती किसी न किसी पर झड़ने के दाग होते। बिचारा बाकई औरत के लिये भूखा था। मैं उससे बाहर बाहर के मजाक के लिये तो तैयार थी लेकिन चुदबाना केबल अग्रवाल साहब से थी। मैं उसके लिये कुछ नहीं कर सकती थी।

सम्बन्ध दोनों परिवारों में गहर हो गये थे। माया और मेरे परिवार के सब लोग एक दूसरे को पसंद करते थे। लेकिन मैं शेखर की तरफ रोमॉन्टिक तौर पर महसूस करती थी और शायद वह भी।

एक बार उसके दफ्तर में पार्टी थी। उसने अग्रवाल साहब के सामने ही मूझसे पूछा कि मैं उसके साथ पार्टी में चल सकती हूॅ। अग्रवाल साहब ने ही कहा इसमें पूछने की क्या बात है।

शेखर के साथ पहली बार अकेली जा रही थी पार्टी के लिये के लिये मैं अच्छी तरह से सॅभरी। नीचे आयी टकटकी बॉध कर देखता ही रह गया। उसने मेरा हाध थाम लिया । दबाते हुये धीरे से बोला “भाभी तुम बाकई बहुत खुबसूरत हो”। सुन कर बड़ा प्यारा लगा। मैं उससे और सट गयी।

आलीशान पार्टी थी एकदम भव्य। मेरा हाथ पकड़ कर खीचता प्रेसीडेंण्ट वाइसप्रेसीडेंण्ट के पास ले गया। बड़े अधिकार से बोला "ये संगीता है"। मैं मुँह देखती रह गयी। कहॉ तो भाभी भाभी कहते जबान नहीं थकती थी अब सीधा संगीता पर उतर आया लेकिन भाया बहुत। अपने साथियों से बड़ी बतक्लुफी से उसी तरह मिलवाया "संगीता से मिलो"। जल्दी ही समझ में आ गया कि पार्टी में पति पत्नियों को बुलाया गया था और शेखर मुझे अपनी पत्नि की तरह मिलवा रहा है हालॉकि मुँह से नहीं कह रहा है।

अकेला होने पर मैंने उससे कहा "मुझसे क्यों झूठ कर रहे हो"।

वह बोला " मैं सब को दिखाना चाहता हूँ कि मेरी बीवी भी किसी से कम खूबसूरत नहीं है"।

"लेकिन मैं तो शायद उम्र में भी तुमसे बढ़ी हूँ एक बच्चे की मॉ हूँ"।

शेखर "तुम्हें देख कर कौन कह सकता है। देखो वह लेडीज तुमसे ज्यादा बड़ी दिख रहीं हैं । तुम बिल्कुल कमसिन हो"।

मेरे वदन में रोमॉच हो आया। तबियत हुयी उसको जकड़ के चूम लूँ। बस हाथ पकड़ कर उससे सट गयी।

शेखर की पोजीशन अच्छी थी। उसके जूनियर की बीवियॉ मेरे आगे पीछे घूम रहीं थीं। मैं बड़ा गौरव महसूस कर रही थी।

पार्टी तो मेरी जान है। मुझे माहौल मिल गया। मैं बहुत ईजी महसूस कर रही थी। डॉन्स चालू हुआ तो उसमें खूब भाग ल्यिा। लोग तारीफ कर रहे थे। पार्टनर के संग डॉन्स मैं शेखर से एकदम चिपक गयी दूसरी बीवियों से भी ज्यादा। मेरी छातियॉ उसके सीने में घुसी जा रहीं थीं। मैने अपनी दोनों रानें उसकी जाघ से चिपका दीं। टॉगों के बीच के गड्ढे को उसके टॉगों के ऊपर के उ भार से सटा दिया और

डॉन्स की थिरकन के साथ रगड़ लगाने लगी। शेखर के लण्ड मियॉ रंग लाने लगे थे और मेरी बुर के दरवाजे पर दस्तक देने लगे थे। लेकिन समय की नजाकत को देखते हुये सब्र कर के मैने अपने बीच थोड़ा फासला कर ल्यिा। पार्टी खतम होने तक मेरी हिचकिचाहट जाती रही थी। घर लाने की जगह वह कहीं और ले जा कर पति का अपना असली हक बसूल करना चाहताा तो मैं तैयार थी। लेकिन उसने जरूरत से ज्यादा शराफत दिखायी और मैं रात भर तडपती रही। पर पार्टी से मैं खुश थी मेरा सजना सभॅरना सार्थक हो गया था।

दूसरे दिन मैने निश्चित कर लिया कि शेखर से लगबाउॅगी आखिर वह अपना है। दूसरे दिन खाना लेकर गयी।

मेरा स्वागत करता हुआ वह बोला "आइये भाभी"।

मैंने व्यंग से कहा "अब भाभी कहते हो कल तो संगीता संगीता रटे जा रहे थे"।

शेखर "वह तो ड्रामा था"।

मैने चिड़ कर कहा " हॉ तुम बड़े ड्रामाबाज हो ढोंगी पति बनते पर रोल भी पूरा नहीं करते"।

“हॉ तुम्हारे जैसी एक्टिंग जो नहीं कर सकता”।

मैं बार बार उसे हिन्ट दे रही थी ओीर वह आगे ही नहीं बढ रहा था।

कभी पूरे जोबन सामने कर देती “आज मैने तुम्हारी चीज पहनी है”।

कभी “ओहो आज तो बेहद गरमी है मैंने तो नीचे भी कुछ नहीं डाला है”।

यहॉ तक की अपनी पहनी हुई पैण्टी भी इसके बिस्तर पर छौड़ आयी जिस पर रिसती चूत का पानी लगा था।

लेकिन शेखर ने तो जेसे कसम ले ली थी। जितना वह अन्जान बन रहा था उतना ही मैं बेकाबू होती जा रही थी।

मैने सीधा बार करने का सोच लिया।

एक शाम जब वह आफिस से आया तो मैं उसी के बिस्तर पर अधलेटी हो कर नंगी मैजजीन पढ रही थी। केवल ब्लाउज पहिन रखा था ज्सिके नीचे ब्रेजियर नहीं थी और पेटीकोट डाल था जिसके नीचे पैण्टी नहीं थी। टॉगें मोड़ रखाी थीं जिससे अन्दर का काफी कुछ दिखता था। दरबाजा खोल कर शेखर अन्दर आया। कुछ देर तक मैं बैसी ही लेटी रही। फिर उठ कर खडी हो गयी।

गुस्से से एक फोटो दिखाते हुये बोली “छिः कैसी गंदी कितााबें पढते हो”।

थोड़ी देर के लिये वह सहम गया धीरे से बोला “भाभी मेरी अपनी भी तो जरूरत है”।

मैने पोज बनाते हुये कहा “तुम्हारी भाभी क्या इनसे कम है”।

उसकी बोली में तल्खी आ गयी “भाभी तुम हमेशा खिजाती हो। पहले फ्लर्ट करती हो फिर पीछे हट जाती हो। पार्टी में भी तुमने यही किया। तुम्हारी बजह से ही मैं भड़का रहता हूॅ। ऊपर से कहती हो कि भाई साहब के अलाबा आप किसी को भी नहीं दिखा सकतीं”।

मैने शोख हो कर कहा “जब तुम कह सकते हो कि जब तक देवर है मैं किसी चीज की कमी महसूस न करूॅ तो मैं क्यों नहीं कह सकती भाभी भी तुम्हारी हर जरूरत के लिये है”।

शेखर का चेहरा चमक उठा “तो भाभी फोटो में जो है दिखाओ”।

“मेरी बला से” और मैं बाथरूम की तरफ भागी।

वह बोला “अब मैं नहीं छोड़ूॅगा”

और दौड़ कर बाथरूम में पहुॅचने के पहिले ही उसने मुझे दबोच लिया।

शेखर ने मुझे पीछे से पकड़ लिया था। उसने दोनों हथेलियों में मेरे दोनों उभार कस के दवा लिये थे और कसके चिपक गया था। मैं उसका लण्ड चूतडों के क्रैक पर महसूस कर रही थी। मैनै मुॅह पीछे कर के उसको चूम लिया। उसने घुमा काके मुझ को सामने कर लिया। अपने होंठ मेरे होंठों पर जेर से गढा कर चूसने लगा और इतने जोर से जकड़ा कि मेरी पसलियॉ चरमरा उठीं। फिर एक हाथ सामने ला कर मेरा ब्लाउज खोलने लगा। मैने कहा “इसको मत उतारो” लेकिन उसने बटन खोल कर उसे अलग कर दिया। अब उसने हाथ पेटीकोट के नाड़े पर बढाया। मैने मिन्नत की

“प्लीज इसको रहने दो”। वह बोला “तुमने मुझे इतना सताया कि अब कोई दया नहीं” और नाड़ा खींच कर उसने मेरा पेटीकोट नीचे गिरा दिया। अब मैं बिल्कुल नंगी थी । शर्म से एक हाथ से अपने दोनों सीनों को ढक लिया और एक हाथ जहॉ टॉगें मिलती हैं उसके ऊपर रख लिया। उसने सख्ती से मेरे दोनों हाथ अलग कर दिये। मैंने अपनी ऑखें बन्द कर लीं। जब कुछ देर तक कुछ न हुआ तो मैने अपनी ऑखें खोलीं। वह एकटक मेरे को निहारे जा रहा था। मैने कहा “क्या बात है पहले माया को नहीं देखा क्या “।

लेकिन शेखर तो भरपूर गोलाइयों में डूबा था। दोनों उभार छोटे सख्त खरबूज से जो आगे से मोड़ लेकर ऊपर हो गये थे जिन के ऊपर निपिल्स गहरे बादामी शहतूत से उठे हुये थ। नीचे तराशी जॉघें केले के तने सी उसके बीच में चूत का जबर्दस्त उभार डबलरोटी सा। बाल अच्छी तरह तराशे गये थे एकदम शेव नही किये गये थे। बीच से झॉकती दो रसभरी नारंगी की फॉकें। उसके सामने पूरी औरत खड़ी थी। बाहर से छहहरी अन्दर से भरपूर। दमकते शरीर पर परफैक्ट गोला इयॉ अर्धगोल उठे हुये भरे भरे मॉसल नितम्ब जो कुशन की तरह आदमी का बोझ सॅभाल सकते थे और सपाट तने पेट के नीचे जॉघों के बीच फूली फूली खुलने को आतुर जगह।

शेखर सम्मोहित सा मुॅह बाये देख रहा था।

संगीता ने आगे बढ कर उसके कंधे पर हाथ रख कर झझोड़ा तो उसे सुध हुयी।

मुॅह से निकल गया “वण्डरफुल भाभी तुम बाहर से जितनी खूबसूरत हो अन्दर से उस से भी ज्यादा खूबसूरत हो”।

फिर चुम्बक सा चिपक गया और उनकी चिकनी मॉन्सल कमर में हाथ डाल कर ले जाकर उनको ले जाकर बैड पर बिठा दिया। वह अब भी पूरे कपडे सूट टाई पहिने हुये था। चूमने को झुका तो संगीता ने टाई से पकड़ कर खीचते हुये कहा “मेरे को तो निर्लज्ज कर दिया और खुद बाबूजी बने हुये हैं”। संगीता तो उतारने की जरूरत ही नहीक्त पड़ी शेखर ने खुद सब कपड़े निकाल कर एक तरफ फर्स पर फेंक दिये। अब वह संगीता के सामने एकदम नंगा था। संगीता ने उसकी ओर देखा। अच्छी सुदर्शन देह थी। अग्रवाल साहब की तो थोड़ी सी तोंद थी लेकिन शेखर का पेट सपाट था। अग्रवाल का लण्ड अच्छा खासा था लेकिन शेखर का भी उनसे कम नहीं था मोटाई में ज्यादा ही होगा। झॉट के बाल जरूर बेतरतीब हो रहे थे जैसे वहॉ ध्यान न दिया गया हो। शेखर ने बढ करके उसे बॉहों में ले लिया और धकेलता हुआ उसको बैड पर अपने नीचे गिरा लिया। पहले मुॅह पर सब जगह चूमा फिर संगीता के रसीले होंठ अपने होंठों मे दबोच लिये। संगीता ने अपनी बॉहों में उसका सिर जकड लिया और टॉगें थोड़ी चौड़ी कर दीं जिससे शेखर के नीचे के भाग को जगह मिल जाये। शेखर का लण्ड उसको गड़ रहा था।

शेखर नीचे को खिसक गया। संगीता की चोटी सी उभरीं चूचियॉ शेखर को बहुत अच्छी लग रहीं थीं। वह उनको पूरी मुट्ठी में सहलाने लगा फिर उनको भींचने लगा। संगीता के शरीर में बिजली सी दौड़ गयी जो उसकी चूत तक चली गयी। वह सिसकने लगी। उसके निपिल्स एकदम सख्त हो गये थे। जब शेखर न घुण्डियों को उॅगलियो में मसला तो संगीता शीत्कार कर उठी “उइइइईइद्दद्द ई“। उसकी चूत से पानी निकालने लग गया था। शेखर ने मुॅह नीचा का के एक निपिल को मुॅह में

लेकर चूसने लगा और दूसरे को उॅगलियों से मसल रहा था। यह संगीता के लिये ज्यादा था। वह तो पूरी तरह गर्मा चुकी थी। उसने नीचे हाथ डालके उसका लण्ड पकड़ लिया और खींच कर अपनी चूत पर लगाने लगी। लेकिन शेखर इतनी जल्दी उसको देना नहीं चाहता था। पहले उसकी चूत से खेलना चाहता था। वह अपने को पीछे कर लेता था। वह खिजा रहा था।

जब वह खीच कर अन्दर डालने में कामयाब नहीं हुई तो संगीता ने उलट लगायी। शेखर नीचे आ गया और वह उसके ऊपर। उसने एक हाथ से उसका लण्ड पकड़ कर के अपनी चूत के छेद पर लगाया और धप्प से उसके ऊपर बैठ गयी। पूरा का पूरा लण्ड लील लिया।

जैसे चैन मिल गया हो शॉस बाहर निकाली " हूऊऊऊऊऊऊऊऊऊऊऊऊऊऊऊ"।

फिर चूत को ऊपर किया फिर धप्प से पूरा लण्ड अन्दर "हीईईईईईईईईईईईईईईईईईईई"।

शेखर आनन्द ले रहा था। उसने दोनो हथेलियॉ बॉध के सिर के नीच रख सिर ऊपर कर लिया था और पैर सीधे टाान ल्यि थे जिससे लण्ड और उठ गया था। संगीता शेखर की जॉघों पर बैठी थी । दायें हाथ का कप जैसा बन कर उसने बैड का सहारा लिया था और बॉये हाथ से चूत के ऊ पर का हिस्सा दबा रखा था। वह कमान जैसी तन गयी थी और ऊपर नीचे हो रही थी। छातियॉ ऊपर नीचे हो रहीं थीं। चूत लण्ड के बाहर कर लेती थी फिर एक झटके में पूरा अन्दर कर लेती थी। अब उसकी स्पीड काफी बढ गयी थी। वह चूत पत लण्ड से चोटें लेने लगी थी।

साथ ही तेज आबाजें निकालने लगी थी "अहींहींऑहीं आॉहीं अऑहूॅ आाॅहू हूॅ अऑहूॅआॅहूॅहूॅ "।

चूत लण्ड के बहुत ऊपर तक उठा लेती और सीधी लण्ड के ऊपर गिरती । लण्ड चूत में धक्क से चोट करता।

बड़ी तेजी से सॉस होठों से "हूहूहू ऊऊहूहूहूऊऊऊहू रेरेरेएएएएएए"।

फिर एक बार जो चूत धप्प से गिरी तो कस के चिपक गयी। उसने अपना सिर शेखर के सीने में गढा लिया।

बॉहों से उसे जकड़ लिया "उईईई मॉाॅऑाॅमॉााऑऑऑऑऑरीरीरीरीईईईईईई

मैमैं में ऐंऐं क्याााायाााााााा करूरूरूरूरूरूरूरूरूरूरूरूरू म मै मै में मैं"

वह बड़ी देर तक झड़ती रही।

उसने अपना सिर शेखर के सीने में गढाया तो फिर उठाया ही नहीं। शेखर उसको चूमना चाहता था।

लेकिन नाहीं में सिर हिलाते हुये संगीता बोली "पता नहीं आप मेरे बारे में क्या सोचते होंगे"।

शेखर बड़े प्यार से उसके बालों में उॅगलियॉ करता हुआ बोला "ऐसा कुछ नहीं।सोचता हूॅ बहुत भूखीं थीं"।

फिर उसने दोनों हथेलियों में सिर उठाते हुये पूछा "है न"।

संगीता ने हॉमी में सिर हिला दिया। शेखर ने शरारत से कहा "लेकिन तुम्हारी एपेटाइट बहुत अच्छी

है"।

संगीता का चेहरा लाल हो गया। शेखर फिर बोला "लेकिन यह तो अच्छी हैल्थ की निशानी है"।

वह फिर शेखर से चिपक गयी। शेखर ने उसे बॉहों मे बॉध लिया। उसके होंठ संगीता के होंठों पर चिपक गये। शेखर का लण्ड उसकी चूत में ही था। वह उसे बहुत धीरे थीरे अन्दर बाहर कर रहा था। वह बैसी ही पड़ी रही। थोड़ी देर में उसके पौंद हिलने लगे। शेखर थोड़ी जल्दी जल्दी लण्ड आगे पीछे करने लगा साथ ही उसके होंठों को जोर से चूसने लगा। संगीता को मजा आने लगा था और उसकी चूत ने भी साथ देना चालू कर दिया। जब शेखर अन्दर करता तो वह अपनी चूत लण्ड पर दबा देती और जब बाहर करता तो उसको आगे बढा देती। शेखर बकायदा रिदिम से चोदने लगा। संगीता भी अब गर्मा चुकी थी। वह उसी रिदिम से जवाब दे रही थी।

अब शेखर ने संगीता को बॉहों में लिये हुये ही पलटा खाया। संगीता चित नीचे आ गयी और वह उसके ऊपर था। लण्ड अभी भी अन्दर था। शेखर खिसक कर उकडूॅ बैठ गया। हथेलियों में उ फनते हुये जोबनों को भर कर दबाते हुये लण्ड को गहराइयों तक पेलने लगा। संगीता शी शी कर उठी।उसने दोनों हाथों से शेखर की कमर को जकड़ लिया। वह बेकाबू थी। चूत पानी पानी हो रही थी।

जब लण्ड चूत की दीवारों को चीरता गहराई में घुसता तो वह भी चूत को अपनी तरफ से धकेलती।

संगीता जोरों से सॉसें निकाले जा रही थी "ऊ हू ङ्‌ हू हू हू हु हू ङ्‌ ओ000 ऊऊऊऊऊऊऊऊऊ हू ङ्‌ हू हु हु ङ्‌ हू हू ऊ इ ऊ ऊ ऊ ऊ ऊ ी री री इद्द ई ई ई ई ई।

साथ ही बदबुदा रही थी "लगा तो पूरे जोर से "

"कचूम्र निकाल दो इसका"

"शेखर देखें तुम्हारा जोर आज छोड़ना नहीं इसे"।

शेखर और जोर से शंटिंग करता था।

"लो भाभी ये लो तुम भी याद रखोगी"

"लो भाभी ये लो पूरा अन्दर तक"

और एक कस के धक्का और लण्ड की मूठ चूत पर बैठ गयी।

संगीता बोल उठी "भाभी नहीं तुम्हारी संगीता उसी दिन जैसी"।

शेखर "भाई साहब का वह हक में नहीं लॅूगा। तुम तो मेरी प्यारी सी भाभी डार्लिंग हो इतनी खूबसूरत। लेकिन भाभी तुमने चूत के दर्शन का तो मौका ही नहीं दिया"।

उसने लण्ड बाहर खींच लिया। संगीता ने टॉगें जितनी खोल सकती थी खोल दी थीं। लण्ड ने चूत का छेद फैला दिया था। चूत का भाग फूला हुआ बड़ा मस्त लग रहा था। चूत के होंठ रसीली फॉकों से मुॅह फैलाये थे। चूत की बटरफ्लाई ने उत्तेजना में पंख फैला दिये थे। गहराई तक छेद

खुला हुआ था एकदम पिंक पर्त दर पर्त भर पूर स्पंज की तरह नरम भरा हुआ। छेद से रस टपक रहा था। गहरायी तक पानी चमक रहा था।

शेखर तो पागल हो गया " हू ऊऊऊऊ माई गाड भाभी ईई मैंने तो ऐसी चूऊत नही देखी"

"इसको तो चूसूँगा। देखें तुम्हारी झड़ी हुई चूत का क्या स्वाद है"।

संगीता जल्दी से बोल पड़ी " शेखर नहीं चूसना नहीं" और उसने चूत पर अपना हाथ रख लिया।

शेखर ने जोर लगा कर उसका हाथ एक तरफ कर दिया और अपना मुँह खुली चूत पर रख दिया।

संगीता हाथ पैर झटक कर अलग होने की कोशिश करने लगी लेकिन शेखर ने उसकी जॉघों को कस के जकड़ रखा था और मुँह चूत पर कस्के जमा रखा था। उसके दोनोम्‍ पैर अपने कंधा पर ले रके थे। संगीता अपनी दोनों टॉगें पटक पटक कर उसकी पीठ पर मारने लगी

"नई नई चूसो मत न हटो मुँह हटाओ"।

लेकिन शेखर ने उसकी क्लिटोरी को होठों में दाब कर चूसना शुरू कर दिया"।

संगीता के ऊपर यकायक असर पड़ा। वह एकदम आनन्द में भर गयी। उसने टॉगें पटकना बन्द करदीं।

चिल्ला उठी "ओ माई ई ई ई ई ऊऊऊऊऊ हू हू हू ऊ हू ये क्याााााााााााा करते हो ओ ओ ओ ओ ओ ओ"।

शेखर ने मुँह अन्दर बैठा लिया था। चूत की दोनें फॉकें उसके गाल से सटी थी। वह चटखारे लेकर संतरे की तरह चूस रहा था। चूत का रस उसके होठों गल नाक पर फैल गया था। संगीता की चूत का अरोमा उसे पागल बना रहा था। संगीता ने टॉगें उसके कंथे पर कसके बॉध ली थीं। दोनों हाथों से उसके सिर को जकड़ कर चूत की तरफ दबा रही थी। साथ ही तन करके चूत भी धकेल रही थी। जोरों जोरों से आवाज निकाल रही थी।

बीच बीच में शेखर उसकी किरकिरी पर दॉत लगा देता तो वह जोरों से चीख उठती। हथेलियों से वह उसकी दोनों चूचियॉ मसल रहा था उससे भी वह चीख चीख जाती थी। इतनी उत्तेजना में थी कि सिर को इधर उथर पटक रही थी छटपटा रही थी। शेखर ने एक उॅगली ले जा कर मुँह के नीचे की जगह से छेद में की तो उसने चूतड़ हवा में उठा दिये। सारा सरीर ऐंठ गया। चूत लौंकने लगी।

बोले जा रही थी। आवाज में कॅपकॅपी भरी थी "ओ ाााा रींींींींींींींी मे एएएए रींींींींींींींींींी मॉऑअअअअअअअअअअअअऑाााााााााााााााााााााााााााााााााामॉ माााााााााााााररररररररररररररररर डाााााााााााााााााााालााााााााााााााा तुमनेंाोोोोोोोोोोो मेरेरेरेरेरेरेरेरेरे शेखरररररररररररररररररररररररर

मैएऐं तोओााााााओओाााााााााााा गईईईईईईईईईईई। कभीईईईई भी तोओओााााााा नहींींींींींी चुसींींींींींींींींींींींी"।

वह झड़ी तो झड़ती ही गयी।

फिर शिथिल हो कर हवा में उठा भाग नीचे गया।

धीमें से उसने कहा " ये क्या किया शेखर तुमने"।

शेखर के चेहरे पर संगीता का चूतरस लिपट गया था। चूत दो बार झड़ने के बाद भी मुँह बाये खिली हुई थी। गुलाबी नरमी अन्दर से झॉक रही थी। छेद से पानी रिस रहा था। संगमरमरी मस्त गोलाइयॉ गर्व से उठी हुयीं थीं। शेखर का लण्ड बहुत ही गरमाया हुआ था। उसने सुपाड़े का मुँह छेद पर लगाया और पूरा का पूरा पेल दिया। साथ ही संगीता के होंठों पर उसी की चूत के रस से सने होंठ जमा दिये। लेकिन संगीता ने अपना मुँह घुमा लिया। फिसल कर शेखर के होंठ उसके गाल पर आ गये जहॉ उन को रगड़ कर वह रस उसके गाल पर मलता हुआ बोला "भाभी अब चेहरे पर और रौनक आ जायेगी"।

उसका लौड़ा चूत को बैंग करने के लिये बेताब था। उसने तेजी से चुदाई चालू कर दी लेकिन संगीता की चूत ने उसी गरमी से जवाब नहीं दिया। शेखर ने सिर खिसका कर संगीता की दॅायीं चूची पर रख लिया। संगीता ने दॉयें हाथ से सिर को जोरों से दबा लिया। शेखर ने होंठ खोल कर उसके भरी और तनी घुण्डियों को मुँह में ले लिया।

संगीता अचानक उछल गयी "उई री"

शेखर अब दायीं चूची को छूसने लगा था और बॉयी चूची के निपिल को मसल रहा था।

संगीता के शरीर में गर्मी भर गयी थी उसकी चूत फड़कने लगी थी।

उसने टॉगें शेखर के कूल्हे पर बॉध ली थी। चूत को सिकोड़ कर उसके लौड़े को ग्रिप में ले लिया था।

शेखर का लण्ड संगीता की टनल में दीवालों को रगड़ता हुआ पूरा अन्दर तक जाता और बाहर आता था। संगीता आनन्द में भर पूर थी। जिसका इजहार वह आवाजें निकाल के कर रही थी। वह अपने नाखून शेखर की पीठ पर गढाने लगी थी।

शेखर अपने घुटनों के बल उठ गया था और दोनों से कस के चूचियॉ पकड़ रखी थीं जिससे पूरे जोर से पेल सके।

लण्ड की चोट चूत पर पड़ती तो संगीता और जोश देती "हॉ शेखर लगाओ न पूरे दम से"।

शेखर "ले मेरा पूरा बुर को चीर के रख देगा"।

संगीता " हॉ हॉ लगाओ देखें कितना दम है"।

शेखर "अच्छा तो अब लो" । चोट से संगीता के चूतड़ पीछे हट गये। बैड चरमरा उठा।

संगीता "हॉ शेखर रख दो भाड़ के इसको। बनादो भुर्ता इसका"।

"उसको आज मजा चखाता ही हूँ" कह कर शेखर उतर कर बैड के बगल में खड़ा हो गया। दोनों जॉघें खींच कर उसकी चूत को एकदम किनारे पर कर लिया। और संगीता की टॉगें चौड़ा कर खड़े खड़े ही छेद पर लण्ड लगा के पूरा पेल दिया।

संगीता ने टॉगें उसके कूल्हे के इर्द गिर्द बॉध लीं। अब शेखर बडे फोर्स से सटासट चोदने लगा। संगीता कुछ ही झटके झेल पायी।

फिर कराह उठी लेकिन उसे बहुत ही मजा आ रहा था।

जैसे जैसे लौड़ा धकापेल कर रहा था उसकी कराह बढ रही थी। चूत पानी पानी हो रही थी।

“ओओ ओ ओ ओ ो ो ो आ ा आााााााा आो आाो मेरी मम्मीर्मीर्मीर्मीर्मी ओ माईई ́ ́ गॉ गॉ ड उईईई मॉआॅआॅाााााााााााा मैं म मरीईईईई “

“उउउउउउउउउ इइइइइइइइइ रीरीरीर्रीर्रीर्रीर्रीर्रीर्रीर्रीर्रीर्रीर्रीर्रीर्रीर्रीर्रीर्री”

शेखर बाहर तक बाहर खीचता।

संगीता दॉतों के ऊपर दॉत जकड़े हुये अन्दर खींचती ळांबी सॉस “ओ मेरेऐ शेखरररर ऊऊऊऊऊऊऊऊऊऊऊहू हू हू हू”

और सीधा खटाक से अन्दर कर देता

जब चोट पड़ चुकती तो जोर से शॉस बाहर होती “फुअफुअफुअफुअफय्अफुअ”

शेखर भी चरम आनन्द मैं भर गया था “ओ मेरी संगीताा डार्लिग्ग्ग्ग्ग्ग मेराााा और ले लेओओ तुम्हारे जैसी चूऊऊऊततत कोईईई नहींयींईईईईईईइ“।

उसने लण्ड को मुट्ठी में पकड़ा और लण्ड घुसेड़ा तो साथ में एक उॅगली भी छेद में डालता ही गया।

संगीता और न ठहर सकी “ओ मेरी मॉआॅआॅ मैऐं ऐं तो गईईईईईईई लगादोओओ कस्स्स्स केऐऐ”'।

उसकी चूत फड़क उठी चूत की ज्वालामुखी ने लावा छोड़ दिया और छोड़ती गयी।

शेखर बहुत कस कस के झटके लगाते हुये बोला “ओ मेरीरी संगीताााा मैं भी झड़ाआााा अब्ब लो मेरे कोा”।

मैंने जल्दी से कहा “शेखर अन्दर मत झड़ना”

और शेखर ने बाहर लण्ड खींच लिया। उसका सफेद लावा उफन उफन कर मेरी चूत पर फैलता रहा और वह मेरे ऊपर ढेर हो गया।

काफी देर तक हम एक दूसरे की बॉहों में लेटे रहे। मैने उसे बडे प्यार से हटाया बोली “बहुत देर हो गयी है गनीमत है वह देर से आते हैं”।

अपनी पैण्टी से चूत के ऊपर से शेखर का रस साफ किया और कपड़े पहिन कर जाने के पहले उ सकी तरफ देख कर शरारत से बोली

“लाला जी आपका आज रात का खाना हमारे यहॉ है जिसकी दावत देने के लिये ही मैं यहॉ आयी

थी”।

मैं चुदी थी़ चुदी थी और खूब चुदी थी।

न चुदायी कराके भागने की जल्दी थी और न आवाज करने चिल्लाने पर बंदिश जो मुझे वर्षों से नसीब नहीं हुआ था।

जब मैं ऊपर जा रही थी तो एकदम हलकी थी जैसे हवा मैं उड़ रही हूॅ।

उस दिन के बाद शेखर से हमरे सम्बन्ध और गाढे हो गये। मैं उसकी भाभी और वह मेरा देव्रर था सिवाय उस समय के जब वह मुझे पकड़ के अपनी कसर निकालता था । उस समय वह मुझे संगीता कहता था। कमसे कम महिने में एक दिन तो ऐसा आता ही था। मैं कोई पछतावे की बात नहीं थी। वह सच्चे देवर की तरह बर्ताव और कर्तव्य करता था। उसे चाहती थी।